सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 74, नई दिल्ली, शनिवार 24 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार
अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 दिल्ली के कई इलाकों में गरजा बुलडोजर, फुटपाथ पर बनीं सीढ़ियां ध्वस्त
06 समाज में बौद्धिक की भूमिका
08 कांग्रेस ने मुख्यमंत्री आवास के सामने 24 घंटे का धरना दिया है

डीटीओ हेडक्वार्टर एवं डीटीओ आटो शाखा की कार्यप्रणाली

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली के नंबर से पंजीकृत सभी व्यवसायिक वाहन मालिकों के लिए सबसे अधिक प्रयोग में आने वाली परिवहन विभाग की शाखाएं हैं चार।

आज की तारीख़ में यह चारों शाखाएं परिवहन विभाग मुख्यालय में स्थित और कार्यरत हैं। अर्थात दिल्ली नंबर से पंजीकृत प्रत्येक व्यवसायिक गतिविधि के वाहन का पंजीकरण से लेकर परमिट तक का कार्य मुख्यालय बिल्डिंग में ही सम्भव है जहां परिवहन विभाग के सभी आला अधिकारी **(चेयरमैन एस.टी.ए. बोर्ड, सचिव परिवहन, आयुक परिवहन, सचिव एस.टी.ए, विशेष आयुक्त परिवहन, अतिरिक्त आयुक्त परिवहन, उपायुक्त परिवहन, इत्यादि)** विराजमान रहते हैं।

इतना सब होने के बाद दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों/ एसोसिएशन/ संस्थाओं/ ट्रस्ट एवम् यूनियन नेताओं के साथ समाज सेवक द्वारा डीटीओ हेडक्वार्टर और डीटीओ ऑटो शाखा की कार्यप्रणाली /कार्यशैली को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं और सभी शिकायतें बैठकों, ईमेल और मेमोरेंडम के माध्यम से दर्ज किए जा रहे हैं।

सभी शिकायतों की जानकारी आला अधिकारियों को होते हुए भी डीटीओ हेडक्वार्टर और डीटीओ आटो शाखा में वाहन मालिकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है आखिर क्यों ?

क्या यह सच है जो सुनने में आता है की

डीटीओ हेडक्वार्टर **मुकेश बुद्धिराजा** के संबंध बीजेपी, मुख्यमंत्री दिल्ली, कार्यालय उपराज्यपाल के साथ आला अधिकारियों और आटो फाइनेंसर के साथ काफी घनिष्ठ है जिस कारण वह जिस भी शाखा में कार्यरत रहे वहां उनके खिलाफ की गई सभी शिकायतें रद्दी की टोकरी में डल गई और उनका रुतबा बढ़ता रहा, मुकेश बुद्धिराजा की डीटीओ मयूर विहार, डीटीओ द्वारका, डीटीओ/ सीएमवीआई झूलझूली के साथ डीटीओ हेडक्वार्टर की कार्यशैली की जांच जरूरी है और इस जांच के आदेश ना होना सीधे आला अधिकारियों का उनके सिर पर हाथ और शय को दर्शा रहा हैं।

डीटीओ आटो शाखा **संपत नायक** जो कुछ समय पहले ही सस्पेंड होने के बाद ड्यूटी पर लगाए गए हैं और बनते ही उनको उपायुक्त के कार्य सौंपने के साथ अलग अलग शाखा में डीटीओ का कार्य दिया जाता रहा है जो दर्शाता हैं की उनकी पकड़ आला अधिकारियों में कितनी अधिक है जिसके कारण आटो शाखा में की जा रही कार्यशैली पर अभी तक कोई जांच शुरू नहीं की गई जिससे दिल्ली के एक लाख वाहन मालिक परेशान है और आटो फाइनेंसर/ डीलर प्रसन्न।

दिल्ली परिवहन विभाग के आला अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से इन दोनों डीटीओ की कार्यशैली की जांच निष्पक्ष जांच एजेंसी सीबीआई से करवाने के आदेश जारी करने चाहिए।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट टैक्स विवाद का समाधान — AIMTC के हस्तक्षेप से टूरिज्म को मिली राहत

MoRTH व NIC की गलतफहमी में फंसे पर्यटक एवं पर्यटक वाहन....

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। बीते महीने डॉ. हरीश सभरवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष, AIMTC के नेतृत्व में श्री वी. उमाशंकर, आई ए एस, सचिव, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार से एक महत्वपूर्ण बैठक में उन समस्याओं को उठाया गया जो ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट (AITP) धारकों को विभिन्न राज्यों द्वारा दोहरा टैक्स वसूलने के कारण झेलनी पड़ रही थीं।

AIMTC द्वारा श्री नितिन गडकरी, केंद्रीय मंत्री, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग को भेजे गए पत्र में स्पष्ट किया गया था कि जिन पर्यटक वाहनों ने 3 लाख रुपये का वार्षिक अथवा 90,000 रुपये का त्रैमासिक टैक्स देकर ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट लिया है, उनसे जम्मू-कश्मीर, हिमाचल एवं तेलंगाना और तमिलनाडु जैसे राज्य पुनः अतिरिक्त राज्य टैक्स अथवा एंट्री tax वसूल रहे हैं। यह न केवल नियमों के खिलाफ है, बल्कि वाहन स्वामियों व पर्यटकों के लिए भारी आर्थिक बोझ भी है।

मंत्रालय से NIC को निर्देश दिया गया कि जिन वाहनों ने रूपये 90000 का त्रैमासिक या 3 लाख रुपये का सालाना ऑल इंडिया टैक्स अदा किया है, तो कोई भी राज्य अतिरिक ऑनलाइन टैक्स ना ले सके।

अतः भारत के समस्त राज्यों के लिए दी गई ऑन लाइन व्यवस्था तुरंत प्रभाव से बन्द कर दी जाएं।

AIMTC माननीय केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी जी का हार्दिक आभार व्यक्त करता है कि उनके तत्पर प्रयासों से NIC को उचित दिशा-निर्देश जारी हुए और इस समस्या का त्वरित समाधान निकल सका।

परंतु, इससे एक समस्या का तो समाधान हुआ पर दूसरी समस्या यह उत्पन्न हुई कि जो AITP वाहन केवल आवश्यकता पड़ने पर राज्य टैक्स देकर परिचालन करते थे, वे अब ऑनलाइन टैक्स न भर पाने के कारण रुक गए। इसके चलते एयरपोर्ट और रेलवे स्टेशनों पर पर्यटक गाड़ियाँ रुक गईं और पर्यटन उद्योग को भारी नुकसान हुआ।

इस गंभीर समस्या को संज्ञान में लेते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष, AIMTC ,डॉ. हरीश सभरवाल ने तुरंत सचिव, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय श्री वी. उमाशंकर जी से संपर्क किया, उन्हें विस्तृत ईमेल लिखा और NIC के वरिष्ठ अधिकारियों जैसे श्री जयदीप शोम एवं श्रीमती नलिनी सिंह से भी फोन व ईमेल के माध्यम से संपर्क किया।

इससे पर्यटन के पीक सीजन में इस प्रकार की गंभीर बाधा उत्पन्न हो गई थी, जिसका समाधान AIMTC के हस्तक्षेप से दोनों डिपार्टमेंटों में आपस में तक मेल बैठे एक दिन में ही निवारण कर लिया है।

अब पर्यटकों के लिए कोई परेशानी दोबारा उत्पन्न नहीं हुई और अब पर्यटन व्यवसाय सुचारु रूप से चल रहा हैं।

दिल्ली NCR व हरियाणा पंजाब, J&K उत्तरांचल राजस्थान तथा यूपी आदि की सब बड़ी एसोसिएशनों व तथा ऑपरेटरों ने AIMTC को सहृदय धन्यवाद किया।

दिल्ली में देवी बसें अब तीन रंगों में दिखेंगी, इस योजना के तहत 2800 बसें चलाई जाएंगी

परिवहन विशेष न्यूज

परिवहन विभाग दिल्ली में देवी बसों का रंग बदलने जा रहा है। अब ये बसें तीन रंगों – नारंगी पीले और हरे में दिखाई पड़ेंगी। पहले नारंगी रंग करने की योजना थी लेकिन बाद में तीन रंगों में करने निर्णय लिया गया। इस योजना के तहत कुल 2080 बसें आएंगी।

- दूसरी बार रंग बदलने को लेकर जारी किया गया आदेश
- जल्द ही रंग बदलकर एक मॉडल बस तैयार की जाएगी
- देवी बस योजना के तहत दिल्ली में कुल 2080 बसें आएंगी

नई दिल्ली: दिल्ली में सड़कों पर उतर चुकीं देवी बसों का रंग बदलेगा, अभी ये बसें केवल एक रंग की हैं, लेकिन अब ये बसें तीन रंग में दिखाई देंगी।

इन बसों पर गहरा नारंगी, पीला और हरा रंग किया जाएगा। सरकार के एक अधिकारी ने कहा कि इन रंगों से बसों की विजिबिलिटी बढ़ेगी।

अभी दिल्ली में 400 छोटी बसें, जिन्हें देवी बसें कहा जाता है, चल रही हैं। बसों का रंग बदलने के मामले में परिवहन विभाग आठ दिन के अंदर दो आदेश जारी कर चुका है।

दूसरी बार रंग बदलने को लेकर जारी किया गया आदेश

इस बारे में परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह की स्वीकृति पर पहला आदेश गत 14 मई को जारी किया गया था, जिसमें रंग बदले जाने की बात थी, मगर रंग कौन सा होगा, यह जानकारी नहीं थी।

सूत्रों का कहना है कि पहले इन बसों का रंग डिम्ट्स की बगैर वातानुकूलित बसों की तरह ही नारंगी रंग रखे जाने की बात चल रही थी, मगर बाद में इसे लेकर दूसरा आदेश 19 मई को जारी किया गया है।

जल्द ही रंग बदलकर एक मॉडल बस तैयार की जाएगी

जिसमें इन बसों के तीन रंग का रखे जाने का फैसला किया गया है। दिल्ली सरकार के एक अधिकारी ने कहा कि जल्द ही इन बसों का एक मॉडल तैयार कराया जाएगा।

उसे मंजूरी मिलने के बाद नौ मीटर वाली चल रहीं 400 बसों को नारंगी किया जाएगा। अब जो भी नौ मीटर वाली 400 बसें आएंगी, वे हरे, नारंगी और पीले रंग की होंगी। इस योजना के तहत कुल 2080 बसें आनी हैं।

अभी तक 12 मीटर वाली बसें लाल, हरे और नारंगी व नीले रंग की हैं

बता दें कि दिल्ली की सड़कों पर अभी तक 12 मीटर वाली लाल, हरे व नारंगी व नीले रंग की चलती हैं। इसमें डीटीसी की एसी बसें अभी केवल लाल रंग की हैं और नॉन एसी बसें हरे रंग की हैं।

इन बसों का बड़ी संख्या में 2009-2010 में आना शुरू हुआ था। वहीं नारंगी रंग की बसें क्लस्टर सेवा के तहत चलने वाली स्टैंडर्ड फ्लोर की बसें हैं। ये बसें भी पिछले कई साल से दिल्ली में चल रही हैं।

पिछले साल क्लस्टर और डीटीसी सेवा के तहत आधुनिक सुविधाओं से लैस नीले रंग की लो फ्लोर एसी बसें आई हैं।

दीपाली चौक से मजलिस पार्क तक मेट्रो कॉरिडोर का ढांचा तैयार, इस डेट तक होगा शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के बाहरी रिंग रोड पर दीपाली चौक से मजलिस पार्क तक एलिवेटेड मेट्रो कॉरिडोर का ढांचा तैयार है। फिनिशिंग का काम चल रहा है जिससे इस वर्ष के अंत तक मेट्रो का परिचालन शुरू होने की उम्मीद है। यह कॉरिडोर रेड येलो और पिंक लाइन से जुड़ेगा जिससे आवागमन सुगम होगा। इस मार्ग पर सबसे ऊंचा मेट्रो कॉरिडोर हैदरपुर बादली मोड के पास स्थित है।

नई दिल्ली। बाहरी रिंग रोड पर दीपाली चौक (पीतमपुरा) से मजलिस पार्क तक करीब नौ किलोमीटर लंबा एलिवेटेड मेट्रो कारिडोर का ढांचा तैयार हो गया है। अब इसके फिनिशिंग और ओएचई (ओवर हेड इक्विपमेंट) लगाने का काम चल रहा है। यह कॉरिडोर फेज चार में निर्माणाधीन 29.262 किलोमीटर लंबी जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम मेट्रो लाइन का हिस्सा है।

दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) के अनुसार फिनिशिंग का काम भी जल्दी पूरा हो जाएगा और इस वर्ष के अंत तक यह करिडोर बनकर पूरी तरह तैयार हो जाएगा। ऐसे में उम्मीद जताई जा रही है कि वर्ष के अंत तक दीपाली चौक से मजलिस पार्क के बीच मेट्रो रफ्तार भरने लगेगी।

मेट्रो का परिचालन शुरू होने पर यह कारिडोर कई मायनों में खास होगा। दिल्ली मेट्रो के सबसे ऊंचे एलिवेटेड मेट्रो कारिडोर का निर्माण दीपाली चौक से मजलिस पार्क के बीच ही हैदरपुर बादली मोड के पास किया गया है।

दिल्ली मेट्रो का दूसरा सबसे ऊंचा प्वाइंट भी इसी कॉरिडोर का हिस्सा है। इसके अलावा यह कारिडोर रेड लाइन (रिठाला-न्यू बस अड्डा गाजियाबाद), यलो लाइन (समयपुर बादली-मिलेनियम सिटी गुरुग्राम) और पिंक लाइन (मजलिस पार्क-शिव विहार) के स्टेशन से जुड़ा होगा।

इससे आवागमन की सुविधा बेहतर होगी। जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम मेट्रो कॉरिडोर वर्तमान मजेंटा लाइन (बोटेनिकल गार्डन-जनकपुरी पश्चिम) की विस्तार परियोजना है। इसका 19.520 किलोमीटर हिस्सा एलिवेटेड और 9.4 किलोमीटर हिस्सा भूमिगत होगा। इस कारिडोर पर कुल 22 स्टेशन होंगे। जिसमें 15 एलिवेटेड और सात भूमिगत स्टेशन शामिल होंगे।

डीएमआरसी के प्रधान कार्यकारी निदेशक (जनसंपर्क) अनुज दयाल ने बताया कि इस कारिडोर पर जनकपुरी पश्चिम से कृष्णा पार्क एक्सटेंशन के बीच बने भूमिगत कारिडोर पर इस वर्ष जनवरी में मेट्रो का परिचालन शुरू हो चुका है।

कृष्णा पार्क एक्सटेंशन से दीपाली चौक के बीच अगले वर्ष के मध्य तक एलिवेटेड कॉरिडोर बनकर तैयार होगा। दीपाली चौक से मजलिस पार्क तक एलिवेटेड मेट्रो करिडोर का ढांचागत निर्माण करीब हो चुका है। वर्ष के अंत तक फिनिशिंग का काम पूरा हो जाएगा।

इस हिस्से पर दीपाली चौक, पीतमपुरा, प्रशांत विहार, उत्तर पीतमपुरा, हैदरपुर मोड़, भलस्वा व मजलिस पार्क ये सात मेट्रो स्टेशन होंगे। इन स्टेशनों के फिनिशिंग का काम हो रहा है।

इस हिस्से पर होंगे तीन इंटरचेंज स्टेशन

वैसे तो जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर का पूरा हिस्सा तैयार होने में अभी वक्त लगेगा और कारिडोर पर कुल छह इंटरचेंज स्टेशन होंगे। इसमें से तीन इंटरचेंज स्टेशन दीपाली चौक से मजलिस पार्क के बीच होगा।

जिसमें पीतमपुरा, हैदरपुर बादली मोड व मजलिस पार्क शामिल है। पीतमपुरा रेड लाइन के स्टेशन के साथ, हैदरपुर बादली मोड यलो लाइन के साथ स्टेशन के साथ व मजलिस पार्क पिंक लाइन के स्टेशन के साथ इंटरचेंज होगा।

इस कॉरिडोर की कुछ खास विशेषताएं

1. सबसे ऊंचा कारिडोर- हैदरपुर बादली मोड मेट्रो स्टेशन के पिलर नंबर 340 के पास मेट्रो कारिडोर की ऊंचाई सबसे अधिक 28.362 मीटर है।

2. दूसरा सबसे ऊंचा प्वाइंट- हैदरपुर बादली मोड के पास 52.288 मीटर लंबे स्टील स्पैन से बने कारिडोर की ऊंचाई 27.610 मीटर है।

3. दिल्ली मेट्रो का चौथा व मजेंटा लाइन का तीसरा ऊंचा प्वाइंट- पीतमपुरा मधुबन चौक के पास 22.54 मीटर की ऊंचाई पर स्टील स्पैन से कॉरिडोर बनाया गया।

तिलक लगाने का महत्त्व क्या होता है एवं घर से बिमारी दूर करने के क्या है उपाय, आओ जानें

ललाट पर दोनों भौंहों के बीच विचारशक्ति का केन्द्र है । योगी इसे आज्ञाचक्र कहते हैं । इसे शिवनेत्र अर्थात्‌कल्याणकारी विचारों का केन्द्र कहा जाता है ।

दोनों भौंहों के बीच ललाट पर चंदन या सिंदूर आदि का तिलक आज्ञाचक्र और उसके नजदीक की पीनियल और पीयूष ग्रंथियों को पोषण देता है । यह बुद्धिबल व सत्त्वबलवर्धक है तथा विचारशक्ति को भी विकसित करता है । अतः तिलक लगाना आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक, दोनों दृष्टिकोणों से बहुत लाभदायक है । इसलिए हिन्दू धर्म में कोई भी शुभ कार्य करते समय ललाट पर तिलक लगाते हैं ।

अधिकांश स्त्रियों का मन स्वाधिष्ठान और मणिपुर केन्द्र में ही रहता है । इन केन्द्रों में भय, भाव और कल्पना की अधिकता होती है । वे भावनाओं और कल्पनाओं में न बह जायें, उनका शिवनेत्र, विचारशक्ति का केन्द्र विकसित हो, इस उद्देश्य से ऋषियों ने स्त्रियों के लिए तिलक लगाने का विधान रखा है ।

चंदन, सिंदूर के तिलक से जो फायदा होता है, वह आजकल की केमिकल युक्त बिंदियों से नहीं होता ।

ललाट पर प्लास्टिक की बिंदी चिपकाना हानिकारक है, इसे दूर से ही त्याग दें ।

तुलसी या पीपल की जड़ की मिट्टी अथवा गाय के खुर की मिट्टी पुण्यदायी, कार्यसाफल्यदायी व सात्त्विक होती है। उसका या हल्दी या चंदन का अथवा हल्दी-चंदन के मिश्रण का तिलक हितकारी है ।

भाइयों को भी तिलक करना चाहिए । इससे आज्ञाचक्र (जिसे वैज्ञानिक पीनियल ग्रंथि कहते हैं) का विकास होता है और निर्णयशक्ति बढ़ती है ।

गर्मी में विशेष लाभकारी – पुदीना

पुदीना गर्मियों में विशेष उपयोगी एक सुगंधित औषध है । यह रुचिकर, पचने में हलका, तीक्ष्ण, हृदय - उत्तेजक, विकृत कफ को बाहर लानेवाला, गर्भाशय व चित्त को प्रसन्न करनेवाला है । पुदीने के सेवन से भूख खुलकर लगती है और वायु का शमन होता है । यह पेट के विकारों में विशेष लाभकारी है। श्वास, मूत्राल्पता तथा त्वचा के रोगों में भी यह उपयुक्त है ।

औषधि-प्रयोग

पेट के रोग : अजीर्ण, अरुचि, मंदाग्नि, अफरा, पेचिश, पेट में मरोड़, अतिसार, उलटियाँ, खट्टी डकारें आदि में पुदीने के रस में जीरे का चूर्ण व आधे नींबू का रस मिलाकर पीने से लाभ होता है ।

मासिक धर्म : पुदीने को उबालकर पीने से मासिक धर्म की पीड़ा तथा अल्प मासिक स्राव में लाभ होता है । अधिक मासिक स्राव में यह प्रयोग न करें ।

गर्मियों में : गर्मी के कारण व्याकुलता बढ़ने पर एक गिलास ठंडे पानी में पुदीने का रस तथा मिश्री मिलाकर पीने से शीतलता आती है ।

पाचक चटनी : ताजा पुदीना, काली मिर्च, अदरक, सेंधा नमक, काली द्राक्ष और जीरा- इन सबकी चटनी बनाकर उसमें नींबू का रस निचोड़कर खाने से रुचि उत्पन्न होती है, वायु दूर होकर पाचनशक्ति तेज होती है । पेट के अन्य रोगों में भी लाभकारी है ।

उलटी-दस्त, हैजा : पुदीने के रस में नींबू का अदरक का रस एवं शहद मिलाकर पिलाने से लाभ होता है ।

सिरदर्द : पुदीना पीसकर ललाट पर लेप करें तथा पुदीने का शरबत पियें ।

ज्वर आदि गर्मी में जुकाम, खाँसी व ज्वर होने पर पुदीना के पीने से लाभ होता है ।

नकसीर : नाक में पुदीने के रस की बूँद डालने से रक्तस्राव बंद हो जाता है ।

मूत्र- अवरोध पुदीने के पत्ते और मिश्री पीसकर १ गिलास ठंडे पानी में मिलाकर पियें।

गर्मी की फुंसियाँ : समान मात्रा में सूखा पुदीना एवं मिश्री पीसकर रख लें । रोज प्रातः आधा गिलास पानी में ४ चम्मच मिलाकर पियें ।

हिचकी : पुदीने या नींबू के रस सेवन से राहत मिलती है ।

मात्रा : रस ५ से २० मि.ली. । अर्क - १० से २० मि.ली. (उपरोक्त प्रयोगों पुदीना रस की जगह अर्क का भी उपयोग किया जा सकता है) । पत्तों का चूर्ण - २ से ४ ग्राम (चूर्ण बनाने के लिए पत्तों को छाया में सुखाना चाहिए) ।

त्रिकाल संध्या करने वाले को किसी के सामने हाथ फैलाने का दिन नहीं आता.....

अपने को दुःखी करने का क्या मतलब है ? मूर्खता के सिवाय दुःख हो ही नहीं सकता। बिना बेवकूफी के गलत निर्णय हो ही नहीं सकते। जब भी गलत निर्णय होते हैं तो उनके मूल में बेवकूफी होती है। इससे दुःख होता है। दुःखी होकर निर्णय नहीं करना, द्वेष में निर्णय नहीं करना, चिंता में आकर निर्णय नहीं करना, भय में आकर निर्णय नहीं करना।

ब्रह्मज्ञानी सदगुरु की सहज चेष्टा होती है, वे हमारी भाँति शरीर में स्थित होकर व्यवहार नहीं करते। व्यवहार में दिखते हुए भी वे अपने ब्रह्मभाव में स्थित होते हैं।

वर्तमान में मीन राशि वाले व्यक्ति ऋण, रोग व बाधा से पीड़ति रहेंगे

मीन राशि मे शनि की साढ़ेसाती की दूसरी

ढय्या चल रही है अतः रुपया उलझना ,विवाह आदि में देरी होती है, लेकिन प्रॉपर्टी खरीदने बेचने का योग बन रहा है।

आर्थिक तंगी महसूस होगी घर मे मांगलिक कार्य का योग बनेगा

मीन राशि के नामाक्षर

दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, और ची

उपायः- घोड़े की नाल का छल्ला शनिवार को धारण करे

घर से बिमारी दूर करने के उपाय

1. महीने में एक बार मीठी रोटियां बनाकर कुत्तों को डाले ,रोटियों की संख्या आपके परिवार के कुल सदस्यों की संख्या में जितने मेहमान उस महीने में आपके घर में आये है उनको जोड़कर उस से चार अधिक रोटियां बनाकर डालनी है।

2. साल में एक बार अच्छी तरह पक्का हुआ कद्दू यानी पेठा किसी धर्मस्थान में दान किया करे।

3. जब भी किसी शमशान के पास से गुजरे वहां एक दो रूपए का सिक्का वहां गिरा दिया करे ऐसा माना गया है की इस से भी देवीय सहायता प्राप्त होती है।

4. मरीज के सिरहाने एक सिक्का रखकर सुबह उसे किसी भिखारी को दें ऐसा 43 दिन लगातार करे।

5. मुख्य रूप से गाय को रोटी देने ,, कुतों को रोटी खिलाने और कोवों को रोटी डालने से आप अधिकतर बुरे प्रभावों से बच सकते है।

6. अगर परिवार में कोई व्यक्ति बीमार है तथा लगातार औषधि सेवन के पश्चात भी स्वास्थ्य लाभ नहीं हो रहा है, तो किसी भी रविवार से आरम्भ करके लगातार 3 दिन तक गेहूं के आटे का पेड़ा तथा एक लोटा पानी व्यक्ति के सिर के ऊपर से उसार कर जल को पौधे में डाल दें तथा पेड़ा गाय को

खिला दें। अवश्य ही इन 3 दिनों के अन्दर व्यक्ति स्वस्थ महसूस करने लगेगा। अगर उपाय की अवधि में रोगी ठीक हो जाता है, तो भी प्रयोग को पूरा करना है, बीच में रोकना नहीं चाहिए।

7. अगर बीमार व्यक्ति ज्यादा गम्भीर हो, तो जौ का 125 पाव (सवा पाव) आटा लें। उसमें साबुत काले तिल मिला कर रोटी बनाएं। अच्छी तरह सेंके, जिससे वे कच्ची न रहें। फिर उस पर थोड़ा सा तिल्ली का तेल और गुड़ डाल कर पेड़ा बनाएं और एक तरफ लगा दें। फिर उस रोटी को बीमार व्यक्ति के ऊपर से 7 बार वार कर किसी भैंसे को खिला दें। पीछे मुड़ कर न देखें और न कोई आवाज लगाए। भैंसा कहाँ मिलेगा, इसका पता पहले ही मालूम कर के रखें। शनि और मंगलवार को ही यह कार्य करें।

8. पीपल के वृक्ष को प्रातः 12 बजे के पहले, जल में थोड़ा दूध मिला कर सींचें और शाम को तेल का दीपक और अगरबत्ती जलाएं। ऐसा किसी भी वार से शुरू करके 7 दिन तक करें। बीमार व्यक्ति को आराम मिलना प्रारम्भ हो जायेगा।

9. घर से बीमारी जाने का नाम न ले रही हो, किसी का रोग शांत नहीं हो रहा हो तो एक गोमती चक्र ले कर उसे धागे में पिरो कर रोगी के पलंग के पाये पर बांधने से आश्चर्यजनक परिणाम मिलता है। उस दिन से रोग समाप्त होना शुरू हो जाता है।

10. यदि आपका बच्चा बहुत जल्दी-जल्दी बीमार पड़ रहा हो और आप को लग रहा कि दवा काम नहीं कर रही है, डाक्टर बीमारी खोज नहीं पा रहे है। तो यह उपाय शुक्ल पक्ष की अष्टमी को करना चाहिये।

आठ गोतमी चक्र ले और अपने पूजा स्थान में मां दुर्गा के श्रीविग्रह के सामने लाल रेशमी वस्त्र पर स्थान दें। मां भगवती का ध्यान करते हुये कुंकुम से गोमती चक्र पर तिलक करें। धूपबत्ती और दीपक प्रावलित करें। धूपबत्ती की विभूति से भी गोमती चक्र को तिलक करें। ॐ ऐं ह्लीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे की 11 माला जाप करें। जाप के उपरांत लाल कपड़े में 3 गोमती चक्र बांधकर ताबीज का रूप देकर धूप, दीप दिखाकर बच्चे के गले में डाल दें। शेष पांच गोमती चक्र पीले वस्त्र में बांधकर बच्चे के ऊपर से 11 बार उसार कर के किसी विराने स्थान में गड्ढा खोदकर दबा दें। आपका बच्चा हमेशा सुखी स्वस्थ रहेगा।

11. ब्लड प्रेशर/डिप्रेशन से बचने का उपायः रविवार के दिन 325 ग्राम दूध अपने सिरहाने रख कर सोएं। सोमवार को सुबह उठकर दूध को पीपल के पेड़ पर चढ़ा दें, 5 रविवार यह क्रिया करें, निश्चित लाभ होगा.

शनि प्रदोष व्रत आज

हर महीने में दो बार प्रदोष व्रत किया जाता है, दो हर माह की कृष्ण और शुक्ल पक्ष में आने वाली त्रयोदशी तिथि पर किया जाता है। साथ ही इस दिन पर शिव जी की पूजा प्रदोष काल में करने का विधान है। शनिवार को किए जाने वाले प्रदोष व्रत को शनि प्रदोष व्रत के रूप में जाना जाता है, जो शनिदेव की कृपा के लिए भी उत्तम तिथि मानी गई है।

प्रदोष व्रत का शुभ मुहूर्त ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि का शुभारंभ 24 मई को शाम 7 बजकर 20 मिनट पर हो रहा है। वहीं इस तिथि का समापन 25 मई को दोपहर 3 बजकर 51 मिनट पर होगा। प्रदोष व्रत शनिवार 24 मई को किया जाएगा। इस दिन पर शिव जी की पूजा का मुहूर्त शाम 7 बजकर 20 मिनट से रात 9 बजकर 13 मिनट तक रहने वाला है।

शिवलिंग पर चढ़ाएं ये चीजें शनि प्रदोष व्रत के दिन शिवलिंग का गंगाजल से अभिषेक करें, इसके बाद दूध और दही से अभिषेक करें। इसी के साथ प्रदोष व्रत के दिन शिवलिंग पर गंगाजल और चावल अर्पित करने से आपको कर्ज की समस्या से मुक्ति मिल सकती है। साथ ही शनि प्रदोष व्रत के दिन शिवलिंग पर काले तिल अर्पित करने से भी साधक को शुभ फल प्राप्त होते हैं।

इन चीजों का करें दान शनि प्रदोष व्रत का दिन शनि देव को प्रसन्न करने के लिए भी बहुत उत्तम माना गया है। ऐसे में आप इस दिन काले तिल और सरसों के तेल का दान कर सकते हैं, जिससे शिव जी के साथ-साथ शनिदेव की भी कृपा मिलती है। इसी के साथ शनि प्रदोष व्रत के दिन उड़द की दाल, लोहे की वस्तुएं, वस्त्र और अन्न का दान करने से भी साधक को अच्छे परिणाम मिलते हैं।

शनि प्रदोष व्रत महत्व शनिवार के दिन पड़ने के कारण आप इस दिन भोलेनाथ के साथ-साथ शनिदेव की भी पूजा अर्चना कर सकते हैं। अगर आपकी कुंडली में शनि की स्थिति कमजोर है तो फिर इस दिन शनि मंदिर में जाकर पूजा पाठ कर सकते हैं। इससे आप पर शनि देव की कुदृष्टि का असर कम होगा।

“दक्षिणा” देने से ही क्यों मिलता है धार्मिक कर्मों का फल

यजुर्वेद में एक बहुत सुंदर मन्त है, वह कहता है ब्रह्मचर्य आदि व्रतों से ही दीक्षा प्राप्त होती है अर्थात ब्रह्मविद्या या किसी अन्य विद्या में प्रवेश मिलता है। फिर दीक्षा से दक्षिणा अर्थात धन समृद्धि आदि प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यहाँ दक्षिणा मिलने का अर्थ है दक्षिणा देना, वेद ने यही माना है कि जो देता है उसे देवता और अधिक देते हैं। जो नहीं देता है, देवता उसका धन छीनकर दानियों को ही दे देते हैं। फिर कहता है दक्षिणा से श्रद्धा प्राप्त होती है, और श्रद्धा से सत्य प्राप्त होता है। क्रम है, व्रत –> दीक्षा –> दक्षिणा –> श्रद्धा –> सत्य मध्य में दक्षिणा है, एक बार दीक्षित हो गए, मार्ग पर बढ़ गए, और फिर दक्षिणा में लोभ किया तो मार्ग नष्ट हो जाता है। इसलिए विद्वानों, गुरु, आचार्य को दक्षिणा और पात्रों को दान देने से ही मार्ग आगे प्रशस्त होता है। दक्षिणा देने से अपने गुरु, आचार्य में श्रद्धा बढ़ती है। गुरु भी अपनी अन्य सांसारिक चिंताओं से मुक्ति पाकर शिष्य या यजमान के कल्याण के लिए और उत्साह से लग जाते हैं और अंततः सत्य से साक्षात्कार कराते हैं।

अब दक्षिणा क्या होनी चाहिए, इस पर शास्त्र का स्पष्ट मत है कि दक्षिणा यथाशक्ति, यथासम्भव ही होनी चाहिए। न अपनी शक्ति से कम होनी चाहिए न ज्यादा की कोई आवश्यकता है।सनातन धर्म की समाज संरचना ऐसी थी कि अपरिग्रही ब्राह्मणों, पुरोहितों, ज्योतिष आदि आचार्यों का दायित्व समाज के ऊपर था। समाज उन्हें अपने सामर्थ्यानुसार दक्षिणा द्वारा पोषित करता था। बदले में वे समाज को अपने ज्ञान से पोषित करते थे। पर जैसे ही यजमान में कृपणता आई और आचार्य में लोभ आया वैसे ही यह व्यवस्था टूट गई। इससे हानि हुई कि जिनका कार्य पुरोहित बनकर कर्मकाण्ड कराना था, गुरु बनकर पढ़ाना लिखाना था, ज्योतिषाचार्य बनकर लोगों को जीवन के प्रति सचेत करके मार्ग दिखाना था, उन्हें यजमानों से उचित दक्षिणा न मिलने के कारण अपना घर चलाने के लिए दूसरे व्यवसायों अपनाने पड़े और इन विद्याओं का नाश हुआ। आज सब लोग एक पक्षीय रूप से तो देखते हैं कि ब्राह्मण पौरोहित्य ठीक नहीं करते, ज्योतिषी लूटते हैं और झूठ बताते हैं; लेकिन वे खुद का दोष नहीं देखते कि क्या यजमान धर्म का उन्होंने पालन किया? क्या यथाशक्ति, यथासम्भव वे इन आचार्यों को दक्षिणा देते हैं? आपके कोई जान पहचान के ज्योतिषी हैं तो आप चाहते हैं कि उन्हें मुफ्त में कुण्डली दिखा दें, उनसे इमोशनल अत्याचार करते हैं। यह नहीं देखते कि ज्योतिष विद्या प्राप्त करने के लिए कितने हज़ार घण्टे उन्होंने अध्ययन की तपस्या की होगी। वे आपकी कुण्डली को समझने में जो एक दो घण्टे खर्च करते हैं आप चाहते हैं उसकी कीमत 11, 51, या 101 रुपए दे दें। घर में कोई पूजापाठ है तो आप चाहते हैं कि 101 रुपए में पण्डित मान जाए। वह आपके घर दूर से एक दो घण्टे खर्च करके आता जाता है, 2 घण्टे खर्च करके पूजा कराकर अपना पूरा दिन खर्च करता है और बदले में 101, 151 रुपए में आप उसे विदा करना चाहते हैं। क्या यह *आपकी यथाशक्ति-यथासम्भव है? यदि सब लोग उन पुरोहितों या ज्योतिषियों को बस

101 रुपया ही दें तो हर पर 2 घण्टे लगाकर वह केवल 5-6 लोगों की कुंडली या पूजापाठ ही तो करा पाएगा? इससे महीने में 500 प्रतिदिन हिसाब से केवल 15 हज़ार या कुछ अधिक होंगे। इसमें वह अपना घर कैसे चलाएगा? और शांति से नहीं चला पाएगा तो अपनी विद्या और यजमान पर ध्यान कैसे देगा? फिर जब वह मजबूरी में अपनी दक्षिणा फिक्स करे तो आप उसे पाखण्डी धंधेबाज कहते हो? यह क्या खुद का फोड़ा न देखकर दूसरे की सूजन निहारने वाली बात नहीं है?

आप ज्योतिषी से तो उम्मीद करते हैं कि वह *पाराशर स्मृति के अनुसार चलकर दक्षिणा न मांगे पर जब वही शास्त्र ज्योतिष आदि विद्याओं के लिए यथाशक्ति दक्षिणा देने की बात कहते हैं तो उसे नहीं मानते। तब आप 11 रुपए देकर कहते हैं बिना दक्षिणा दिए पाप लगता है पण्डितजी यह रख लीजिए। अरे 11 रुपए का एक ज्यूस भी नहीं आता है, क्यों उन जान पहचान के ज्योतिषियों और पुरोहितों को अपमानित करते हैं 11 रुपए देकर?? क्यों खुद के सिर पाप चढाते हैं। वेद ने स्पष्ट कहा है, “इन्द्र ऐसे कृपण/कंजूस लोगों को पैर से घास फूंस की तरह रौंद देता है।” मैं यह नहीं कह रहा कि सभी ज्योतिषी बहुत विद्वान या सारे ही पुरोहित बहुत अच्छे हैं। पर उनमें कई वास्तव में अच्छे हैं जिन्हें समाज हतोत्साहित करता है। ऐसे में वे अपने अध्ययन पर ध्यान नहीं दे पाते। उन्हें भी अपनी सांसारिक जरूरतें पूरी करने के लिए दूसरे रास्ते अपनाने पड़ते हैं। असंतुष्ट होकर आचार्य कभी भी कृपा नहीं कर सकते। सच्चे मन, पूर्ण विश्वास और उन्हें संतुष्टि देकर ही उनकी कृपा प्राप्त की जा सकती है। उनके द्वारा बताए गए उपाय भी तभी सफल होते हैं। पुराणों में एक कथा आती है, नारद जी ने प्रश्न किया कि दक्षिणाहीन कर्म का फल कौन भोगता है? तो भगवान नारायण ने उत्तर दिया, “मुने! दक्षिणाहीन कर्म में फल ही कैसे हो सकता है? क्योंकि फल प्रसव करने की योग्यता तो दक्षिणावाले कर्म में ही है। बिना दक्षिणा वाला कर्म तो बलि के पेट में चला जाता है, अर्थात नष्ट हो जाता है। आचार्यों से वैदिक विद्याओं का प्रयोग करवाना, पौरोहित्य करवाना आदि यज्ञ का अंग है।मनुस्मृति में महाराज मनु का स्पष्ट शब्दों में आदेश है, ।

“और पुण्य कर्मों को करे पर कम धन वाला यज्ञ न करे। न्यून/कम दक्षिणा देकर कोई यज्ञ नहीं करना चाहिए। कम दक्षिणा देकर यज्ञ कराने से यज्ञ की इन्द्रियाँ, यश, स्वर्ग, आयु, कीर्ति, प्रजा और पशुओं का नाश करती हैं।”

अन्यत्र भी कहा है, “दक्षिणाहीन यज्ञ दीक्षित को नष्ट करदेता है।” वेद में भी कहा गया है, “प्रयत्न से उत्तम कर्म करने वाले के लिए जो योग्य दक्षिणा देता है, अग्नि उस मनुष्य की चारों ओर से सुरक्षा करता है।”

“कंजूस कभी भी ज्ञानसम्पन्न नहीं हो सकते, वे सदा ही अंधकार में ठोकर खाते फिरेंगे। जो यज्ञ के कार्य के लिए अपना धन समर्पित करते हैं, वे उन्नति करते हैं और अदानशील व्यक्ति नष्ट हो जाते हैं।”

इसलिए वैदिक विद्याओं को बचाने के लिए, सनातन धर्म की रक्षा के लिए केवल दोषारोपण न करें। आपके लिए वैदिक विद्या का प्रयोग करने वाले आचार्यों, अन्य योग्य सनातनी संस्थाओं और व्यक्तियों को उचित दान दक्षिणा देने में कंजूसी न करें। बहुत सी ऐसी जगहें हैं जहाँ धनबचा लेंगे। फालतू जगहों पर कंजूसी करेंगे तो धन बढ़ेगा, वैदिक विद्या और धर्म के कार्य में कंजूसी करेंगे तो धन घटेगा। इधर तो देने से ही बढ़ता है। इसमें शास्त्रों का स्पष्ट निर्देश है।

सन्दर्भ {सोजन्य से (लिया गया है)} :

१. यजुर्वेद 19.30
२. ऋग्वेद 5.34.7
. अथर्ववेद 20.63.5/ऋग्वेद 1.84.8
४. ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृति खण्ड, अध्याय 42
५. मनुस्मृति 11.39/40
६. स्कन्दपुराण 5.33.27
७. ऋग्वेद 1.31.15

बद्रीनाथ धाम कथा

एक बार श्री हरि (विष्णु) के मन में एक घोर तपस्या करने की इच्छा जाग्रत हुई। वे उचित जगह की तलाश में इधर उधर भटकने लगे

खोजते खोजते उन्हें एक जगह तप के लिए सबसे अच्छी लगी जो केदार भूमि के समीप नीलकंठ पर्वत के करीब थी

यह जगह उन्हें शांत, अनुकूल और अति प्रिय लगी

वे जानते थे की यह जगह शिव स्थली है अतः उनकी आज्ञा ली जाये और यह आज्ञा एक रोता हुआ बालक ले तो भोले बाबा तनिक भी माना नहीं कर सकते है

उन्होंने बालक के रूप में इस धरा पर अवतरण लिए और रोने लगे

उनकी यह दशा माँ पार्वती से देखी नही गयी और वे शिवजी के साथ उस बालक के समक्ष उपस्थित होकर उनके रोने का कारण पूछने लगे

बालक विष्णु ने बताया की उन्हें तप करना है और इसलिए उन्हें यह जगह चाहिए

भगवान शिव और पार्वती ने उन्हें वो जगह दे दी और बालक घोर तपस्या में लीन हो गया

तपस्या करते करते कई साल बीतने लगे और भारी हिमपात होने से बालक विष्णु बर्फ से पूरी तरह ढक चुके थे, पर उन्हें इस बात का कुछ भी पता नहीं था

बैकुंठ धाम से माँ लक्ष्मी से अपने पति की यह हालत देखी नही जा रही थी। उनका मन पीड़ा से दर्वित हो गया था

अपने पति की मुश्किलो को कम करने के लिए वे स्वयं उनके करीब आकर एक बेर (बद्री) का पेड़ बनकर उनकी हिमपात से सहायता करने लगी।

फिर कई वर्ष गुजर गये अब तो बद्री का वो पेड़ भी हिमपात से पूरा सफ़ेद हो चुका था।

कई वर्षों बाद जब भगवान् विष्णु ने अपना तप पूर्ण किया तब खुद के साथ उस पेड़ को भी बर्फ से ढका पाया

क्षण भर में वो समझ गये की माँ लक्ष्मी ने उनकी सहायता हेतू यह तप उनके साथ किया है।

भगवान विष्णु ने लक्ष्मी से कहा की हे देवी, मेरे साथ तुमने भी यह घोर तप इस जगह किया है अत इस जगह मेरे साथ तुम्हारी भी पूजा की जाएगी

तुमने बद्री का पेड़ बनकर मेरी रक्षा की है अतः यह धाम बद्रीनाथ कहलायेगा

भगवान विष्णु की इस मंदिर में मूर्ति शालग्रामशिला से बनी हुई है जिसके चार भुजाये है

कहते है की देवताओ ने इसे नारदकुंड से निकाल कर स्थापित किया था, यहाँ अखंड ज्योति दीपक जलता रहता है और नर नारायण की भी पूजा होती है। साथ ही गंगा की 12 धाराओ में से एक धार अलकनन्दा के दर्शन का भी फल मिलता है

महेश के अंश से किसकी उत्पत्ति

हे स्कन्द! महेश के हजारवें अंश से रुद्रदेव (महेश्वर) की उत्पत्ति होती है। महेश्वर के करोड़वें अंश से विष्णुदेव की और विष्णुदेव के करोड़ों अंश से ब्रह्मदेव के उत्पत्ति होती है। महेश्वर के दक्षिण, बाम और ऊर्ध्व नेत्रों से सूर्य, सोम और अग्नि उत्पन्न होते हैं। प्राण से वायु, गले से गणेश, हृदय से स्कन्द और नाभि से सभी देवताओं की उत्पत्ति होती है। इस महेश के स्वेद (पसीने) से पचास देवता और रोमकूपों से करोड़ों ऋषियों की उत्पत्ति मानी गई है।।1*5-1*9।। इस प्रकार तत्त्वों की उत्पत्ति की प्रक्रिया को यहाँ बताया गया है। अब शक्तियों की उत्पत्ति की प्रक्रिया को सुनो। बिन्दु के दशांश से उमा शक्ति की उत्पत्ति होती है। उमा, अम्बिका, गणेशी, ईश्वरी और मनोन्मनी ये पाँच शक्तियाँ एक-एक के दशांश से क्रमशः उत्पन्न होती हैं। ये पाँचों शिवसादाख्य आदि की शक्तियाँ हैं।।

माला से यह गलती न हो जाय

मालाके बिना अगर नाम-जप होता हो तो मालाकी जरूरत नहीं। परन्तु मालाके बिना भूल बहुत ज्यादा होती हो तो माला जरूर रखनी चाहिये। मालासे भगवान्‌की यादमें मदद मिलती है।

माला मनसे लड़ पड़ी, तूँ नहिं बिसरे मोय।
बिना शस्त्रके सूरमा लड़ता देख्या न कोय ॥

बिना शस्त्रके लड़ाई किससे करें! यह माला शस्त्र है भगवान्‌को याद करनेका ! भगवान्‌की बार-बार याद आवे, इस वास्ते भगवान्‌की यादके लिये मालाकी बड़ी जरूरत है। निरन्तर जप होता है तो मालाकी कोई जरूरत नहीं, फिर भी माला फेरनी चाहिये, माला फेरनेकी आवश्यकता है।

दूसरी आवश्यकता है- जितना नियम है उतना पूरा हो जाय, उसमें कमी न रह जाय उसके लिये माला है। माला लेनेसे एक दोष भी आता है। वह यह है कि आज इतना जप पूरा हो गया, बस अब रख दो माला। ऐसा नहीं करना चाहिये। भगवद्भजनमें कभी संतोष न करे। कभी पूरा न माने। धन कमानेमें पूरा नहीं मानते। पाँच रुपये रोजाना पैदा होते हैं जिस दुकानमें, उस दुकानमें सुबहके समयमें पचास रुपये पैदा हो गये तो भी दिनभर दुकान खुली रखेंगे। अब दस गुणी पैदा हो गयी तो भी दुकान बंद नहीं करेंगे। परन्तु भगवान्‌का भजन, नियम पूरा हो जाय तो पुस्तक भी समेटकर रख देंगे, माला भी समेटकर रख देंगे; क्योंकि आज तो नित्य-नियम हो गया। यह बड़ी गलती होती है। मालासे यह गलती न हो जाय कहीं कि इतनी माला हो गयी, अब बंद करो। इसमें तो लोभ लगना चाहिये कि माला छोड़ूँ ही नहीं, ज्यादा-से-ज्यादा करता रहूँ।

प्रश्न : कृष्ण और शिव में क्या अंतर है? श्रेष्ठ कौन है?

उत्तर :
जब आपकी दृष्टि एक ही लक्ष्य पर हो —
और वो दो दिखें,
तो दोष लक्ष्य में नहीं,
दृष्टि में होता है।

इसका मतलब है कि हमें ज़रूरत है
सही मार्गदर्शन, शुद्धता और आत्मचिंतन की।

कृष्ण — प्रेम हैं, रास हैं, जीवन की मधुरता हैं।

शिव — ध्यान हैं, तांडव हैं, जीवन की गहराई हैं।

एक बाँसुरी से बुलाते हैं,
एक डमरू से जगा देते हैं।
एक मन को बहा ले जाते हैं,
दूसरा मन को शून्य में ले जाता है।

श्रेष्ठ कौन है?
ये प्रश्न ही गलत है।
जिन्हें देखा जा रहा है,
वे दो नहीं — एक ही हैं।

जिससे तुम्हारा हृदय जुड़ जाए, वही तुम्हारा मार्ग है।
क्योंकि कृष्ण और शिव अलग नहीं,
एक ही परम तत्त्व की दो लीलाएं हैं।

मत पूछो — कौन बड़ा है।
पूछो — तुम किसके लिए तैयार हो?

हर हर महादेव

दिल्ली में कोरोना संक्रमण के 23 नए केस आए, सांस की बीमारी से जूझ रहे हर मरीज को करानी होगी जांच

दिल्ली में कोरोना के 23 मामले सामने आने के बाद स्वास्थ्य विभाग अलर्ट पर आ गया है। अस्पतालों को जांच बढ़ाने को कहा गया है। सभी पॉजिटिव सैंपल की जीनोम सीक्वेंसिंग की जाएगी। सांस की बीमारी के सभी मरीज और इन्फ्लूएंजा के पांच प्रतिशत मरीजों की कोराना जांच की जाएगी।

नई दिल्ली: दिल्ली में बृहस्पतिवार तक कोरोना के 23 मामले आए हैं। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ मौजूदा स्थिति की समीक्षा की।

इसके बाद दिल्ली सरकार ने सभी सरकारी और निजी अस्पतालों के चिकित्सा निदेशक व अधीक्षकों को दिशा निर्देश जारी कर अलर्ट किया गया। अस्पतालों को जांच व निगरानी बढ़ाने का निर्देश दिया गया।

सरकार ने अस्पतालों में सभी को मास्क पहनने के निर्देश दिए हैं। ताकि संक्रमण का फैलाव ज्यादा न होने पाए।लोगों से कोरोना से बचाव के लिए निर्देशों का पालन करने के लिए कहा गया है।

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा, लोगों को घबराने की जरूरत नहीं

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने कहा कि लोगों को घबराने की आवश्यकता नहीं है। सरकार स्थिति से निपटने के लिए तैयार है।

सरकार यह सत्यापित करने में जुटी है कि पीड़ित मरीज दिल्ली के रहने वाले हैं या बाहर से यात्रा करके लौटे हैं। स्वास्थ्य विभाग स्थिति पर नजर रखे हुए है और लोगों को आवश्यक सूचनाएं समय से जारी की जाएगी।

पर्याप्त ऑक्सीजन बेड और वेंटिलेटर की व्यवस्था करने का निर्देश

सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देश में अस्पतालों में बेड, ऑक्सीजन बेड, एंटीबायोटिक, अन्य दवाएं व टीके का स्टाक रखने के लिए कहा है। साथ ही पर्याप्त वेंटिलेटर, ऑक्सीजन मास्क, ऑक्सीजन कांसेंट्रेटर व ऑक्सीजन प्लांट तैयार रखने के निर्देश दिए गए हैं।

अस्पतालों को ओपीडी व आईपीडी में प्रतिदिन सामने आए इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारियों व सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी इलनेस (सारी) के मामलों की रिपोर्ट एकीकृत स्वास्थ्य सूचना प्लेटफार्म व दिल्ली राज्य स्वास्थ्य डाटा प्रबंधन पोर्टल पर देनी होगी।

सांस की बीमारी जूझ रहे सभी मरीजों को करानी होगी जांच

इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारियों से पीड़ित पांच प्रतिशत व अचानक सांस की गंभीर समस्या से पीड़ित हुए सभी मरीजों की जांच करानी होगी।

पॉजिटिव पाए गए सभी सैंपल का लोकनायक अस्पताल में जीनोम सीक्वेंसिंग होगी। ताकि कोरोना वायरस में बदलाव होने पर नए वायरस की जानकारी मिल सके।

नए वायरस के संक्रमण की बात सामने आने पर तुरंत इसकी सूचना राज्य निगरानी यूनिट को देनी होगी।

दिल्ली के कई इलाकों में गरजा बुलडोजर, फुटपाथ पर बनीं सीढ़ियां ध्वस्त, वाहनों के कटे चालान; कई जब्त

पूर्वी दिल्ली में जिला प्रशासन और नगर निगम ने संयुक्त रूप से अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई की। लक्ष्मी नगर और शकरपुर मार्केट में फुटपाथ पर बनी दुकानों की सीढ़ियों और स्लैब को बुलडोजर से तोड़ा गया। दुकानदारों में गुस्सा था पर पुलिस की मौजूदगी के कारण विरोध नहीं कर सके। कई वाहनों को भी जब्त किया गया। अन्य इलाकों में भी अतिक्रमण हटाया गया।

पूर्वी दिल्ली। व्यावसायिक क्षेत्रों में फुटपाथ पर अतिक्रमण करने वालों पर शुक्रवार को गाज गिरी। जिला प्रशासन के नेतृत्व में विशेष कार्य बल और नगर निगम ने फुटपाथ पर बनी दुकानों की सीढ़िया और स्लैब को बुलडोजर से तोड़ दिया।

दुकानदारों में इसे लेकर गुस्सा रहा, लेकिन पुलिस की मौजूदगी के चलते कोई विरोध नहीं पाया। कई दुकानदार तो खुद दुकानों के आगे से सीढ़ियां हटाते नजर आए। इस दौरान सड़क और सर्विस रोड पर खड़े वाहनों को भी जब्त किया गया।

विकास मार्ग के एक तरफ लक्ष्मी नगर मार्केट और दूसरी ओर शकरपुर मार्केट की दुकानें हैं। दोनों ही तरफ दुकानदारों ने फुटपाथ तक कब्जा किया हुआ था। ज्यादातर ने दुकानों पर चढ़ने के लिए सीढ़ियां फुटपाथ पर बना रखी थीं। कुछ ने स्लैब लगाकर चबूतरे बनाए हुए थे।

कई दुकानों के बाहर काउंटर फुटपाथ पर रखे थे। दिव्यांगों के लिए लगे पीले रंग के स्पर्शीय टाइल्स तक अतिक्रमण में ढक गए थे। इससे पैदल चलने वालों को दिक्कत होती थी। वह सर्विस रोड पर चलते थे। इस समस्या को खत्म करने के लिए प्रीत विहार एसडीएम संदीप यादव के नेतृत्व में विशेष कार्य बल के तहत नगर निगम ने शुक्रवार को विकास मार्ग के दोनों ओर फुटपाथ से अतिक्रमण हटाया।

दुकानों के सामने बनी सीढ़ियों के साथ स्लैब बुलडोजर से तोड़ दिए गए। इस दौरान दोनों ओर सर्विस रोड पर खड़ी कई मोटरसाइकिलों को पुलिस और निगम की टीम ने जब्त किया। इसी तरह नगर निगम के शाहदरा दक्षिणी जोन की टीम ने त्रिलोकपुरी 20-ब्लॉक में कार्रवाई दुकानों के सामने सड़क पर बने चबूतरे और सीढ़ियां तोड़ी।

नगर निगम के शाहदरा उत्तरी जोन की टीम ने ट्रैफिक पुलिस के साथ मिलकर खजूरी चौक, शेरपुर, चांदबाग, और भजनपुरा पुलिया पर कार्रवाई की। कई रेहड़ियां और काउंटर जब्त किए गए। यहां पर 40 वाहनों के ऑनलाइन चालान किए गए। मौजपुर के पास भी कार्रवाई की गई।

दिल्ली में गिरफ्तार हारुन को लेकर बड़ा खुलासा, पाकिस्तान का ये कनेक्शन आया सामने

यूपी एटीएस ने दिल्ली के सीलमपुर में रहने वाले मोहम्मद हारुन नाम के एक शख्स को गिरफ्तार किया है। तीन बच्चों के पिता हारुन ने घर वालों को बिना बताए पाकिस्तान जाकर अपनी बुआ की तलाकशुदा बेटी से दूसरा निकाह कर लिया था। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के तीसरे दिन वह पाकिस्तान से भारत लौटा था। वह 21 दिन पाकिस्तान में रहा था। पूछताछ में कई खुलासे।

पूर्वी दिल्ली। पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के शक में यूपी एटीएस ने सीलमपुर में रहने वाले मोहम्मद हारुन को गिरफ्तार किया है। यह दोहरी जिंदगी जी रहा था। तीन बच्चों के पिता हारुन ने घर वालों को बिना बताए पाकिस्तान जाकर अपनी बुआ की तलाकशुदा बेटी से दूसरा निकाह कर लिया था।

उसकी इस निकाह का राज घर वालों के सामने तब खुला जब वह वर्ष 2022 के बाद फिर से पाकिस्तान जाने की जिद करने लगा। दूसरी पत्नी की सच्चाई सामने आने के बाद पहली पत्नी ने इससे दूरियां बना ली थी। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के तीसरे दिन वह पाकिस्तान से भारत लौटा था। वह 21 दिन पाकिस्तान में रहा। घर वाले यह मानने को तैयार नहीं कि हारुन पाकिस्तान के लिए जासूसी करता है।

सीलमपुर में शुक्रवार को दिनभर हारुन की गिरफ्तारी की चर्चा होती रही। उसके घर वालों का बाहर निकलना मुश्किल हो गया। पड़ोसियों के सवालों से परेशान होकर वह बाहर नहीं निकल रहे थे। उसके घर वाले समझ नहीं पा रहे हैं हारुन के साथ हुआ किया है।

हारुन व इसकी मां एक ही गली में रहते हैं, मां अपने तीन बेटों के साथ अलग घर में रहती हैं। मां के घर के नीचे हारुन का कबाड़ का काम है। इसके परिवार में मां रुकैया, तीन भाई शाहिद, वसीम व जावेद व दो बहने हैं। शाहिद ने बताया कि वर्ष 2007 में हारुन की शादी नोएडा निवासी शबाना से हुई थी। दंपती के तीन बच्चे हैं।

उन्होंने बताया कि उनकी बुआ का परिवार पाकिस्तान के गुजरांवाला में रहता है। बुआ व उनके पति की मौत हो गई है। उनकी बेटी सुमेरा की तलाक हो गई थी। फोन के जरिये परिवार की पाकिस्तान में रहने वाले रिश्तेदारों से अक्सर बात होती रहती है। वर्ष 2022 में हारुन पाकिस्तान घूमने गया था।

वहां उसने सुमेरा से शादी कर ली। परिवार ने बताया कि वहां से दिल्ली लौटने के कुछ माह बाद वह फिर से पाकिस्तान जाने के लिए कहने लगा। इसपर परिवार ने आपत्ति जताई तो उसने बताया कि बुआ की बेटी से दूसरी शादी कर ली, उससे मिलने जा रहा है। दूसरी पत्नी से उसके कोई बच्चा नहीं है।

वह 2022 से लेकर 2025 के बीच पांच बार पाकिस्तान जा चुका है। आखिरी बार इस साल पांच अप्रैल को गया था और 25 अप्रैल को दिल्ली लौटा था। परिवार का दावा है हारुन अपनी पत्नी से पाकिस्तान मिलने जाता था। उसके अलावा घर का कोई सदस्य पाकिस्तान नहीं गया। वह पाकिस्तान उच्चायोग में तैनात कर्मचारी मुज्जमिल के संपर्क में कैसे आया इस बारे में कोई जानकारी होने से मना कर दिया। यह भी दावा किया हारुन ने सीलमपुर में रहने वाले किसी भी व्यक्ति को पाकिस्तान नहीं भेजा।

पाकिस्तान से आए लोगों की जांच करने का बहाना बनाकर दबोचा

यूपी एटीएस के दो पुलिसकर्मी बुधवार रात के वक्त सादे कपड़ों में हारुन की मां के घर पहुंचे। दरवाजा खटखटाया तो हारुन का बड़ा भाई शाहिद बाहर आया। उन्होंने शाहिद से कहा कि वह जांच कर रहे हैं कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद कौन-कौन पाकिस्तान से दिल्ली आया है।

शाहिद ने फोन करके अपने भाई हारुन को बुलाया। कुछ देर तक पुलिस ने हारुन से घर पर पूछताछ की और उसके कार में बैठाकर अपने साथ ले गए। बृहस्पतिवार सुबह परिवार वालों के पास एटीएस ने फोन करके कहा कि हारुन को जासूसी के मामले में गिरफ्तार किया है और उसे लखनऊ की अदालत में पेश किया जा रहा है।

आर्मी हॉस्पिटल में शुरू होगा न्यूक्लियर मेडिसिन टेक्नोलॉजी में बीएससी का कोर्स

दिल्ली विश्वविद्यालय अब आर्मी हॉस्पिटल में न्यूक्लियर मेडिसिन टेक्नोलॉजी में बीएससी कोर्स शुरू करेगा। यह फैसला कार्यकारी परिषद की बैठक में लिया गया। इस कोर्स में प्रवेश के लिए सेना में कार्यरत होना अनिवार्य है। हिंदी और अंग्रेजी विभागों में पत्रकारिता में एमए करने की पढ़ाई भी शुरू की जाएगी।

नई दिल्ली: दिल्ली विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान विभाग के अंतर्गत आने वाले आर्मी हॉस्पिटल (आर एंड आर) में एक नया कोर्स शुरू होने जा रहा है।

यह कोर्स न्यूक्लियर मेडिसिन टेक्नोलॉजी में बीएससी का है, जिसे इसी साल से शुरू किया जाएगा। रेडियोलॉजी विभाग के तहत यह कोर्स तीन वर्ष का होगा और एक वर्ष की इंटर्नशिप (वैकल्पिक) अलग होगी।

इस कोर्स का उद्देश्य न्यूक्लियर मेडिसिन चिकित्सकों के साथ मिलकर काम करने और न्यूक्लियर मेडिसिन विभाग को चलाने के लिए ज्ञान और कौशल प्राप्त करना है।

सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा में काम करने वालों को मिलेगा प्रवेश

शुक्रवार को डीयू के वाइस रीगल लॉज में हुई कार्यकारी परिषद (ईसी) की 1,275 वीं बैठक में यह निर्णय लिया गया। इस कोर्स में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी भारतीय सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा (एएफएमएस) में कार्यरत होना चाहिए। छह वर्ष की सेवा पूरी कर ली हो।

अभ्यर्थियों को सीबीएसई, आईसीएसई या किसी अन्य मान्यता प्राप्त समकक्ष राज्य बोर्ड परीक्षा की उच्चतर माध्यमिक परीक्षा (शैक्षणिक) पास की होनी चाहिए। रिक्त रह जाने वाली सीटों पर वायु सेना और नौसेना के चिकित्सा सहायकों को नियुक्ति की पेशकश की जाएगी।

रेलवे अस्पताल के साथ डीयू ने साइन किया है एमओयू

डीयू कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार पर कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने बताया कि दिल्ली स्थित रेलवे अस्पताल के साथ डीयू का एक एमओयू हुआ है।

इसके तहत डीयू के कर्मचारियों को भी सीजीएचएस रेट पर वहां इलाज की सुविधा उपलब्ध कराई गई है, जिसका बहुत से कर्मचारी लाभ उठा रहे हैं।

एनईपी के तहत तैयार कोर्सों को दी गई मंजूरी

इसके साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप यूजीसीएफ के तहत सातवें और आठवें सेमेस्टर के लिए तैयार किए जा रहे कोर्सों को स्वीकृति प्रदान की गई।

कॉलेजों में छात्रों की एसेंशियल रिपीट रोकने के लिए शाम को छह से आठ बजे तक शुरू की जा रहीं रेमेडियल कक्षाओं को स्वीकृति दे दी गई।

डीयू के हिंदी और अंग्रेजी विभाग में भी होगा पत्रकारिता में एमए

डीयू के हिंदी और अंग्रेजी विभागों में भी अब पत्रकारिता में एमए की पढ़ाई करवाई जाएगी। हिंदी विभाग में 'दो वर्षीय स्नातकोत्तर हिंदी पत्रकारिता कोर्स' की शुरुआत के लिए विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया है। इसी तरह अंग्रेजी के लिए भी समिति गठित होगी।

शिक्षकों की वरिष्ठता निर्धारित करने के नियम भी पारित

डीयू के कॉलेजों और संबंधित कॉलेजों- संस्थानों के विभागों में शिक्षकों (सहायक प्रोफेसर-लेक्चरर) की वरिष्ठता के लिए नियमों को डीयू ईसी ने पारित कर दिया है।

इसके तहत यदि सभी सापेक्ष योग्यताएं समान हैं, तो सभी उद्देश्यों के लिए शिक्षकों की वरिष्ठता आयु-जन्म तिथि के आधार पर निर्धारित की जा सकती है।

डीयू के डीन ऑफ कॉलेज प्रो. बलराम पाणी की अध्यक्षता में इस विषय पर एक समिति गठित की गई थी। समिति की विस्तृत रिपोर्ट पर विचार करने के उपरांत यह नियम पारित किए गए हैं।

हलांकि, कुछ शिक्षकों ने इसका विरोध जताया। इसमें एक अप्रैल 2022 की समयसीमा निर्धारण के नियम को बदलने की मांग की। लेकिन, विरोध के बावजूद इसे अनुमोदित कर दिया गया।

सेना शौर्य आपरेशन सिन्दूर की गाथा दिखायेंगी रामलीलाएं

श्री रामलीला महासंघ की बैठक में सर्वसम्मति से हुई मांग कावड़ व हज की तर्ज पर दिल्ली की रामलीला कमेटियों को निःशुल्क सुविधाएं मिले

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। राजधानी की समस्त रामलीला कमेटियों की संस्था श्री रामलीला महासंघ की एक विशेष बैठक कांस्टीयूशन क्लब नई दिल्ली में महासंघ के अध्यक्ष अर्जुन कुमार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। रामलीला आयोजन के दौरान होने वाली समस्याओं का एक मंच पर निवारण करने के उद्देश्य से आयोजित इस बैठक में चांदनी चौक क्षेत्र के सांसद प्रवीण खण्डेलवाल विशेष रूप से उपस्थित हुए। इस बैठक में कमेटियों के सैकड़ों प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी समस्यों से सांसद महोदय एवं प्रशासनिक अधिकारियों को अवगत कराया।

श्री रामलीला महासंघ के अध्यक्ष अर्जुन कुमार ने कहा कि जिस प्रकार दिल्ली सरकार कावड़ सेवा एवं दिल्ली हज को सभी सुविधाएं निःशुल्क प्रदान करती है। उसी प्रकार प्रभु श्रीराम का संदेश घर-घर पहुंचाने में वर्षों से लगी रामलीला कमेटियों को भी बिजली, पानी, ग्रांउण्ड, सफाई आदि भी सुविधाएं निःशुल्क प्रदान की जाये। उन्होंने बताया कि मुगलों और अंग्रेजों के शासन काल में भी रामलीलाओं को सभी सुविधाएं निःशुल्क मिलती थी। दिल्ली की रामलीला कमेटियां रामलीला में सेना शौर्य आपरेशन सिन्दूर की गाथा दिखायेगी।

महासंघ अध्यक्ष अर्जुन कुमार ने यह भी बताया कि पिछले वर्ष डीडीए आन लाईन बुकिंग रामलीलाओं के लिए ग्राउण्ड 10 दिन से ज्यादा बुक नहीं किये, कुछ रामलीला ग्राउण्ड आक्शन के लिए रिजर्व किए। रामलीला मंचन की तैयारियों के लिए कम से कम 45 दिन लगते हैं, डीडीए एवं अन्य सभी विभाग 45 दिनों के लिए ग्राउण्ड निःशुल्क बुक करें।

दिल्ली पुलिस द्वारा रामलीलाओं के लिए लाईसेंस आवेदन बहुत कठिन प्रकिया है, लाईसेंस सरल किया जाये और जिला स्तर पर एप्लाई किया जाये। इसी तरह दिल्ली की बिजली कम्पनी रामलीलाओं के लिए बिजली उपलब्ध कराने के लिए बहुत ही जटिल प्रक्रिया है उसे भी आसान किया जाये। अर्जुन कुमार ने प्रवीण खण्डेलवाल सांसद को सभी समस्याओं से अवगत कराया कि हर वर्ष रामलीलाओं को सभी एजेंसी के आदेश के कारण रामलीला कमेटियों को परेशानियां उठानी पड़ती अलग-अलग विभागों में चक्कर लगाने पड़ते है, आप दिल्ली की रामलीलाओं के लिए सिंगल विंडों सिस्टम लागू करवायें जिससे की दिल्ली की समस्त रामलीलाओं को राहत मिलें।

चांदनी चौक क्षेत्र के सांसद श्री प्रवीण खण्डेलवाल ने दिल्ली की रामलीला कमेटियों को आश्वासन दिया कि मैं व्यक्तिगत रूप से दिल्ली की रामलीला आयोजन से जुड़ी सभी सिविक एजेंसियों से सभी समस्याओं को लीला आयोजन से पूर्व ही समाधान हो जायेगा। दिल्ली में रामलीला मंचन गत वर्षो की भांति ही इस वर्ष बहुत ही भव्य एवं शांतिपूर्ण वातावरण सम्पन्न होगा। प्रभु श्री राम का आशीर्वाद हम सब पर है और इसी प्रकार बना रहेगा।

श्री रामलीला महासंघ के महामंत्री सुभाष गोयल ने बताया कि इस वर्ष रामलीला महोत्सव 22 सितम्बर 2025 से 3 अक्तूबर 2025 तक मनाया जायेगा एवं दशहरा पर्व 2 अक्तूबर 2025 को पूरे विश्व में धूम धाम से मनाया जायेगा। सुभाष गोयल यह भी बताया कि इस अवसर पर सांसद प्रवीण खण्डेलवाल का शक्ति की प्रतीक हनुमान जी गदा भेंट कर सम्मान किया गया।

इस अवसर सर्वश्री लव कुश रामलीला कमेटी के पवन गुप्ता, सत्यभूषण जैन, अशोक विहार रामलीला कमेटी महेन्द्र नागपाल, कश्मीरीगेट रामलीला कमेटी जत्थेदार अवतार सिंह पूर्व मेयर, पीतमपुरा रामलीला कमेटी के कृष्ण बासिया, करोलबाग श्री सनातन धर्म रामलीला समिति, सम्पूर्ण रामायण, एनएसपी, आजाद मार्किट रामलीला कमेटी, केशव धार्मिक रामलीला कमेटी त्रिनगर, धार्मिक एकता मंच सावन पार्क, शालीमार बाग रामलीला कमेटी, श्री रामलीला कमेटी ढक्का गांव, श्री धार्मिक रामलीला कमेटी पश्चिम विहार, श्री सनातन धर्म रामलीला समिति पंजाबी बाग, सियाराम लीला मंचन बुद्ध विहार, न्यू वक्त क्लब मंगोलपुरी, हिन्दू पर्व समारोह समिति रोहिणी, श्री रघुनन्दन लीला समिति दिल्ली केन्ट, श्री रामलीला कमेटी शाहदरा, श्री बालाजी रामलीला कमेटी सूरजमल विहार, श्रीरामलीला कमेटी इन्द्रप्रस्थ विस्तार, श्री श्रीहनुमत धार्मिक रामलीला कमेटी सीबीडी शाहदरा, आदर्श रामलीला कमेटी जीटीवी आदि के गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए।

पीएम मोदी के स्वागत को तैयार कानपुर, 30 को सभा के लिए अंतिम चरण में तैयारियां

सुनील बाजपेई

कानपुर। मानवता के खिलाफ विश्व में आतंकवाद के मसीहा पाकिस्तान को ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भरपूर सबक सिखाने के बाद आ रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत करने के लिए कानपुर पूरी तरह से तैयार है। इसके लिए सभी आवश्यक तैयारी को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

यहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कार्यक्रम 30 मई को प्रस्तावित है जिसके लिए सीएसए ग्राउंड में पंडाल लगाने का काम भी शुरू कर दिया गया है। जनसभा स्थल के लिए 3 हैंगर बनाए जा रहे हैं।

दो कल्याण की जा रही हैं उनके मुताबिक बीच के हैंगर में मंच बनाया जाएगा। मंच पर बैठने के लिए सिर्फ 10 से 12 लोग ही होंगे। पूरे कार्यक्रम के दौरान पीएम मोदी करीब 2 घंटे कानपुर में रुकेंगे।

इसी के साथ गर्मी से बचाव के लिए मुख्यमंत्री योगी द्वारा दिए गये निर्देशों का पालन कराया जा रहा है।

यहां बनाये पंडाल में बैठने के लिए करीब 30 ब्लॉक तैयार किए जाएंगे। हर ब्लॉक में ठंडा पानी पीने और कूलर के इंतजाम रहेंगे। पार्किंग में छांव व पीने के पानी का इंतजाम रहेगा।

तैयारी में जुटे अधिकारियों के मुताबिक लोकार्पण व शिलान्यास की 11 परियोजनाओं में अभी बदलाव संभव है। कुछ नई योजनाओं को शामिल करने के साथ पुरानी योजनाओं को सूची से हटाया जा सकता है। वहीं, पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए शुभम द्विवेदी के परिवार से भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मिलने की उम्मीद है।

अवगत कराते चलें कि इसके पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 20 हजार करोड़ की सेंट्रल स्टेशन से चुन्नीगंज के बीच अंडरग्राउंड मेट्रो, पनकी पावर हाउस, नियवेली पावर हाउस समेत 11 परियोजनाओं का लोकार्पण व शिलान्यास करने 24 अप्रैल को शहर आ रहे थे।

लेकिन 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पीएम का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया था। अब 30 मई को प्रधानमंत्री का कार्यक्रम शहर में प्रस्तावित है। जिसके लिए सारी आवश्यक तैयारी को अंतिम रूप युद्ध स्तर पर दिया जा रहा है।

गर्मियों में दही सेवन क्यों है ज़रूरी? आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से लाभकारी

गर्मियों के मौसम में शरीर को ठंडक पहुँचाना और पाचन तंत्र को दुरुस्त बनाए रखना अत्यंत आवश्यक होता है। ऐसे में आयुर्वेद में दही को एक श्रेष्ठ आहार माना गया है। यह न केवल स्वादिष्ट होता है, बल्कि पाचन तंत्र, रोग प्रतिरोधक क्षमता और हड्डियों के लिए भी अत्यधिक लाभकारी है।

दही से पाचन तंत्र को मिलती है मजबूती

दही का नियमित सेवन आपके पाचन तंत्र को मज़बूत बनाता है। इसमें मौजूद Probiotics यानी अच्छे बैक्टीरिया पेट की सेहत को बेहतर रखते हैं। गर्मियों में दही और चीनी एक साथ खाने से पेट में ठंडक बनी रहती है, जिससे एसिडिटी, जलन और गैस जैसी समस्याएं कम होती हैं।

दूध नहीं पीते? तो ज़रूर खाएं दही

जो लोग दूध नहीं पचा पाते या पसंद नहीं करते, उनके लिए दही एक बेहतरीन विकल्प है। इसमें होता है:

कैल्शियम
विटामिन B-12, B-2
मैग्नीशियम
पोटैशियम

ये सभी पोषक तत्व हड्डियों, दांतों और मांसपेशियों को मज़बूती प्रदान करते हैं।

इससे मस्तिष्क और शरीर को तात्कालिक ऊर्जा मिलती है।

सुबह इसे खाने से आप पूरे दिन एक्टिव और एनर्जेटिक महसूस करते हैं।

रोग प्रतिरोधक क्षमता को करता है मज़बूत

दही में मौजूद Probiotics आपकी Immunity को बढ़ाते हैं और आंतों को स्वस्थ रखते हैं। यह कोलन कैंसर जैसी बीमारी के ख़तरे को भी कम कर सकता है।

दिल, किडनी और ब्लड प्रेशर के लिए फायदेमंद

दही कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है।

यह Coronary Artery Disease से बचाव में सहायक है।

हाई ब्लड प्रेशर और Kidney diseases में भी दही का सेवन लाभदायक होता है।

वजन घटाने और पेट की चर्बी कम करने में सहायक

कम वसा वाला (Low Fat) दही न केवल आंतों को हेल्दी रखता है, बल्कि वजन नियंत्रित करने और पेट की चर्बी कम करने में भी मदद करता है।

मुंह के छालों के लिए घरेलू उपाय

अगर आप Mouth Ulcers से परेशान हैं, तो दही में शहद मिलाकर सेवन करें। यह एक सरल और असरदार Ayurvedic remedy है।

निष्कर्ष:

गर्मियों में दही का सेवन न केवल स्वाद बढ़ाता है बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत लाभकारी है। आयुर्वेद के अनुसार, सुबह दही या छाछ का सेवन आपके पाचन, ऊर्जा और Immunity के लिए फायदेमंद है। दही को अपने रोज़ाना आहार में शामिल कर आप कई Health problems से बच सकते हैं।

दैनिक संस्कार मंत्र :

यहां शास्त्र में वर्णित कुछ ऐसे मंत्र के बारे में वर्णन किया है जिन्हें आने वाली पीढ़ी को कंठस्थ कराना बेहद जरूरी है। इन मंत्र व श्लोक बच्चों को जरूर सिखाना चाहिए, ताकि इनका दैनिक प्रयोग कर नई पीढ़ी के बच्चे अपना जीवन दिव्य और अद्भुत बना सके, जिससे वह बल और वेग आयेगा जो उन्हें धर्म रक्षा की ओर अग्रसरित करेगा। अतः स्वयं वैदिक नित्य कर्मानुसार इन मंत्रों का पालन करें तथा अन्य बच्चो परिवारजनों को भी कहें कि वे भी इन शुभ मंत्रों को अपने आचरण में लायें। मंत्र जाप करने से आपके घर में दोष रहित सुख-शांति आयेगी। ये समस्त शास्त्रोक्त मंत्र सभी के लिए है।

01. प्रातः जगने का मंत्र :

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद उत्तिष्ठ जगतः पते।
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तं उत्थिते चोत्थितं जगत॥

हे गोविंद, जगत के स्वामी ! आप उठ जाएं, आपके सोने से संसार सो जाता है और जगने पर संसार भी जगता है।(प्रातः आंख खुलने पर हाथ जोड़कर यह देव भाव से पढ़ें)

02. करदर्शन मंत्र :

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा: प्रभाते करदर्शनम्॥

हाथ के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्य में सरस्वती तथा मूल भाग में ब्रह्मा का वास होता है, इसीलिए प्रातः करदर्शन करना चाहिए।

03. पृथ्वी स्पर्श मंत्र :

(उठकर प्रथम चरण रखते ही)

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

हे विष्णुपत्नी पृथ्वी देवी ! आप समुद्र रूपी वस्त्र एवं पर्वत रूपी स्तनों से युक्त हैं, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आप पर चरण रखने से जो अपराध हो रहा है, उसके लिए क्षमा करें।

04. नवग्रह स्मरण मंत्र :

ब्रह्मा मुरारी स्त्री पुरान्तकारी
भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

ब्रह्मा, मुरारी, तीनों लोकों के संहारक, भानु, चंद्रमा, भूमि और बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये सभी मेरी सुबह शुभ बनाएं।

05. दंतधावन मंत्र :

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च।
ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते।

हे वनस्पति ! आप हमें आयु, बल, यश, तेज, सन्तान, पशु, धन, ब्रह्मज्ञान और मेधाशक्ति प्रदान करें।

06. मल/मूत्र त्याग का मंत्र :

गच्छन्तु ऋषयो देवाः पिशाचा ये च गुह्यकाः।
पितृभूतगणाः सर्वे करिष्ये मलमोचनम्॥

यहां सूक्ष्मरूप से यदि कोई देवता, ऋषि, पिशाच, गुह्यक, पितृगण, भूतगण आदि हैं तो कृपया वे चले जाएं क्योंकि मैं यहां मलत्याग करूँगा।

07. स्नान मंत्र :

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन सन्निधिं कुरु।

गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु और कावेरी आप सभी तीर्थ मेरे पानी में आइये, में आपका आवाहन करता हु मेरे इस पानी को पवित्र बनाओ ताकि में इसमें स्नान कर अपने सभी पापो का विनाश कर सकू।

08. भोजन के पहले ये मंत्र :

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ।।
ॐ सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु,
सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

09. भोजन के बाद ये मंत्र :

अगस्त्यम कुम्भकर्णम च शनिं च
बडवानलनम।
भोजनं परिपाकारथ स्मरेत भीमं च पंचमं ।।
अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद् भवः।।

दैनिक प्रार्थना मंत्र :

01. श्री गणेश :
वक्रतुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नम कुरू मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

02. श्री गायत्री :
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात ॥

03. श्री ब्रह्माजी :
ॐ नमस्ते परमं ब्रह्मा, नमस्ते परमात्ने ।
निर्गुणाय नमस्तुभ्यं, सदुयाय नमो नमः।।

04. श्री सरस्वती :
ॐ सरस्वति नमस्तुभ्यं,
वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि,
सिद्धिर्भवतु मे सदा ।।

05. श्री हरि विष्णु :
मङ्गलम्भगवान विष्णुः,
मङ्गलम्गरुडध्वजः।
मङ्गलम्पुण्डरी काक्षः,
मङ्गलाय तनो हरिः॥

06. श्री महालक्ष्मी :
ॐ सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो,
धन धान्यः सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन,
भविष्यति न संशयः।।

07. श्री महादेव :
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे,
सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्,
मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

08. श्री दुर्गा :
ॐ जयंती मंगला काली,
भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री,
स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

09. श्री महाकाली :
ॐ क्रीं क्रीं क्रीं, हलीं ह्रीं खं स्फोटय,
क्रीं क्रीं क्रीं फट ।।

10. श्री राम :
श्री रामाय रामभद्राय, रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय, सीताया पतये नमः ।।

11. श्री कृष्णा :
वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकी परमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

12. श्री हनुमान :
मनोजवं मारुततुल्यवेगं,
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं,
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

13. श्री शनिदेव :
ॐ नीलांजनसमाभासं, रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं, तं नमामि शनैश्चरम्।।

14. श्री कार्तिकेय :
ॐ शारवाना-भावाया नमः,
ज्ञानशक्तिधरा स्कंदा,
वल्लीईकल्याणा सुंदरा।
देवसेना मनः कांता, कार्तिकेया नामोस्तुते।।

15. श्री काल भैरव :
ॐ ह्रीं वां बटुकाये,
क्षौं क्षौं आपदुद्धाराणाये।
कुरु कुरु बटुकाये, ह्रीं बटुकाये स्वाहा।।

16. श्री परशुराम :
ॐ ब्रह्मक्षत्राय विद्महे क्षत्रियान्ताय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।।
ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि तन्नो परशुरामः प्रचोदयात्।।

नए भारत का वैश्विक संकल्प...
सनातन वैदिक धर्म...विश्व धर्म
अखंड हिंदु राष्ट्र भारत...विश्व गुरु भारत
धर्मो रक्षति रक्षितः

खाना पचेगा या सड़ेगा

खाना खाने के बाद पेट में खाना पचेगा या खाना सड़ेगा, यह जानना बहुत जरूरी होता है। हमने रोटी खाई, हमने दाल खाई, हमने सब्जी खाई, हमने दही खाया लस्सी पी, दूध, दही छाछ, लस्सी फल आदि यह सब कुछ भोजन के रूप में हमने ग्रहण किया। यह सब कुछ हमें उर्जा देते हैं और पेट उस उर्जा को आगे ट्रांसफर करता है।

पेट में एक छोटा सा स्थान होता है, जिसको हम हिन्दी में ₹आमाशय₹ कहते हैं। इसका संस्कृत नाम है ₹जठर₹। यह एक थैली की तरह होता है। यह जठर हमारे शरीर में सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि सारा खाना सबसे पहले इसी में आता है। यह बहुत छोटा सा स्थान है। हम जो कुछ भी खाते हैं, वह सब इस आमाशय में आ जाता है। आमाशय में जो अग्नि प्रदीप्त होती है उसे जठराग्नि कहते हैं।

यह जठराग्नि आमाशय में प्रदीप्त होने वाली आग है। जैसे ही हम खाना खाना खाते हैं, जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है। यह ऑटोमेटिक है, जैसे ही हमने रोटी का पहला टुकड़ा मुँह में डाला, कि इधर जठराग्नि प्रदीप्त हो गई। यह अग्नि तब तक जलती है जब तक खाना पचता है। अब हमने खाना खाते ही गटागट पानी पी लिया और खूब ठंडा पानी पी लिया।अब जो आग (जठराग्नि) जल रही थी, वह बुझ गयी। आग अगर बुझ गयी, तो पचने की जो क्रिया है वह रुक जाती है।

अब हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि खाना पेट में जाने पर पेट में दो ही क्रियाएं होती हैं, एक क्रिया है जिसको हम कहते हैं पचना, और दूसरी है, सड़ना।

आयुर्वेद के हिसाब से आग जलेगी तो खाना पचेगा, खाना पचेगा तो उससे रस बनेगा। रस से मांस, मज्जा, रक्त, वीर्य, हड्डियां, मल, मूत्र और अस्थि बनेगा और सबसे अंत में मेद बनेगा। यह तभी होगा जब खाना पचेगा। खाना सड़ने पर सबसे पहला जहर जो बनता है वह है यूरिक एसिड। यूरिक एसिड बढ़ने से ही घुटने, कंधे, कमर में दर्द होता है। जब खाना सड़ता है, तो यूरिक एसिड जैसा ही एक दूसरा विष बनता है जिसको हम कहते हैं एलडीएल (खराब कोलस्ट्रॉल)। खराब कोलस्ट्रॉल के बढ़ने से ही ब्लड प्रेशर (बीपी) बढ़ता है। ये सभी बीमारियां तब आती हैं जब खाना पचता नहीं है, बल्कि सड़ता है।

खाना पचने पर किसी भी प्रकार का कोई भी जहर नहीं बनता है। खाना पचने पर जो बनता है वह है मांस, मज्जा, रक्त, वीर्य, हड्डियां, मल, मूत्र, अस्थि और खाना नहीं पचने पर बनता है यूरिक एसिड, कोलेस्ट्रोल, एलडीएल, वीएलडीएल और यही हमारे शरीर को रोगों का घर बनाते हैं। पेट में बनने वाला यही जहर जब ज्यादा बढ़कर खून में आता है, तो खून दिल की नाड़ियों में से निकल नहीं पाता और रोज थोड़ा थोड़ा कचरा जो खून में आया है, इकट्ठा होता रहता है और एक दिन नाड़ी को ब्लॉक कर देता है। इसी से हार्ट अटैक होता है।

अतः हमें ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि जो हम खा रहे हैं, वह ठीक से पचना चाहिए, इसके लिए पेट में ठीक से आग (जठराग्नि) प्रदीप्त होनी ही चाहिए, क्योंकि बिना आग के खाना पचता नहीं है और खाना पकता भी नहीं है। महत्व की बात खाने को खाना नहीं खाने को पचाना है। हमने क्या खाया, कितना खाया यह महत्त्वपूर्ण नहीं है। खाना अच्छे से पचे इसके लिए वाग्भट्ट जी ने सूत्र दिया है-

"भोजनान्ते विषं वारी" (खाना खाने के तुरंत बाद पानी पीना जहर पीने के बराबर है)। इसलिए खाने के तुरंत बाद पानी कभी नहीं पीना चाहिए। जब हम खाना खाते हैं तो जठराग्नि द्वारा सब एक दूसरे में मिक्स होता है और फिर खाना पेस्ट में बदलता है। पेस्ट में बदलने की क्रिया होने तक एक घंटा ४८ मिनट का समय लगता है। उसके बाद जठराग्नि कम हो जाती है। बुझती तो नहीं, लेकिन बहुत धीमी हो जाती है। पेस्ट बनने के बाद शरीर में रस बनने की प्रक्रिया शुरू होती है, तब हमारे शरीर को पानी की जरूरत होती है।

अनदेखे सबूत, अनसुनी सच्चाई — सोशल मीडिया ट्रायल का सच

न्याय वह पवित्र अग्नि है, जो समाज की नैतिकता को जलाए रखती है, लेकिन जब यह अग्नि सोशल मीडिया की आंधी में बेकाबू होकर भड़कने लगती है, तो वह राख में बदलने की धमकी देती है। आज का युग डिजिटल क्रांति का युग है, जहाँ हर व्यक्ति के पास न केवल आवाज़ है, बल्कि उसे लाखों तक पहुँचाने की ताकत भी है। लेकिन यह ताकत जब बिना सोचे-समझे, बिना सबूत और बिना प्रक्रिया के किसी को दोषी ठहराने के लिए इस्तेमाल होती है, तो सवाल उठता है — क्या यह न्याय है, या भीड़ का उन्माद? सोशल मीडिया ट्रायल, यानी जनता की अदालत में होने वाली यह सुनवाई, न केवल व्यक्ति के जीवन को तहस-नहस कर देती है, बल्कि लोकतंत्र के मूलभूत सिद्धांतों को भी चुनौती देती है।

सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति को एक नया आयाम दिया है। यह वह मंच है, जहाँ एक आम आदमी अपनी बात को दुनिया के सामने रख सकता है। लेकिन यही मंच तब खतरनाक हो जाता है, जब यह आवाज़ें तथ्यों की जगह भावनाओं, संदेहों की जगह अफवाहों और निष्पक्षता की जगह पक्षपात का रूप ले लेती हैं। हाल के वर्षों में कई ऐसे मामले सामने आए हैं, जहाँ किसी व्यक्ति पर आरोप लगते ही सोशल मीडिया पर उसका चरित्र, उसकी निजता और उसका भविष्य तार-तार कर दिया गया। हैशटैग ट्रेंड करने लगते हैं, और देखते ही देखते लाखों लोग बिना किसी ठोस सबूत के एक व्यक्ति को अपराधी मान लेते हैं। यह डिजिटल भीड़तंत्र न तो कानूनी प्रक्रिया का इंतज़ार करता है, न ही यह समझने की कोशिश करता है कि हर कहानी के दो पहलू हो सकते हैं। यह त्वरित न्याय की माँग करता है, लेकिन यह भूल जाता है कि जल्दबाज़ी में दिया गया फैसला अक्सर अन्याय का कारण बनता है।

भारत जैसे देश में, जहाँ न्यायिक प्रक्रिया की धीमी गति और लंबित मुकदमों की संख्या आम आदमी के धैर्य की परीक्षा लेती है, सोशल मीडिया का यह रूप समझ में आता है। लोग निराश और हताश होकर सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं, ताकि उनकी आवाज़ सुनी जाए। कई बार यह मंच उन मामलों को उजागर करता है, जिन्हें मुख्यधारा की मीडिया नज़रअंदाज़ कर देती है। उदाहरण के लिए, कई गंभीर अपराधों में सोशल मीडिया के दबाव के कारण पुलिस और प्रशासन को त्वरित कार्रवाई करनी पड़ी। लेकिन आवाज़ उठाना और फैसला सुनाना दो अलग-अलग चीज़ें हैं। जब सोशल मीडिया पर लोग बिना पूरी जानकारी के किसी को दोषी ठहरा देते हैं, तो वे न केवल उस व्यक्ति के अधिकारों का हनन करते हैं, बल्कि कानूनी प्रक्रिया को भी कमज़ोर करते हैं। एक न्यायाधीश, जो समाज का हिस्सा है, सोशल मीडिया के इस दबाव से पूरी तरह अछूता नहीं रह सकता। ऐसे में निष्पक्षता बनाए रखना एक चुनौती बन जाती है।

सोशल मीडिया ट्रायल का सबसे बड़ा खतरा यह है कि यह तथ्यों को नजरअंदाज कर अफवाहों को पंख लगाता है। एक वायरल पोस्ट, उत्तेजक वीडियो या अधूरी जानकारी वाला स्क्रीनशॉट ही सच का आधार बन जाता है। यह ट्रायल अक्सर तथ्यों से परे, जाति, धर्म, लिंग या राजनीतिक विचारधारा के आधार पर पक्षपातपूर्ण हो जाता है। परिणामस्वरूप, समाज

में वैमनस्य और ध्रुवीकरण बढ़ता है, जो सामाजिक एकता को गहरी चोट पहुँचाता है। यह न केवल अन्यायपूर्ण है, बल्कि समाज के लिए एक गंभीर और खतरनाक प्रवृत्ति है, जो हमें सतर्कता और जागरूकता की ओर प्रेरित करती है।

इसके अलावा, सोशल मीडिया ट्रायल का प्रभाव केवल आरोपी तक सीमित नहीं रहता। कई बार पीड़ित भी इसकी चपेट में आ जाते हैं। उनकी निजता का उल्लंघन होता है, उनकी कहानी को तोड़-मरोड़कर पेश किया जाता है, और कभी-कभी उन्हें ही ट्रोलिंग का शिकार होना पड़ता है। यह संवेदनहीनता न केवल पीड़ित के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि उनके लिए न्याय की राह को और कठिन बना देती है। उदाहरण के लिए, यौन उत्पीड़न के मामलों में कई बार पीड़ित की पहचान उजागर हो जाती है, जिससे उनकी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्थिति और बिगड़ जाती है। यह एक ऐसी त्रासदी है, जो सोशल मीडिया की अनियंत्रित शक्ति को दर्शाती है।

पुलिस और जांच एजेंसियाँ भी इस दबाव से अछूती नहीं रहतीं। सोशल मीडिया पर चल रहे अभियानों और ट्रेंडिंग हैशटैग के कारण कई बार उन्हें जल्दबाज़ी में कार्रवाई करनी पड़ती है, जो निष्पक्षता को प्रभावित कर सकती है। कुछ मामलों में राजनीतिक हितों को साधने के लिए भी सोशल मीडिया ट्रायल का दुरुपयोग किया जाता है। यह न केवल कानूनी प्रक्रिया को कमज़ोर करता है, बल्कि लोगों के बीच अविश्वास को भी बढ़ाता है।

क्या इसका मतलब यह है कि सोशल मीडिया पूरी तरह नकारात्मक है? बिल्कुल नहीं। यह एक शक्तिशाली उपकरण है, जिसने कई बार सकारात्मक बदलाव लाए हैं। लेकिन इसका उपयोग विवेकपूर्ण और ज़िम्मेदारी के साथ करना होगा। हमें यह समझना होगा कि लोकतंत्र में हर व्यक्ति को अपनी बात कहने का अधिकार है, लेकिन फैसला सुनाने का अधिकार केवल न्यायालय को है। सोशल मीडिया को सूचना और जागरूकता का मंच बनाना होगा, न कि सजा देने का। इसके लिए डिजिटल साक्षरता, नैतिकता और मंचों की ज़िम्मेदारी तय करना अनिवार्य है। साथ ही, न्यायिक प्रक्रिया में सुधार भी उतना ही ज़रूरी है। यदि न्याय समय पर और पारदर्शी होगा, तो लोग सोशल मीडिया पर निर्भरता कम करेंगे।

न्याय एक ऐसी प्रक्रिया है, जो तथ्यों, सबूतों और निष्पक्षता पर टिकी होती है। सोशल मीडिया इस प्रक्रिया को नज़रअंदाज़ कर केवल भावनाओं और तात्कालिक उन्माद को हवा देता है। यह न्याय का मज़ाक है, न कि न्याय। हमें यह तय करना होगा कि हम एक समाज के रूप में क्या चाहते हैं — सच्चाई और निष्पक्षता, या भीड़ का उन्माद और बदले की आग। सोशल मीडिया एक तलवार है, जिसे सावधानी से चलाना होगा, वरना यह न केवल दूसरों को, बल्कि हमें भी घायल कर सकती है। इस डिजिटल युग में विवेक और संयम को अपनाएँ, ताकि हम न्याय की मशाल को जलाए रखें, न कि उसे अपनी ही आग में भस्म होने दें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

हुंडई भारत में लॉन्च करेगी 26 कारें; नई वेन्यू, क्रेटा और हाइब्रिड गाड़ियां होंगी शामिल

परिवहन विशेष न्यूज

आगामी हुंडई कारें हुंडई इंडिया 2030 तक भारतीय बाजार में अपनी 26 गाड़ियां लॉन्च करने की घोषणा की है। इसमें 20 ICE गाड़ियां और 6 इलेक्ट्रिक कार रहने वाली है। यह सभी नए मॉडल पूर्ण मॉडल परिवर्तन और इसके वर्तमान पोर्टफोलियो के लिए उत्पाद संवर्द्धन शामिल हैं।स फीचर्स है। इन गाड़ियों में नई जनरेशन Venue नई क्रेटा नई हाइब्रिड एसयूवी गाड़ियां शामिल रहने वाली है।

नई दिल्ली। पिछले दो वर्षों से भारतीय बाजार में अपनी गिरती हिस्सेदारी को बेहद गंभीरता से लेते हुए देश की प्रमुख कार कंपनी हुंडई मोटर इंडिया ने 26 नये कारों को लांच करने का एलान किया है। इनमें से ज्यादातर मॉडल बिल्कुल नई होंगी, जबकि कुछ मौजूदा प्रख्यात मॉडलों का उन्नत वर्जन होगा।

20 मॉडल ICE के होंगे

हुंडई मोटर इंडिया (एचएमआइ) के एमडी उनसू किम ने कहा है कि, “सारे मॉडल वर्ष 2030 तक लांच किये जाएंगे। इनमें से 20 मॉडल ICE (इंटरनल कम्बंशन ईंजन) पारंपरिक पेट्रोल या डीजल चालित होंगे, जबकि शेष छह इलेक्ट्रिक वाहन होंगे। लांच होने वाले कुछ वाहनों में बिल्लुक नई किस्म के ईंजन होंगे, जिनको विकसित किया जा रहा है। कंपनी के एमडी किम का कहना है कि भारतीय बाजार के लिए तैयार किये जा रहे प्रोडक्ट्स में एसयूवी ज्यादा होंगे क्योंकि भारत में बेची जाने वाली हर तीन कारों मे दो एसयूवी हैं।

हिस्सेदारी पिछले 12 वर्षों के न्यूतनम स्तर पर

शेयर बाजार में सूचीबद्ध एचएमआइ की तरफ से यह घोषणा तब हुई है जब भारतीय बाजार में उसकी हिस्सेदारी पिछले 12 वर्षों के न्यूतनम स्तर पर पहुंचने की खबर आई है। बताया जा रहा है कि दक्षिण कोरियाई मुख्यालय से एक टीम भी भारत भेजी गई है, ताकि गिरते बाजार हिस्सेदारी को थामने की दीर्घकालिक रणनीति बनाई जा सके। वित्त वर्ष 2025 में हुंडई की बाजार हिस्सेदारी 14 फीसद के करीब आ गई है, जबकि चार वर्ष पहले यह लगातार 17-18.5 फीसदी के बीच बनी हुई थी। अप्रैल, 2025 में यह घट कर 13 फीसद से भी नीचे आ गई है, जिसकी वजह से कभी भारतीय बाजार में दूसरे नंबर की यह कंपनी अब मारुति सुजुकी, महिंद्रा एंड महिंद्रा व टाटा मोटर्स के बाद चौथे स्थान पर आ गई है।

बिक्री में पहले नंबर हुंडई क्रेटा

पिछले दो महीने से हुंडई क्रेटा बिक्री के मामले में पहले नंबर पर बनी हुई है। यह मार्च और अप्रैल 2025 में भारत की सबसे ज्यादा बिकने वाली कार बनी। इसकी बिक्री के पीछे का कारण इसमें मिलने वाले प्रीमियम इंटीरियर और एडवांस फीचर्स है।

नई जीप कम्पास ग्लोबल लेवल पर पेश, साल 2025 के आखिरी से शुरू होगा

परिवहन विशेष न्यूज

नई जनरेशन जीप कम्पास को ग्लोबल लेवल पर पेश कर दिया गया है। नई कंपास पहले से ज्यादा शानदार और मजबूत दिखाई दे रही है। इसमें चौकोर शेप मस्कुलर व्हील आर्च और स्लिम LED लाइट्स को पहले से बेहतर दिया गया है। वहीं इसके आइकॉनिक सेवेन-स्लॉट ग्रिल को नया मॉडर्न लुक दिया गया है जो इलेक्ट्रिक मॉडल में काफी हद तक बंद है।

नई दिल्ली। ऑटोमेकर जीप ने नई जनरेशन Jeep Compass को ग्लोबल लेवल पर पेश कर दिया है। कंपनी ने नई जीप कंपास का खुलासा इटैलियन फुटबॉलर जुवेंटस एफसी के साथ किया है। आइए जानते हैं कि नई Jeep Compass का डिजाइन कैसा है और इसमें क्या बेहतरीन फीचर्स देखने के लिए मिलेंगे?

New Jeep Compass का डिजाइन

इसे पहले से काफी बेहतरीन डिजाइन दिया गया है। यह पहले से ज्यादा शानदार और अट्रैक्टिव दिखाई देती है। यह पहले से ज्यादा मजबूत और मॉडर्न दिखती है। इसमें चौकोर शेप, मस्कुलर व्हील आर्च, और स्लिम LED लाइट्स दी गई है। इसके आइकॉनिक सेवेन-स्लॉट ग्रिल को नया मॉडर्न लुक दिया गया है, जो इलेक्ट्रिक मॉडल में काफी हद तक बंद है। इसे लाइन ग्रीम कलर और ब्लैक रूफ के साथ लेकर आया गया है। इसमें 20-इंच के बड़े अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। नई कंपास को STLA मीडियम प्लेटफॉर्म पर बनाया गया है, जो इसे पहले से ज्यादा मजबूत और तकनीक से लैस कर देती है।

इंजन और पावरट्रेन ऑप्शन

New Jeep Compass को तीन पावरट्रेन के साथ लेकर आया गया है। इसमें 1.2-लीटर माइल्ड-हाइब्रिड पेट्रोल इंजन दिया गया है, जो 145 की पावर जनरेट करेगा। इसका 1.6-लीटर प्लग-इन हाइब्रिड इंजन 195 hp की पावर देगा। इसे पूरी तरह से इलेक्ट्रिक मॉडल में भी लॉन्च किया जाएगा, जिसमें 97 kWh तक की बैटरी मिलेगी, जो सिंगल चार्ज में 700 किमी तक की ड्राइविंग रेंज देगी।

कब होगी लॉन्च?

New Jeep Compass का प्रोडक्शन साल 2025 के अंत से इटली में शुरू होगी। इसका प्रोडक्शन पूरा होने के बाद इसे सबसे पहले यूरोप में बिक्री के लिए लॉन्च किया जाएगा। भारतीय बाजार में इसे कब लॉन्च किया जाएगा, अभी तक कंपनी की तरफ से पुष्टि नहीं की गई है। भारत में मौजूदा दूसरी पीढ़ी की कंपास 2026 तक बिक्री में बनी रह सकती है। वहीं, नई कंपास को साल 2026 के आखिरी या साल 2027 के शुरुआत में लॉन्च किया जा सकता है।

मारुति ई विटारा तीन वेरिएंट हो सकती है लॉन्च, जानिए किसमें मिलेंगे कौन-से फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

ऑटो डेस्क मारुति सुजुकी की पहली इलेक्ट्रिक कार मारुति ई-विटारा सितंबर 2025 में भारत में लॉन्च होने वाली है। यह कई बेहतरीन फीचर्स से लैस होगी और 500 किमी से ज्यादा की ड्राइविंग रेंज देगी। ई-विटारा में दो बैटरी पैक मिलेंगे और यह 10 रंगों में उपलब्ध होगी। इसे डेल्टा जेटा और अल्फा जैसे तीन वेरिएंट में लॉन्च किया जाएगा जिनमें अलग-अलग खूबियाँ होंगी।

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी की पहली इलेक्ट्रिक कार Maruti e Vitara भारत में सितंबर 2025 में लॉन्च होने वाली है। मारुति की पहली इलेक्ट्रिक कार कई बेहतरीन फीचर्स से लैस रहने वाली है। वहीं, इसमें 500 से ज्यादा ड्राइविंग रेंज मिलेगा। ई-विटारा में दो बैटरी पैक मिलेगा। कंपनी ने पहले ही इसके सभी फीचर्स का खुलासा कर दिया है। हम यहां पर आपको इसके किस वेरिएंट में क्या फीचर्स मिलेंगे, इसके बारे में बता रहे हैं?

500 किमी से ज्यादा मिलेगी रेंज

Maruti e Vitara में दो बैटरी पैक 48.8kWh और 61.1kWh मिलेगा। इसमें एक इलेक्ट्रिक मोटर मिलेगा। यह एक बार चार्ज होने के बाद 500 किमी से ज्यादा की ड्राइविंग रेंज देगी। कंपनी इसको लेकर दावा करती है कि डीसी फास्ट चार्जर से इसकी बैटरी महज 50 मिनट में 80 फीसद तक चार्ज हो जाएगी।

10 कलर ऑप्शन में होगी लॉन्च

नई मारुति सुजुकी ई विटारा को 10 रंगों में पेश किया जाएगा। इन कलर स्कीम में ओपुलेंट रेड, ब्लूश ब्लैक, आर्कटिक व्हाइट, ग्रैंड्यूर ग्रे, स्प्लेंडिड सिल्वर, नेक्सा ब्लू, और ड्यूल-टोन शेड्स जिसमें लैंड ब्रीज ग्रीन, स्प्लेंडिड सिल्वर, ओपुलेंट रेड और आर्कटिक व्हाइट शामिल हैं। इस सभी कलर के साथ इसकी रूफ ब्लूइश ब्लैक कलर की होगी। इसे तीन वेरिएंट में लॉन्च किया जाएगा, जो डेल्टा, जेटा और अल्फा होंगे। आइए जानते हैं कि इनमें क्या-क्या फीचर्स मिलेंगे।

Maruti e Vitara वेरिएंट के फीचर्स

1. e Vitara Delta

श्री-पॉइंट LED DRLs और टेल लाइट्स
ऑटोमेटिक हेडलैंप फंक्शन
फॉग लाइट्स
18 इंच के अलॉय व्हील्स
इंटीग्रेटेड स्पॉइलर
टर्न इंडिकेटर के साथ ORVMs
बारिश-सेंसिंग वाइपर
10.25 इंच पूरी तरह से डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर
10.1 इंच टचस्क्रीन इन्फोटेनमेंट सिस्टम
वायरलेस ऐप्पल कारप्ले और एंड्रॉइड ऑटो कनेक्टिविटी
फैब्रिक सीट अपहोस्ट्री
सॉफ्ट-टच इंटीरियर इनसर्ट्स
एयर प्यूरिफायर
स्टोरेज के साथ फ्रंट आर्मरेस्ट
फ्रंट और रियर USB टाइप-A और टाइप-C चार्जिंग पोर्ट
टिंट और टेलेस्कोपिक एडजेस्टेबल स्टीयरिंग
स्टीयरिंग-माउंटेड कंट्रोल
इंजन स्टार्ट-स्टॉप बटन
ऑटोमेटिक क्लाइमेट कंट्रोल
रियर एसी वेंट्स
40:20:40 स्प्लिट रियर सीटें
स्लाइडिंग और रिक्लाइनिंल रियर सीट
इलेक्ट्रिकली फोल्डेबल ORVMs
कप होल्डर्स के साथ रियर आर्मरेस्ट
इंफिनिटी सेर्स म्यूजिक सिस्टम
सात एयरबैग
सामने और पीछे की पार्किंग सेंसर
TPMS
ABS, EBD, ESP, EPB और BA
हाइट एडजस्टेबल फ्रंट सीट बेल्ट
सुजुकी कनेक्ट
ड्राइव मोड

2. e Vitara Zeta

वायरलेस मोबाइल चार्जर
रिवर्स पार्किंग कैमरा
ऑटो-डिमिंग IRVM

3. e Vitara Alpha

LED प्रोजेक्टर हेडलैम्प्स
फॉलो-मी-होम हेडलैम्प्स
10-वे पावर एडजस्टेबल ड्राइवर सीट
फैब्रिक और लेदरेट सीट अपहोस्ट्री
फिक्स्ड ग्लास के साथ इलेक्ट्रिक सनरूफ
फ्रंट वेंटिलेटेड सीटें
सबवूफर
360-डिग्री कैमरा
ADAS फीचर्स
डुअल टोन पेंट (वैकल्पिक)

होंडा अमेज का एक वेरिएंट हुआ बंद, कई बेहतरीन फीचर्स से था लैस

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा अमेज के तीसरे जनरेशन के लॉन्च होने के बाद दूसरी पीढ़ी के दो वेरिएंट S और VX की बिक्री जारी रखी गई थी। अब कंपनी ने इसके VX की बिक्री को बंद कर दिया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक जल्द ही इसके S वेरिएंट की बिक्री को भी बंद कर दिया जाएगा। यह दोनों वेरिएंट कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है।

नई दिल्ली। जब भी कोई ऑटोमेकर अपनी किसी वाहन का नया जनरेशन लेकर आती है, तो पुराने जनरेशन को तब तक बेचती है जब तक उसके सभी स्टॉक खत्म नहीं हो जाते है। कुछ ऐसा ही Honda ने किया है। होंडा ने दिसंबर 2024 में तीसरी जनरेशन Honda Amaze को लॉन्च किया था। अब कंपनी ने दूसरी जनरेशन के VX ट्रिम को भारतीय बाजार से हटा दिया है। आइए जानते हैं कि यह किन फीचर्स के साथ आती थी और इसे क्यों बंद किया गया है।

क्यों हुई बंद?

3rd Gen Honda Amaze को दिसंबर 2024 में लॉन्च किया गया था। इसके लॉन्च होने के बाद भी कंपनी ने इसकी दूसरी जनरेशन की अमेज S और VX वैरिएंट्स की बिक्री को भारत में जारी रखा था। अब कंपनी ने तीसरी जनरेशन की अमेज की बढ़ती मांग को देखते हुए, होंडा धीरे-धीरे दूसरी जनरेशन के मॉडल को बंद करने की तरफ बढ़ रही है। इसकी शुरुआत कंपनी ने VX वैरिएंट को बंद करके कर दिया है। अब दूसरी जनरेशन अमेज की केवल S वेरिएंट ही बिक्री के लिए उपलब्ध है और इसे भी आगे चलकर बंद किया जा सकता है।

S वैरिएंट की कीमत और फीचर्स

सेकेंड जनरेशन अमेज S के मैनुअल ट्रांसमिशन को 7.62 लाख रुपये और ऑटोमैटिक (CVT) को 8.52 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है। अगर आप इसके प्लैटिनम व्हाइट पर्ल कलर को खरीदते हैं, तो इसकी कीमत थोड़ी ज्यादा हो सकती है। इसमें मिलने वाले फीचर्स की बात करें, तो यह डुअल एयरबैग्स, LED DRLs, LED टेल लाइट्स, 14-इंच के व्हील्स, मैनुअल AC, 2-डिन म्यूजिक सिस्टम, और इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल ORVMs जैसी सुविधाओं के साथ आती है। इसमें 1.2-लीटर पेट्रोल इंजन मिलता है, जो 90 PS की पावर और 110 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह 5-स्पीड मैनुअल या CVT गियरबॉक्स के साथ आता है। इसे लूनर सिल्वर मेटैलिक, रेडिएंट रेड मेटैलिक, गोल्डन ब्राउन मेटैलिक, और मेट्योरॉइड ग्रे मेटैलिक कलर ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है।

व्हाट्सऐप पर मिलेगी आरटीओ की पूरी सर्विस, बार-बार के चक्कर से मिलेगा छुटकारा

परिवहन विशेष न्यूज

उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग ने व्हाट्सएप चैटबॉट शुरू किया है। इससे ड्राइविंग लाइसेंस वाहन पंजीकरण और चालान की जानकारी घर बैठे मिल जाएगी। रोड टैक्स भरने आवेदन की स्थिति जानने और वाहन स्वामित्व बदलने की प्रक्रिया भी जान सकते हैं। यह चैटबॉट 24x7 उपलब्ध रहेगा जिससे लोगों को आरटीओ के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे और सभी आरटीओ सर्विस आसानी से मिल जाएंगी।

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग ने लोगों की सहायता के लिए व्हाट्सएप चैटबॉट को पेश किया है। इस चैटबॉट को वाहन और सारथी डेटाबेस के साथ जोड़ा गया है, जिसकी वजह से आरटीओ कार्यालय जाए बिना लोग ड्राइविंग लाइसेंस की जानकारी, वाहन पंजीकरण सेवाओं, चालान की स्थिति समेत और भी कई चीजों के बारे में पता कर सकते हैं। इसके साथ ही यह चैटबॉट बाकी सर्विस जैसे रोड टैक्स पेमेंट, आवेदन की स्थिति ट्रैकिंग और वाहन के स्वामित्व के हस्तांतरण के लिए एक चरण-दर-चरण प्रक्रिया के बारे में भी जानत सकते हैं। आइए जानते हैं कि इस व्हाट्सएप चैटबॉट का आप कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं और इसका लोगों के क्या फायदा होगा?

व्हाट्सएप चैटबॉट कैसे एक्सेस करें?

व्हाट्सएप चैटबॉट का इस्तेमाल करने के लिए आपको अपने स्मार्टफोन में +918005441222 को सेव करना होगा और व्हाट्सएप पर जाकर hi लिखकर सेंड करें। इस तरह से आप इसे एक्सेस कर सकते हैं।

मैसेज भेजने के बाद, चैटबॉट आपसे लैंग्वेज यानी भाषा का चुनाव कपने के लिए कहेगा, जो इंलिश और हिंदी होगा। जिसमें आप बातचीत करने में कंफर्टेबल हो उसका चुनाव कर सकते हैं।

इसके बाद व्हाट्सएप चैटबॉट आपका स्वागत एक मैसे और मेनू के साथ करेगा, जिसमें आपको मदद की जरूरत है। इसमें आपको इविंग लाइसेंस, वाहन पंजीकरण, देखने और चालान के भुगतान, वाणिज्यिक वाहन परमिट, सड़क सुरक्षा, फेसलेस (ऑनलाइन) सेवाओं, उपयोगकर्ता की सुविधा और सुरक्षा के लिए सड़क से संबंधित सेवाओं के साथ-साथ परिवहन विभाग द्वारा सभी महत्वपूर्ण घोषणाओं के लिए एक और ऑप्शन के बारे में सेवाओं के लिए आप्शन शामिल है।

मेनू में आवश्यक सेवा ऑप्शन का चयन करने के बाद आपको केवल संकेतों का पालन करना होगा और आपको वह जानकारी PDF के रूप में शेयर की जाएगी।

जब आपको जानकारी मिल जाएगी, तो चैटबॉट आपको मुख्य या पिछले मेनू में लौटने का ऑप्शन देगा। आप अपनी जरूरत के हिसाब से ऑप्शन का चुनाव कर सकते हैं।

लोगों को क्या मिलेगा फायदा?

उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग का यह व्हाट्सएप चैटबॉट 24x7 लोगों के लिए उपलब्ध रहेगा। यह आपको छुट्टी वाले दिन भी सर्विस देगा। इसकी वजह से आपको बार-बार RTO के चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा। इसे साथ ही इस पर सभी आरटीओ सर्विस मिलने से लोगों को अपनी समस्या का सामाधान जल्दी से मिल जाएगा। इतना ही नहीं, इसके जरिए आप अपने जरूरी RTO कागजात को भी अपलोड कर सकते हैं, जिसकी वजह से आपको कागजात की फोटोकॉपी करने या उसकी ऑरिजनल कॉपी को आरटीओ लेकर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

समाज में बौद्धिक की भूमिका

विजय गर्ग

बौद्धिक एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी बुद्धिमत्ता और विश्लेषणात्मक सोच का उपयोग पेशेवर क्षमता में या व्यक्तिगत कारणों से करता है। इसका मतलब यह भी है कि मन के उपयोग के साथ जुड़ा हुआ है या इसकी आवश्यकता है। कई तरह के बुद्धिजीवी होते हैं, उनमें से कुछ अकादमिक विरोधी होते हैं जबकि कुछ विश्वविद्यालयों का हिस्सा होते हैं. कुछ कला, राजनीति, पत्रकारिता और शिक्षा में शामिल हैं। कुछ विशेष विशेषज्ञ और पेशेवर हैं और कुछ स्वतंत्र हैं। वे विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ प्राप्त करते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में बुद्धिजीवियों के उद्भव का पता फ्रांस में 'द ड्रीम्स अफेयर' में लगाया जा सकता है। बल्कि, यह अवधि सार्वजनिक जीवन में बौद्धिक के पूर्ण उद्भव के लिए उल्लेखनीय है। विशेष रूप से इस मामले पर सीधे बोलने में ,mile Zola, Octave Mirbeau और Anatole France की भूमिकाओं के साथ। बौद्धिक शब्द उस समय से बेहतर ज्ञात हो गया। फ्रेंच में संज्ञा के रूप में शब्द के उपयोग को 1898 में जॉर्जेस क्लेमेंसेउ के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है।

समाज में बौद्धिक की भूमिका किसी भी समाज में बुद्धिजीवियों की भूमिका वास्तव में इसके विकास के लिए महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। बुद्धिजीवी। इसका अंदाजा ऐतिहासिक नजरिए से लगाया जा सकता है। फ्रांसीसी क्रांति को उन लोगों द्वारा उकसाया गया था जिन्हें हम आज बुद्धिजीवियों, लेनिन के रूप में वर्गीकृत करेंगे और उनके अधिकांश साथी बुद्धिजीवी थे। बुद्धिजीवियों ने परिवर्तन और शांति के लिए उत्सुक असंतोष, मोहभंग और निराश पीढ़ियों के प्रतीक बनकर मध्य पूर्व में वैचारिक संदेशों के प्रसार में सहायता की। राजनीतिक दलों और पादरियों ने बुद्धिजीवियों को अपनी संगठनात्मक शक्ति और राजनीतिक नियंत्रण बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया। ऐतिहासिक रूप से आकलन करने का तरीका, किसी भी समाज पर बुद्धिजीवियों का प्रभाव उस समाज पर निर्भर करता है जिसमें वे काम कर रहे हैं: जहां नागरिक समाज कमजोर है, जहां गैर-अनुरूपता को देखा जाता है, जहां सहिष्णुता और बहुलता की कमी है, बुद्धिजीवियों को समाज को चलाने में मुश्किल होगी अधिक खुली राजनीतिक और नैतिक जलवायु की ओर। ईरानी समाज जहां इस्लाम राष्ट्रीय पहचान के निर्माण ब्लॉकों में से केवल एक है, महत्वपूर्ण बुद्धिजीवियों के लिए परिवर्तन और परिवर्तन के लिए तत्वों को वैध बनाने के लिए कई और विकल्प पेश करता है। जबकि यह कई अरब समाजों में एक ही मामला नहीं है, जहां इस्लाम है, एक तरह से या किसी अन्य अरब की विरासत से जुड़ा हुआ है और सच्ची महत्वपूर्ण सोच को रोक दिया गया है।

बौद्धिक खुद को समाज के भीतर एक विशेष गतिविधि करने के लिए समर्पित करता है जिसका अंत संस्कृति के अग्रिम के माध्यम से मानव जाति के नामांकन के बारे में लाना है। यह एक विद्वान का कर्तव्य है कि वह सत्य की खोज करने के लिए एक घृणित, वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाए, ज्ञान जो विशुद्ध रूप से तर्कसंगत सिद्धांतों से प्राप्त होता है, शांति और सुरक्षित भविष्य के लिए सार्वजनिक बहस में अपनी आवाज़ जोड़ें। नागरिक समाज के गठन और विकास में बुद्धिजीवी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बुद्धिजीवी लोकतंत्रीकरण, अधिनायकवादी शासन, तानाशाही, पश्चिमी उदारवाद, संवैधानिकता, राष्ट्रवाद, फासीवाद जैसी विचारधाराओं का भी यही आधार रहे हैं. बुद्धिजीवी आधुनिकता के सबसे महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय अभिनेता हैं। महत्वपूर्ण तर्कसंगतता और नागरिक स्वतंत्रता के लिए उनका संघर्ष उनकी आलोचना और वाद्य तर्कसंगतता और वर्चस्व की भावना से इनकार के साथ हाथ में जाता है। उनकी बेहतर बौद्धिक प्रतिभा और सकारात्मक जांच की तकनीकों में प्रशिक्षण ने उन्हें स्थानीय दृष्टिकोणों की संकीर्ण अवधारणाओं को पार करने और नीति निर्माण की प्रक्रिया को तर्कसंगत बनाने में सक्षम बनाया। नेतृत्व की स्थिति में, वे दोषरहित निष्कर्षों के आधार पर, पिछली पीढ़ियों की समस्याओं को हल करने और सामाजिक संगठन के बेहतर रूपों की स्थापना करते हैं। उन्होंने यह भी देखा कि जबकि आधुनिक समाज का पाठ्यक्रम वास्तव में अपने संगठन में अधिक तर्कसंगत बनने के लिए विकसित हुआ था, इस परिवर्तन ने व्यक्ति की अधिक स्वतंत्रता का पोषण नहीं किया, बल्कि नौकरशाही नियंत्रण के बढ़ते स्तर में योगदान दिया। इस प्रवृत्ति का एक परिणाम सामाजिक दुनिया में बढ़ती तर्कसंगतता थी, जहां मानवीय भावनाएं और विचार की पूर्व-आधुनिक आदतें प्रचलित थीं। सामंती युग की कई मान्यताएं और अंधविश्वास औद्योगिक समाज में लगातार पनपते रहे और इनमें राजनीतिक और आर्थिक विकास के पाठ्यक्रम को आकार दिया

एक शोधकर्ता के रूप में बौद्धिक की भूमिका शोधकर्ता एक वस्तुनिष्ठ विश्लेषण का पीछा करते हैं और अपने विषय की जांच करते हैं। बुद्धिजीवी एक धारणा के बारे में जागरूकता विकसित करना चाहते हैं और ऐसा करते हुए वे शोधकर्ता की भूमिका प्राप्त करते हैं। वे सामाजिक वैज्ञानिक अनुसंधान में लिप्त हैं। वे अपने स्वयं के सूचित दृष्टिकोण विकसित करने में विज्ञान और पिछली परंपराओं के सिद्धांतों को लागू करते हैं। उन्होंने यह भी पाया कि सामाजिक वैज्ञानिक कार्य सामाजिक दुनिया के नवीन विश्लेषणों को बढ़ावा दे सकता है। इन शोधकर्ताओं ने अपनी जिज्ञासाओं और विद्वानों के हितों के आधार पर अपनी जांच का आयोजन किया, ऐसा करते हुए उन्होंने कुछ तथ्यों का खुलासा किया है जो शोध नहीं होने पर चूक गए होंगे। सामाजिक दुनिया में उनकी व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि ने बड़े पैमाने पर अनुसंधान में सहायता की है। आधुनिक क्रम के तेजी से परिवर्तन के लिए चल रहे गुणात्मक रूप से अद्वितीय आकलन की आवश्यकता होती है। पुराने सूत्र स्थिर हो सकते हैं और नए विकास को समझाने की अपनी क्षमता खो सकते हैं। इस संदर्भ में बौद्धिक की भूमिका वर्तमान तक आने वाले रुझानों के संबंध में दुनिया की रचनात्मक व्याख्याओं को तैयार करना है। विचार जो सामाजिक विचार की मुख्यधारा के अनुरूप नहीं हैं, वे वैकल्पिक दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने में रुचि रखने वाले दूसरों की सोच में योगदान कर सकते हैं। समकालीन सामाजिक अनुसंधान, चाहे वह राजनीतिक या वैज्ञानिक किस्म का हो, अंततः दूरगामी परिणाम हो सकते हैं और नैतिकता के इन दो सेटों के ढांचे के भीतर काम करने वाले बुद्धिजीवी आधुनिक सामाजिक व्यवस्था के भविष्य के निर्देशों को आकार देने में प्रभावशाली हो सकते हैं।

एक राजनीतिक सलाहकार के रूप में बौद्धिक की भूमिका बौद्धिक भागीदारी एक राजनीतिक नेतृत्व का एक महत्वपूर्ण घटक है। राजनीतिक नेताओं को सलाह देने की आधिकारिक क्षमता में काम करने वाले बुद्धिजीवी राजनीतिक नेताओं को विश्लेषण प्रदान करते हैं जो तब अपने स्वयं के विश्वासों और जिम्मेदारी की भावना के आधार पर निर्णय लेते हैं। जिस ज्ञान पर निर्णय लिए जा सकते हैं, उसके विस्तार में बुद्धिजीवी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे राजनीतिक क्षेत्र में अपने ज्ञान का उपयोग करते हैं जो आगे व्यावहारिक नीति विकल्पों में अनुवादित हो जाता है। अनुसंधान और राजनीति दोनों में हाथ होने के कारण, राजनीतिक बौद्धिक सामाजिक वैज्ञानिक जांच और नीति-निर्माण के बीच महत्वपूर्ण संबंध प्रदान कर सकता है। उनका काम बड़ी समस्याओं को प्रकट करना और यह सुझाव देना है कि यह उपाय है। चूंकि नीतियां जनता के लिए बनाई जानी हैं, इसलिए बौद्धिक तरीके प्रस्तावित किए जा रहे कार्यों से लोगों के जीवन को बदलने के तरीकों में एक मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। सलाहकार की जिम्मेदारी नेताओं का ध्यान उन कार्यों के दीर्घकालिक परिणामों की ओर आकर्षित करना और उनके सुझाव प्रदान करना भी है। राजनीतिक बुद्धिजीवियों की अनुपस्थिति में, नीति गठन नौकरशाही उन्मुख प्रबंधकों के हाथों में आता रहेगा।

एक शिक्षक के रूप में बौद्धिक की भूमिका औद्योगिक-तकनीकी समाज में, वे जनमत को प्रभावित करते हैं और सामाजिक दुनिया के आकलन प्रदान करते हैं जो ज्ञानवर्धक हैं। शिक्षकों के रूप में उनका उद्देश्य समकालीन दुनिया की व्याख्याओं की पेशकश करना है जो प्रबुद्ध तरीके से मामलों में भाग लेने के लिए खराब सूचित व्यक्तियों की क्षमता को बढ़ाता है। इस तरह के बौद्धिक का एक और लक्ष्य अपने शिष्यों को कक्षा में और विद्वानों की बातचीत के स्तर पर गंभीर रूप से सोचना सिखाना है। उनकी शिक्षा जनता के नैतिक फाइबर को मजबूत करने और सकारात्मक जांच के निष्कर्षों में आधुनिकता की नैतिकता को बढ़ाने की पेशकश करती है। वे किसी दी गई संस्कृति की विभिन्न नैतिकता की जांच करते हैं, उनका आकलन करते हैं, और उनकी आलोचना विकसित करते हैं और ऐसा करते हुए वे एक व्यवस्थित जांच को प्रेरित करते हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार
प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद
एमएचआर मलोट पंजाब

युद्ध काल में लक्ष्मणरेखा लांघता विपक्ष

मृत्युंजय दीक्षित

विगत एक माह के इस समस्त घटनाक्रम के दौरान कांग्रेस पार्टी व इंडी गठबंधन के नेता यह बयान तो देते रहे कि वे आतंकवाद के खिलाफ सरकार जो भी रणनीति अपनाएगी उसके साथ पूरी तरह से एकजुट होकर खड़े रहेंगे किन्तु उनकी करनी उनकी इस कथनी के एकदम विपरीत है।

पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को हुए क्रूर आतंकी हमले की सूचना मिलते ही गृह मंत्री अमित शाह कश्मीर पहुंच गए, प्रधानमंत्री मोदी विदेश दौरा बीच में ही रोक कर वापस आए, एअरपोर्ट पर ही सम्बंधित अधिकारियों के साथ बैठक की, और अगले ही दिन आतंकियों और उनके पीछे पीछे शत्रुओं को ऐसा दंड देने की घोषणा की जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी। इसके बाद सरकार के सभी अंग अपने अपने काम पर लग गए और विपक्ष सरकार का उपहास उड़ाने में। सरकार ने पहले बड़े कूटनीतिक निर्णय लेते हुए सिन्धु जल समझौते को स्थगित किया फिर पूरी तैयारी के साथ ऑपरेशन सिन्दूर लांच हुआ, जिसके अंतर्गत पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर तथा पाकिस्तान में नौ आतंकी ठिकाने नष्ट किये गए जिनमें सौ से अधिक आतंकवादी मारे गए। भारत ने पाकिस्तान के किसी सैन्य ठिकाने या नागरिक क्षेत्र को निशाना नहीं बनाया और स्पष्ट किया कि उसकी कार्यवाई केवल आतंक के विरुद्ध है किन्तु पाकिस्तानी सेना फिर भी बीच में कूद पड़ी और भारत के सैन्य तथा नागरिक क्षेत्र को निशाना बनाकर हमले किए। भारत के पलटवार के बाद पाकिस्तान में तबाही का मंजर देखा गया और फिर अचानक सीज़ फायर हो गया। इसके पश्चात प्रधानमंत्री ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए स्पष्ट किया कि यह युद्ध विराम नहीं मात्र स्थगन है, ऑपरेशन सिन्दूर जारी है। वर्तमान में भारत के सर्वदलीय सांसद समूह विश्व के अलग अलग देशों में भारत का पक्ष रखने पहुंचे हुए हैं।

विगत एक माह के इस समस्त घटनाक्रम के दौरान कांग्रेस पार्टी व इंडी गठबंधन के नेता यह बयान तो देते रहे कि वे आतंकवाद के खिलाफ सरकार जो भी रणनीति अपनाएगी उसके साथ पूरी तरह से एकजुट होकर खड़े रहेंगे किन्तु उनकी करनी उनकी इस कथनी के एकदम विपरीत है। ऑपरेशन सिन्दूर लांच होने से पूर्व, सीज फायर की घोषणा और फिर संसदीय दलों की सूची बनने तक राहुल गांधी के नेतृत्व में इंडी गठबंधन के नेता जिस प्रकार की बयानबाजी, प्रदर्शन और सोशल मीडिया पोस्ट कर रहे हैं कर रहे हैं उससे यह स्पष्ट हो गया है कि वास्तव में इन दलों द्वारा आपदकाल में एकजुट रहने की बात करना एक कोरा दिखावा मात्र है।

कांग्रेस ने सबसे पहले प्रधानमंत्री मोदी की बिना सिर की तस्वीर सोशल मीडिया पर जारी की और उसके ऊपर गायब लिखा, सोशल मीडिया पर हुए भारी विरोध के बाद भी कांग्रेस की सोशल मीडिया प्रकोष्ठ की हेड उसका बचाव करती रहीं लेकिन बाद में मजबूरन उनको वह पोस्ट हटाना पड़ा। इसके बाद कांग्रेस के उत्तर प्रदेश अध्यक्ष ने राफेल का उपहास उड़ाया। कुछ विरोधियों ने तो दो कदम आगे बढ़कर इसे चुनावी स्टंट तक बता दिया। ये लोग लगातार प्रधानमंत्री के मीम सोशल मीडिया पर डालते रहे।

विमर्श बदलने और अपने वोट बैंक को खुश करने के लिए इन्होने पहलगाम की घटना को हल्का करने और इस सत्य पर चूना पोतने का प्रयास किया कि आतंकवादियों ने धर्म पूछकर केवल हिन्दू पुरुषों को मारा। मीडिया बहसों के दौरान किसी भी विरोधी दल के प्रवक्ता ने यह नहीं कहा कि पहलगाम में आतंकियों ने पर्यटकों से उनका धर्म पूछकर मारा है अपितु वह सभी लोग यही कहते रहे कि आतंकवादियों ने कुछ निर्दोष लोगों को मार दिया। साथ ही मुस्लिम परस्त विरोधी दलों के नेता लगातार ये कहने लगे कि किसी एक के आतंकवादी होने से पूरी कौम

को आतंकी नहीं कह सकते जबकि उस समय यह विषय ही चर्चा करने का नहीं था।

ऑपरेशन सिंदूर स्थगन के बाद से राहुल गांधी व इंडी गठबंधन के नेता व प्रवक्ता सरकार के विरोध की लक्ष्मण रेखा लांघ कर उसे राष्ट्र विरोध में बदल रहे है। राहुल गांधी, इंडी गठबंधन व उनके प्रवक्ता मीडिया के सामने जो प्रश्न कर रहे हैं वो पाकिस्तान व आतंकवादियों के लिए कवर फायर देने वाले हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे व उत्तर प्रदेश के स्वामी प्रसाद मौर्य जैसे लोगों को ऑपरेशन सिंदूर एक छुटपुट घटना लग रही है। इन लोगों के अनुसार यह ऑपरेशन 24 घंटे में ही फुस्स हो गया। कांगेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का पाकिस्तान प्रेम तो अद्भुत ही उनका कहना है कि “अपने पाकिस्तान“ से युद्ध चल रहा है।

राहुल गांधी व इंडी गठबंधन ने आज तक ऑपरेशन सिंदूर की प्रशंसा नहीं की है अपितु वह पूछ रहे हैं कि इस ऑपरेशन में हमने कितने पायलट खो दिये हैं, हमारे कितने विमान नष्ट हुए। कांग्रेस प्रवक्ता दो हाथ आगे जाकर ऑपरेशन सिंदूर को सौदा बता रहे हैं। विपक्ष उसी तरह से बौखलाया दिख रहा है जिस तरह से पाकिस्तान।

अब जबकि अभी ऑपरेशन सिंदूर का एक छोटा सा चक्र ही पूरा हुआ है राहुल गांधी और अन्य विपक्ष विदेश मंत्री के बयान को तोड़ मरोड़ कर उनके पीछे पड़ गया है और उनके इस्तीफे की मांग कर रहा हैं, सुनियोजित तरीके से सीजफायर के मामले पर अमेरिकी दबाव के आगे झुकने का झूठ फैला रहा है। जब अमेरिका ने पाकिस्तान में ओसामा बिन लादेन के ठिकाने पर हमला किया था तब अमेरिका ने भी पाकिस्तान को पूर्व में ही सूचित कर दिया था यह एक अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का अहम हिस्सा है और भारत ने भी उसी नियम का पालन किया है किंतु पता नही क्यों राहुल गांधी को इस पर भी राजनीति करनी है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर विदेश मामलों के विशेषज्ञ हैं, कांग्रेस पार्टी के प्रवक्ता उनको “मुखबिर“ कह रहे हैं।

राहुल गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी उरी से लेकर पुलवामा और पहलगाम तक हर घटना पर संदेह व्यक्त किया है और कभी भी पाकिस्तान व आतंकवाद के खिलाफ नहीं बोली। इतना ही नहीं इन्होने पुलवामा के बाद हुई एयर स्ट्राइक का सबूत भी माँगा। वर्तमान कांग्रेस पार्टी पूरी तरह से अर्बन नक्सलियों के शिकंजे में जा चुकी है। आज वो लोग सरकार व सेना पर सवाल उठा रहे हैं जिनकी मुस्लिम तुष्टिकरण नीति के कारण आज आतंकवाद व आतंकवादी नासूर बन गये हैं। वो लोग सवाल उठा रहे हैं जिनके रहते कश्मीर घाटी में हिन्दुओं के साथ 1980- 90 के दशकों में खून की होली खेली गई और कश्मीर घाटी हिन्दुओं से विहीन कर दी गई। इन सभी दलों को 2004से 2014 तक का काला दौर याद रखना चाहिए जब देश का कोई भी कोना आतंकवादी हमलों से नहीं बच पा रहा था किंतु आज स्थित एकदम उलट गई है। कांग्रेस के मूर्धन्य लोगों को यह बताना ही होगा कि इन लोगों ने मुंबई बम धमाकों के बाद क्या किया था ?

राहुल गांधी की बयानबाजी से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह पाकिस्तान और चीन के लिए जासूसी कर रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर से घायल पाकिस्तान ये जानना चाहता है कि ऑपरेशन सिंदूर से हमें तो नुकसान हुआ किंतु क्या भारत को भी नुकसान हुआ यदि हाँ तो कितना ? अब राहुल गाँधी इसी काम में लगे हैं। यदि राहुल गांधी को सेना पर भी विश्वास होता तो इन्होने डीजीएमओ की प्रेस वार्ताएं सुनी होतीं जिनमें भारतीय पक्ष को विस्तार से समझाया गया था किन्तु निजी स्वार्थ की राजनीति सेकरने वाले इन लोगों को मुस्लिम वोट बैंक के आगे कुछ और दिखाई नहीं देता। राहुल गांधी भारत में विपक्ष के नेता हैं और वह जो भी बोलते हैं उसे पाकिस्तान में अवश्य सुना जाता है।

राहुल गांधी व कांग्रेस पार्टी इनती विचार शून्य हो चुकी है कि इसने भारत सरकार का पक्ष उचित रूप से रखने पर अपने ही नेता शशि थरूर का अपमान करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। केंद्र सरकार द्वारा उन्हें सर्वदलीय प्रतिनिधमंडल में शामिल किये जाने पर कांग्रेस ने अपने योग्य, विदेश मामलों के जानकार तथा अनुभवी सांसद को लेकर ही बवाल मचा दिया। इस पूरे घटनाक्रम से यह बात स्पष्ट हो गई है जल्दी ही कांग्रेस दो भागों में विभाजित दिखाई देगी जिसमें जिसमे एक गुट देशहित में सोचने वाले नेताओं का होगा और दूसरा डीप स्टेट समर्थित राहुल गाँधी परिवार का।

कागज-पत्तर ढीले और पहुंच का रुतबा

विजय गर्ग

अपने यहां ऐसे भी दीवाने हैं जो कलाई पर घड़ी नहीं हेलमेट बांधते हैं। भारत में ट्रैफिक नियम उस प्रेमिका की तरह हैं जिनसे सब वादा करते हैं पर निभाता कोई नहीं। ट्रैफिक सिग्नल उस बुजुर्ग की तरह होता है जिसे सब सम्मान से देखते हैं, पर जिसकी मानता कोई नहीं। यहां सड़कों पर सबसे विश्वसनीय सहारा न तो हेलमेट है, न सीट बेल्ट, न ही गाड़ी के कागज और न ही ड्राइविंग लाइसेंस। सबसे कारगर सुरक्षा कवच है- मोबाइल। एक बार अपने प्रभावशाली चाचा-मामा का मोबाइल मिलाकर ट्रैफिक पुलसिये को दे दो, बस सारी सिट्टीपिट्टी गुम हो जायेगी। ये फोन कॉल एक ऐसा महामंत्र है जिसे उच्चकोटि की भारतीय चालकों की आत्मा में संस्कार स्वरूप डाल दिया जाता है। बच्चा जब साइकिल छोड़ स्कूटी पर चढ़ता है तो मां कहती है- बेटा ! ध्यान से चलाना और पिता कान में फुसफुसाते हैं कि कुछ हो जाये तो चाचा को फोन कर लेना।

भारत में अधिकांश गाड़ियां दो इंजन से चलती हैं- एक पेट्रोल या डीजल इंजन और दूसरा प्रभावशाली कनेक्शन इंजन। आम आदमी बेचारा कितना दयनीय प्राणी है ! जिसके पास न तो विधायक या पार्षद चाचा-ताऊ का नंबर है, न अपने किसी परिचित उच्चाधिकारी का। ट्रैफिक पुलिस जब रुकवाती है तो चालक जेब से न तो ड्राइविंग लाइसेंस निकालता है, न आरसी या इंश्योरेंस। सबसे पहले वह मोबाइल निकालता है और तेजी से उंगलियां घुमाते हुए अपने परिचित का ताकतवर नाम ढूंढ़ कर कॉल मिलाता है। किसी पॉवरफुल आदमी से पहचान सचमुच अदृश्य बीमा है। ये अदृश्य बीमे हर नियम को सिर के ऊपर से कुदवा देते हैं।

देश सड़क पर नहीं बिगड़ता, देश उस मोबाइल कॉल से बिगड़ता है जिसमें कोई ड्राइवर गरजता है कि लो, बात करो मेरे विधायक चाचा से। जहां संबंधों से देश चलता हो, वहां कानून-कायदे मात्र एक बुकलेट बनकर रह जाते हैं और ट्रैफिक पुलिस एक कन्फ्यूज्ड किरदार या यूं कहें कि किसी हिंदी सीरियल का जूनियर आर्टिस्ट बनकर रह जाती है। जब तक गाड़ियों में दस्तावेज़ कम और परिचय-पत्र ज्यादा मिलेंगे, तब तक सड़कें असुरक्षित रहेंगी और कानून हाशिये पर। यह देश तब बदलेगा जब 'कौन जानता है' कि जगह 'क्या सही है' पूछा जायेगा। अन्यथा आगे चालान कट रहे हैं पता चलते ही राहें पलटती रहेंगी और सिफारिशें चालान काटने वालों को चुप करवाती रहेगी

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

अफसरों को जेल की सजा से रुक सकेंगे जहरीली शराब जैसे हादसे

योगेंद्र योगी

मध्य प्रदेश (410) और कर्नाटक (218) में सबसे ज़्यादा मौत के मामले सामने आए। वर्ष 2019 में 1,141 घटनाओं में 1,296 मौतें हुईं। इनमें मध्य प्रदेश (410) और कर्नाटक (268) लोगों की मौत हुई। वर्ष 2020 में 931 घटनाओं में 947 लोगों की जान गई।

भारत में आम लोगों के जीवन की कोई कीमत नहीं है। सरकारों का काम सिर्फ टैक्स वसूलना रह गया है, जब जिम्मेदारी लेने के वक्त आता है तो सब एक-दूसरे को दोषी ठहरा कर पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं। इससे भी ज्यादा आश्चर्य यह है कि सरकारें पिछली गलतियों से भी कोई सबक नहीं सीखती हैं। साथ ही गलतियों के लिए जिम्मेदार अफसरों पर ऐसी कोई कार्रवाई नहीं होती, जिससे दूसरे लोग इससे सबक सीख सकें। महज कागजी खानापूर्ति करने के लिए कार्रवाई करने के बाद अफसर वापस मलाईदार पोस्टिंग पाने में कामयाब हो जाते हैं। पंजाब के अमृतसर के कई गांव में जहरीली शराब पीने से करीब दो दर्जन लोगों की मौत भी ऐसी ही गैरजिम्मेदाराना प्रवृत्ति का परिणाम है। इस मामले में मुख्य आरोपी प्रभजीत सिंह को गिरफ्तार किया गया। आबकारी विभाग के दो अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया है। सबसे बड़ा सवाल यही है कि इतने लोगों की मौत के बाद अधिकारियों को सिर्फ निलंबित किया गया है। दरअसल कानून में ऐसा कोई प्रावधान ही नहीं है कि अफसरों की लापरवाही से होने वाली मौतों के लिए उन्हें भी अपराधियों की तरह सजा होगी। केंद्र सरकार ने आपराधिक कानून का नाम बदल दिया। इसमें कई तरह के संशोधन किए गए। किन्तु नौकरशाहों को जिम्मेदार बनाने के लिए सजा का प्रावधान नहीं किया गया। यही वजह है कि जहरीली शराब पीने से होने वाले हादसे हो या इसी तरह के दूसरे हादसों में जिम्मेदार अधिकारियों को आपराधिक मामलों की तरह जेल की सजा नहीं होती। पांच साल पहले पंजाब में तरनतारन, अमृतसर और गुरदासपुर जिलों में एक बड़ी शराब त्रासदी हुई थी।

जुलाई और अगस्त 2020 में माझा क्षेत्र के तीन जिलों तरनतारन, गुरदासपुर और अमृतसर में नकली शराब पीने से लगभग 130 लोगों की मौत हो गई थी। लगभग एक दर्जन लोगों की आंखों की रोशनी चली गई थी। अकेले तरनतारन जिले में लगभग 80 मौतें हुई थीं। 19 मार्च 2024 को पंजाब के ही संगरूर जिले में नकली शराब पीने से 21 हो गई थी, जबकि 40 से अधिक लोग गंभीर रूप से बीमार हुए। ये पहला मौका नहीं है जब देश के किसी राज्य में जहरीली शराब पीने से लोगों की मौत हुई हो। वर्ष 2014 में अवैध शराब के सेवन से 1,699 मौतें हुईं। वर्ष 2015 में 1,624 घटनाओं में 1,522 लोगों की जान गई। महाराष्ट्र (278), पुडुचेरी (149) और मध्य प्रदेश (246) में सबसे ज़्यादा मौतें हुईं। वर्ष 2016 में 1,073 घटनाओं में 1,054 मौतें दर्ज की गईं। इस वर्ष मध्य प्रदेश (184) और हरियाणा (169) में सबसे ज़्यादा लोगों ने अपनी जान गंवाई। इसी तरह वर्ष 2017 में 1,497 घटनाओं में 1,510 मौतें हुईं। इनमें कर्नाटक (256), मध्य प्रदेश (216) और आंध्र प्रदेश (183) में हालात गंभीर रहे। वर्ष 201८ में 1,346 घटनाओं में 1,365 लोगों की जान गई।

मध्य प्रदेश (410) और कर्नाटक (218) में सबसे ज़्यादा मौत के मामले सामने आए। वर्ष 2019 में 1,141 घटनाओं में 1,296 मौतें हुईं। इनमें मध्य प्रदेश (410) और कर्नाटक (268) लोगों की मौत हुई। वर्ष 2020 में 931 घटनाओं में 947 लोगों की जान गई। मध्य प्रदेश (214) और झारखंड (139) में सबसे ज़्यादा मौतें हुईं। वर्ष 2021 में 708 घटनाओं में 782 मौतें हुईं और वर्ष 2022 में 507 घटनाओं में 617 मौतें हुईं। इनमें बिहार (134) और कर्नाटक (98) में अवैध शराब का कहर जारी रहा। वर्ष 1992 ओडिशा के कटक में जहरीली शराब पीने से 200 से अधिक लोगों की मौत हुई जबकि 600 अन्य लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जो दशकों में भारत में इस तरह की सबसे बड़ी घटना थी। वर्ष 1981 में कर्नाटक के बेंगलुरु में सबसे भयानक हादसा हुआ। बेंगलुरु में मिथाइल अल्कोहल विषाक्तता के कारण 308 लोगों की मौत हो गई। यह सस्ती शराब में मिलावट के कारण हुआ था। अवैध या जहरीली शराब सिर्फ बिहार या पंजाब की समस्या नहीं है। देश के लगभग सभी राज्यों में अवैध शराब का कारोबार धड़ल्ले से चलता है। हर साल लाखों लीटर अवैध शराब जब्त भी होती है। लेकिन इस पर पूरी तरह से रोक नहीं लग पा रही। बिहार ही नहीं, बल्कि गुजरात, मिजोरम, नागालैंड और लक्षद्वीप में भी पूरी तरह से शराबबंदी है। इसके बावजूद यहां जहरीली शराब से मौतें होती रहती हैं।

गुजरात पहला राज्य था, जिसने शराब पर प्रतिबंध लगाया था। फिर भी राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि 6 साल में जहरीली या अवैध शराब पीने से राज्य में 54 लोगों की मौत हो चुकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि भारत में हर साल शराब की जितनी खपत होती है, उसमें से 50 फीसदी अवैध तरीके से बनती और बिकती है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में हर साल पांच अरब लीटर शराब पी जाती है। इसमें 40 फीसदी से ज्यादा अवैध तरीके से बनाई जाती है और ये सस्ती होती है। ग्रामीण इलाकों में देसी शराब ज्यादा पी जाती है। बिहार सरकार के आंकड़े बताते हैं कि शराबबंदी कानून तोडऩे के मामले में 6.71 लाख से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया गया है। देश के कुछ राज्यों में शराबबंदी लागू है और कुछ ऐसे भी हैं जहां पहले शराबबंदी थी लेकिन बाद में इसे हटा लिया गया। हरियाणा में 1996 में शराबबंदी लागू की गई थी, लेकिन दो साल बाद ही 1998 में इसे हटा लिया गया। आंध्र प्रदेश में 1995 में शराब पर प्रतिबंध लगा लेकिन 1997 में सरकार ने इसे वापस ले लिया। मणिपुर में भी 1991 से शराबबंदी लागू है और सरकार ने इसमें थोड़ी छूट देने का फैसला लिया। ऐसा इसलिए ताकि सरकारी खजाना भर सके। मणिपुर सरकार को शराबबंदी के कानून में थोड़ी छूट देने से 600 करोड़ रुपये का रेवेन्यू मिलने का अनुमान है।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक देश के ज्यादातर राज्यों के टैक्स रेवेन्यू में 10 से 15 फीसदी हिस्सेदारी शराब से मिलने वाले टैक्स की है। उत्तर प्रदेश और कर्नाटक जैसे राज्यों के टैक्स रेवेन्यू में तो 20 फीसदी से ज्यादा हिस्सेदारी शराब की है। अवैध और जहरीली शराब से होने वाली मौतों के आंकड़ों से जाहिर है कि देश में ऐसा एक भी साल नहीं गया, जब ऐसे हादसों में लोगों की जानें नहीं गई हों। मतलब जहरीली शराब से होने वाली मौतें देश में स्थाई लाइलाज समस्या बन गई हैं।

केंद्र हो या राज्यों की सरकारें की जांच एजेंसिंया ऐसा हादसा होने के बाद सक्रिय होती हैं। सरकारें मृतक आश्रितों को चंद रूपयों का मुआवजा और कुछ आरोपियों की गिरफ्तारी कर असली जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेती हैं। ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति के बावजूद राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों में ऐसी समस्याएं स्थान नहीं पाती हैं। दरअसल राजनीतिक दलों की एजेंडे में ऐसी मौतों के लिए कोई स्थान नहीं है।

ऐसा इसलिए भी है कि ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति नहीं होने देने की गारंटी से वोट बैंक मजबूत नहीं होता। यही वजह है कि हर साल किसी न किसी राज्य से जहरीली शराब से होने वाली मौतों की पुनरावृत्ति जारी है। आगे भी इस सिलसिले के थमने के आसार नजर नहीं आते। राज्यों में सिर्फ विपक्षी दल शोर-शराबा करता है, किन्तु सत्ता में आने पर ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए किसी के पास कोई नीति नहीं होती। ऐसी मौतों का सिलसिला तब तक जारी रहेगा, जब तक मौतों के लिए जिम्मेदार अफसरों के लिए कानून में जेल भेजे जाने का प्रावधान नहीं होगा।

संवाद ही नक्सलवाद का स्थाई समाधान है !

देश से माओवाद(नक्सलवाद) लगातार समाप्ति की ओर है, यह काबिले-तारीफ है। मीडिया रिपोर्ट्स बतातीं हैं कि छत्तीसगढ़ के बस्तर में सुरक्षाबलों ने बुधवार 21 मई को 27 माओवादियों को मार गिराया है। दरअसल, बस्तर संभाग के नारायणपुर, बीजापुर और दंतेवाड़ा ज़िलों की सीमा पर मुठभेड़(एनकाउंटर) में ये माओवादी मारे गए हैं। इस संदर्भ में हमारे देश के गृहमंत्री ने अपनी एक एक्स(ट्विटर) पर पोस्ट में यह लिखा है कि ' नक्सलवाद को ख़त्म करने की लड़ाई में एक ऐतिहासिक उपलब्धि। आज, छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में एक ऑपरेशन में हमारे सुरक्षा बलों ने 27 खूंखार माओवादियों को मारा है, जिनमें सीपीआई-माओवादी के महासचिव, शीर्ष नेता और नक्सल आंदोलन की रीढ़ नंबाला केशव राव उर्फ़ बसवराजू भी शामिल हैं।' उन्होंने आगे लिखा है कि- 'नक्सलवाद के ख़िलाफ़ भारत की लड़ाई के तीन दशकों में ऐसा पहली बार है कि हमारे बलों ने एक महासचिव स्तर के नेता को मारा है. मैं इस बड़ी सफलता के लिए हमारे बहादुर सुरक्षा बलों और एजेंसियों की सराहना करता हूँ।' यह काबिले-तारीफ है कि ऑपरेशन 'ब्लैक फॉरेस्ट' के पूरा होने के बाद, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और महाराष्ट्र में 54 नक्सलियों को गिरफ़्तार किया गया है और 84 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है। यह दर्शाता है कि आज देश से माओवाद व माओवादी अंतिम चरण में हैं। पाठकों को बताता चलूं कि नक्सलवाद की शुरुआत 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी गाँव में हुई थी, जहां भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के कुछ सदस्यों ने जमींदारों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष शुरू किया था और इस आंदोलन में ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब किसानों और आदिवासियों का समर्थन था।

नक्सलवादी यह मानते हैं कि भारत में कृषि श्रमिकों और भूस्वामियों के बीच वर्ग संघर्ष है, और साम्यवाद ही इस संघर्ष का सही समाधान है। नक्सली भूमि सुधारों या यूं कहें कि वे जमींदारों से भूमि को वापस लेकर गरीबों और किसानों में वितरित करने की मांग करते रहे हैं। उनकी यह सोच है कि सरकार के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष से ही वे देश और समाज में एक क्रांति ला सकते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि वे आदिवासी लोगों के अधिकारों का समर्थन करते हैं और उन्हें भूमि और विभिन्न संसाधनों पर नियंत्रण दिलाने की मांग करते हैं।

बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज सरकार नक्सलवाद के खात्मे के लिए लगातार कदम उठा रही है। सरकार नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्रों में शांति स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध और कृतसंकल्पित है तथा सरकार ने नक्सलियों को समाज की मुख्यधारा में लौटने के लिए अनेक प्रयास किए हैं। पाठकों को बताता चलूं कि हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बहुत पहले यह बात कही थी कि -'यह सच है कि माओवादी हिंसा ने मध्य और पूर्वी भारत के कई जिलों की प्रगति को रोक दिया था। इसीलिए 2015 में हमारी सरकार ने माओवादी हिंसा को खत्म करने के लिए एक व्यापक 'राष्ट्रीय नीति और कार्य योजना' तैयार की। हिंसा के प्रति शून्य सहिष्णुता के साथ-साथ, हमने इन क्षेत्रों में गरीब लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए बुनियादी ढांचे और सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने पर भी ध्यान केन्द्रित किया है।' आज वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई) या यूं कहें कि नक्सलवाद भारत की सबसे गंभीर आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों में से एक है।भारत सरकार 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद को पूरी तरह से खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध है, क्योंकि नक्सलवाद को दूरदराज के इलाकों और आदिवासी गांवों के विकास में सबसे बड़ी बाधा है, क्योंकि यह शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कनेक्टिविटी, बैंकिंग और डाक सेवाओं को इन गांवों तक पहुँचने से रोकता है। बहरहाल, अच्छी बात यह है कि पिछले 10 वर्षों में, 8,000 से अधिक नक्सलियों ने हिंसा का रास्ता छोड़ दिया है, और परिणामस्वरूप, नक्सल प्रभावित जिलों की संख्या 20 से भी कम हो गई है। आंकड़े बताते हैं कि वामपंथी उग्रवाद की हिंसा की घटनाएं जो 2010 में अपने उच्चतम स्तर 1936 पर पहुंच गई थीं, 2024 में घटकर 374 रह गई हैं, यानी इसमें 81 प्रतिशत की कमी आई है। परंतु इसी बीच विशेषज्ञों का यह दावा है कि वर्तमान में माओवाद को खात्मे के रूप में देखना एक जल्दबाजी ही है। यह ठीक है कि आज केंद्र सरकार छत्तीसगढ़, बिहार, तेलंगाना से लेकर महाराष्ट्र तक नक्सलियों का सफाया करने के लिए पूरी तरह से अपनी कमर कस चुकी है और बीते दस-पंद्रह महीनों में माओवादियों के खिलाफ चल रहे सघन ऑपरेशन में चार सौ से ज्यादा संदिग्ध नक्सलियों के मारे जाने का भी दावा किया जा रहा है। माओवादियों के अनेक ठिकानों को आज नष्ट किया जा चुका है और समय-समय पर हथियार, गोला-बारूद की बरामदगी भी की गई है। पिछले कुछ समय से नक्सलियों को मिलने वाली आर्थिक मदद पर भी अंकुश लगा है। इतना ही नहीं नक्सली अब धीरे-धीरे समाज की मुख्यधारा में लौटने लगे हैं तथा नौजवानों का नक्सलवाद के प्रति आकर्षण भी तेजी से कमजोर पड़ा है, लेकिन नक्सलवाद को पूरी तरह से खत्म करने के लिए उनके साथ संवाद स्थापित करना बहुत आवश्यक है। आज जरूरत इस बात की है नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं को प्राथमिकता देकर विकास को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इतना ही नहीं, जनजातीय/आदिवासी समुदायों के अधिकारों की रक्षा करना और उनके साथ शांति-संवाद स्थापित करना बहुत ही आवश्यक व जरूरी है। इसके साथ ही, सुरक्षा बलों को सुदृढ़ करते हुए मानवीय दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। वास्तव में, सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर, शिक्षा, और बेहतर जीवन स्थितियां उपलब्ध कराई जाएं। इसके साथ ही नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में रोजगार की पर्याप्त व्यवस्थाएं की जाएं तथा भ्रष्टाचार पर नियंत्रण स्थापित कर समाज से सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को दूर करने के लिए प्रयास किए जाएं।पुनर्वास, भूमि सुधार और सामूहिक प्रयास तो आवश्यक हैं ही। ग़रीबी और भुखमरी का उन्मूलन हो।नक्सलियों को मिलने वाली स्थानीय मदद पर ठोस कार्रवाई की जाएं और इस पर अंकुश लगाया जाए। वास्तव में जनता की जागरूकता से ही नक्सलवाद का पूरी तरह से सफ़ाया संभव हो सकता है। गोली नक्सलवाद का हल नहीं है, संवाद ही नक्सलवाद का असली हल है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

दक्षिण अफ्रीका की गरिमा बनाम अमेरिका की आक्रामकता

व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस में जब दो राष्ट्राध्यक्ष आमने-सामने बैठे, तो वह क्षण केवल एक कूटनीतिक मुलाकात नहीं था - यह वैश्विक मंच पर उभरते तनाव, ध्रुवीकरण और सत्ता के खेल का एक सशक्त चित्र था। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा के बीच यह टकराव न केवल दो व्यक्तित्वों की भिड़ंत थी, बल्कि यह आज की दुनिया में कूटनीति के बदलते स्वरूप, तथ्यों की अनदेखी और भावनात्मक उकसावे की बढ़ती प्रवृत्ति का प्रतीक बन गया। यह घटना एक चेतावनी थी—वैश्विक नेतृत्व अब संयम और समझदारी की राह छोड़कर सनसनीखेज आरोपों और राजनीतिक हथकंडों की ओर बढ़ रहा है।

ट्रंप ने जिस आक्रामकता के साथ दक्षिण अफ्रीका में श्वेत किसानों पर कथित अत्याचार और नरसंहार का मुद्दा उठाया, वह राजनयिक शिष्टाचार को तार-तार करने वाला था। कुछ चुनिंदा वीडियो फुटेज, जिनकी न तो कोई आधिकारिक पुष्टि थी और न ही गहन जांच, ट्रंप ने रामाफोसा के सामने रखे और सख्त लहजे में घोषणा की कि अमेरिका इस मामले को गंभीरता से ले रहा है। यह जल्दबाजी भरा कदम स्पष्ट रूप से उनके घरेलू वोटबैंक को उत्तेजित करने की रणनीति का हिस्सा था। अमेरिका में नस्लीय तनाव पहले से ही चरम पर है, और ट्रंप ने इस अंतरराष्ट्रीय मुद्दे को उठाकर अपनी राजनीतिक जमीन मजबूत करने की कोशिश की। यह उनके उस पुराने पैटर्न का हिस्सा था, जिसमें वे वैश्विक मंच को अपने राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

इसके विपरीत, सिरिल रामाफोसा ने संयम और तथ्यों के साथ जवाब दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि दक्षिण अफ्रीका में हिंसा का शिकार केवल श्वेत किसान नहीं, बल्कि अश्वेत समुदाय भी उतना ही प्रभावित है। रामाफोसा ने तर्क दिया कि अगर श्वेतों का नरसंहार जैसी स्थिति होती, तो देश के प्रमुख श्वेत उद्यमी, खिलाड़ी और प्रभावशाली लोग देश छोड़कर चले जाते। इसके बजाय, उन्होंने देश के साथ खड़े रहकर अपनी जिम्मेदारियां निभाईं। यह जवाब न केवल ट्रंप के एकपक्षीय आरोपों को खारिज करता था, बल्कि यह भी दर्शाता था कि रामाफोसा अपने देश की जटिल सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं को समझते हैं और उसे वैश्विक मंच पर गरिमा के साथ प्रस्तुत करने में सक्षम हैं।

यह मुलाकात केवल दो नेताओं के बीच तकरार नहीं थी; यह वैश्विक नेतृत्व की बदलती प्रकृति का एक दर्पण थी। दक्षिण अफ्रीका, जो रंगभेद के काले अध्याय से उबरकर लोकतंत्र और समानता की राह पर बढ़ रहा है, ऐसे में बिना पूर्ण तथ्यों के नरसंहार जैसे गंभीर आरोप लगाना न केवल उसकी गरिमा को ठेस पहुंचाता है, बल्कि वैश्विक समुदाय में भ्रम और तनाव को बढ़ावा देता है। ट्रंप के सबूत—चुनिंदा वीडियो और अपुष्ट रिपोर्ट्स—दक्षिण अफ्रीका की जटिल वास्तविकता का संपूर्ण चित्र नहीं पेश करते। यह एक खतरनाक प्रवृत्ति को उजागर करता है, जहां तथ्यों की जगह सनसनीखेज दावे और भावनात्मक उकसावे हावी हो रहे हैं।

यह घटना एक गंभीर सवाल उठाती है: क्या वैश्विक नेता अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए किसी देश पर आरोप लगाने से पहले समुचित जांच करते हैं? कूटनीति का आधार तथ्य, संवाद और आपसी समझ है, लेकिन ट्रंप का रवैया इसे कमजोर करता है। उनकी आक्रामकता और एकतरफा दृष्टिकोण ने राजनयिक शिष्टाचार को नजरअंदाज किया और यह संकेत दिया कि वैश्विक मंच पर अब संयम की जगह टकराव और ध्रुवीकरण ने ले ली है। रामाफोसा का संतुलित जवाब, इसके उलट, एक ऐसे नेतृत्व का प्रतीक है, जो न केवल अपने देश की गरिमा की रक्षा करता है, बल्कि वैश्विक मंच पर समझदारी और संवेदनशीलता का परिचय देता है।

आज की दुनिया में, जहां सूचनाएं पलक झपकते फैलती हैं, नेताओं की जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वे तथ्यों को प्राथमिकता दें और सनसनीखेज दावों से बचें। ट्रंप का यह कदम उनके उस दृष्टिकोण को उजागर करता है, जिसमें वे वैश्विक मुद्दों को अपने घरेलू राजनीतिक लाभ के लिए हथियार बनाते हैं। यह न केवल कूटनीति के सिद्धांतों के खिलाफ है, बल्कि वैश्विक समुदाय में अविश्वास को भी बढ़ाता है। दक्षिण अफ्रीका जैसे देश, जो अपने इतिहास की जटिलताओं से जूझते हुए समावेशी समाज की ओर बढ़ रहे हैं, वैश्विक मंच पर सम्मान और संवेदनशीलता के हकदार हैं। ट्रंप का रवैया इस संवेदनशीलता की अनदेखी करता है और एक ऐसी दुनिया की ओर इशारा करता है, जहां तथ्यों से ज्यादा भावनाएं और ध्रुवीकरण प्रभावी हो रहे हैं।

यह टकराव हमें वैश्विक नेतृत्व के असली अर्थ पर विचार करने के लिए मजबूर करता है। क्या नेतृत्व केवल शक्ति प्रदर्शन और अपने हितों को थोपने तक सीमित है, या इसमें समझदारी, संवेदनशीलता और समावेशी सोच भी शामिल है? रामाफोसा का दृष्टिकोण हमें याद दिलाता है कि सच्चा नेतृत्व ताकत में नहीं, बल्कि संयम और तथ्यों पर आधारित निर्णयों में निहित है। यह घटना एक सबक है—वैश्विक मंच पर आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति हमें विभाजन की ओर ले जाती है, जबकि संवाद और समझदारी एक बेहतर विश्व की नींव रखते हैं।

यह टकराव केवल ट्रंप और रामाफोसा के बीच का नहीं था; यह दो अलग-अलग दृष्टिकोणों, दो अलग-अलग नेतृत्व शैलियों और दो अलग-अलग वैश्विक दृष्टियों का संघर्ष था। एक ओर ट्रंप का उकसाने वाला, आक्रामक और अपने हितों को प्राथमिकता देने वाला रवैया, और दूसरी ओर रामाफोसा का संयमित, तथ्यपरक और समावेशी दृष्टिकोण। यह घटना हमें यह सोचने पर विवश करती है कि वैश्विक नेतृत्व की असली ताकत सनसनीखेज बयानबाजी में नहीं, बल्कि समझदारी, संवेदनशीलता और तथ्यों पर आधारित निर्णयों में है। यही वह मार्ग है, जो हमें एक अधिक संतुलित, समावेशी और शांतिपूर्ण विश्व की ओर ले जाएगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

अग्निवीर को बचाने के लिए नदी में कूदे सिक्किम स्काउट्स के लेफ्टिनेंट, पानी के तेज बहाव में बहे; 800 मीटर दूर मिला शव

सिक्किम में सिक्किम स्काउट्स के लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी ने एक अग्निवीर को बचाने के लिए अपनी जान दे दी। 22 मई को एक रूट ओपनिंग पेट्रोल का नेतृत्व करते समय अग्निवीर स्टीफन सुब्बा नदी में बह गए। लेफ्टिनेंट शशांक ने उसे बचाने के लिए छलांग लगा दी लेकिन खुद तेज बहाव में बह गए।

सिलीगुड़ी। सिक्किम में एक सैन्य अभियान के दौरान अग्निवीर को बचाने के क्रम में सिक्किम स्काउट्स के लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी बलिदान हो गए। 22 मई की सुबह लगभग 11 बजे यह घटना हुई। उन्होंने अपने सहयोगी सैनिक की जान बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

23 वर्षीय लेफ्टिनेंट शशांक को सेना में कमीशन प्राप्त हुए अभी छह महीने भी नहीं हुए थे। सेना ने एक बयान जारी कर बताया है कि लेफ्टिनेंट शशांक एक रूट ओपनिंग पेट्रोल टीम का नेतृत्व कर रहे थे। पांच सदस्यीय यह पेट्रोलिंग टीम एक ऑपरेटिंग बेस की ओर बढ़ रही थी। इसको भविष्य में सेना की तैनाती के लिए तैयार किया जा रहा था।

तेज बहाव वाली पहाड़ी नदी में बहे

पेट्रोल टीम के सदस्य अग्निवीर स्टीफन सुब्बा एक लकड़ी के पुल को पार करते समय फिसल गए और तेज बहाव वाली पहाड़ी नदी में बह गए। लेफ्टिनेंट शशांक ने अग्निवीर को बचाने के लिए पानी में छलांग लगा दी। टीम में शामिल एक अन्य सैनिक नायक पुकुर कटेल ने भी तुरंत उनका साथ दिया। दोनों ने मिलकर डूब रहे अग्निवीर को बचा लिया।

मगर इस प्रयास में लेफ्टिनेंट शशांक पानी के तेज बहाव में बह गए। लगभग आधे घंटे बाद उनका शव घटनास्थल से 800 मीटर दूर नदी से बरामद हुआ। वह उत्तर प्रदेश के अयोध्या के रहने वाले थे। सिक्किम पुलिस के अधिकारी कुमार गुरुंग ने बताया है कि बलिदानी अधिकारी के पार्थिव शरीर को वायुसेना ने बागडोगरा स्थित सेना के अस्पताल पहुंचाया गया है।

पुलिस ने घटनास्थल की जांच पूरी कर ली है। चश्मदीदों के बयान दर्ज किए जा चुके हैं। जांच में किसी तरह की साजिश या आपराधिक घटना की पुष्टि नहीं हुई है।

"कलियुग का स्वयंवर" (सौरभ शैली में)

त्रेता में धनुष उठा था जब,
जनकपुरी थर्राई थी।
धरा काँपी, गगन डोला,
वीरता मुस्काई थी।
राम ने तोड़ा जिसको छूकर,
वह धनुष, वह गर्व पुराना—
आज उसी की जगह लिये हैं,
फॉर्म, रजिस्ट्रेशन, थाना!

द्वापर का वह दृश्य अनोखा,
जहाँ आँख मछली की थी,
नीचे जल में देख निशाना,
छूटती बाणों की थी।
अर्जुन ने दिखलाई शक्ति,
राजकुमारी हर्षाई,
पर अब की दुल्हन कहती है,
׳सरकारी में सेलेक्शन आई?׳

न काल था वह, न स्वर्ग था वह,
न नरक का कोई मेला,
यह कलियुग है, जहाँ प्रेम नहीं,
बस कटऑफ का ही झेला!
ना तप है, ना योग बचा है,
ना ही धर्म के गीत,
अब दूल्हा बनता वो ही है,
जिसके हाथ में हो सीट!

ना राम चाहिए, ना अर्जुन,
ना शिव का कोई रूप,
अब दूल्हा वही बनेगा जो,
निकाले 'Pre' और 'Mains' की धूप।
सीता की जगह अब लड़की पूछे,
׳ग्रेड-पे क्या है तुम्हारा?׳
और सास बने इंटरव्यू बोर्ड,
पूछे – "क्या है विचार तुम्हारा?"

पांडव तप में, राम मर्यादा में,
आज का युवक बस परीक्षा में,
ना धनुष, ना बाण, ना गदा,
लड़ा जा रहा है पोस्टिंग की भाषा में।
वीर नहीं अब बनते रण में,
वीर बनते हैं टियर-वन में!

---डॉ सत्यवान सौरभ

हिन्दी फ़िल्म शोर का यहां गाना जीवन से जुड़ा हुआ है जिसे हम भूला नहीं सकतें हैं

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

हिन्दी सिनेमा के 100 वर्षों की इस लंबी यात्रा में फिल्मों के गाने जो सामाजिक जीवन के रंग-रूप में आज भी घुले हुए है। गीतों की हृदयस्पर्शी भाषा और संगीत का अद्भुत संगम मधुर आवाज़ मिल कर उस गीत को विशेष बना देती है। वे सुननें वालों के अंतर्मन में प्रवेश कर जाता है। ऐसे गीत को संगीत व आवाज़ को व्यक्ति कभी भी नहीं भूला सकता है। ज़िंदगी में सुख हो या दुःख जो बात दिलों पर असर करतीं है, जब व्यक्ति गीत सुनकर या गुनगुनाकर वह अपनी तकलीफ़ को भूलने का प्रयास करता है। क्योंकि यह यादें हैं बस वही याद आतीं है। भारतीय सिनेमा जगत का यहीं जादू है, जो आज़ भी चल रहा है। जीवन ओर मृत्यु के चक्रव्यूह में उलझा हुआं इंसान ख़ुशी को तलाशता है। क्योंकि चार दिन की ज़िंदगी बहुत कम है, यह सफ़र ना जाने कितना चलें। ज़िंदगी ओर जीवन से जुड़ें हुए हिन्दी फिल्मी गाने बहुत बनें। जो दिलों में आज भी घर बनायें हुए है। उन्हीं लंम्बी श्रृंखलाओं में कुछ गानें कभी ना कभी हमारे ओठों पर आ ही जातें हैं। जैसे यह गाना - जीवन चलनें का नाम चलते रहो सुबह शाम ।हिन्दी फिल्म शोर जो 1972 में रिलीज हुई थी जिसमें संगीतकार लक्ष्मीकांत प्यारेलाल का संगीत था, और गीतकार राजकवि इंद्रजीत सिंह तुलसी की रचना के साथ गायकी के महारथी महेन्द्र कपूर , मन्ना डे, श्यामा चितर द्वारा इसे इतने शानदार तरीक़े से प्रस्तुत किया गया कि मन में भावनात्मक जुड़ाव आ ही जाता है। शब्दों में जीवन सर्वप्रथम है, उसे चलने के लिए प्रेरित करना हर एक समय में जरूरी होता है। क्योंकि चलने से ही रास्ता कट जाएगा मितरा ।बादल छंट जाएगा , दुःख से झुकना ना एक पल रुकना ना , क्योंकि जीवन चलने का नाम चलते रहो सुबह शाम। उतार-चढ़ाव भरे इस जीवन में कमज़ोर नहीं पढ़ना चाहिए ।क्योंकि जो जीवन से हार मानता उसकी हो गई छुट्टी , नाक चढ़कर कहें ज़िन्दगी तेरी मेरी हो गई कुट्टी, रुठने वाले को मानना चाहिए ,उसे दोस्ती में साथ देकर साथी बनना चाहिए। बहुत सीधा सा फलसफा है खुद से रहो खफा मितरा खुद ही से बनें ख़ुदा मितरा... जीवन चलने का नाम चलतें रहो सुबह शाम ।इस गाने में गीतकार ने जो भी बतानें की कोशिश की है, उसमें वह कहते हैं कि उजली उजली भौंर सुनतीं तुतले तुतले बोल क्योंकि अन्धकार में सूरज बेठा अपनी गठरी खोल। उस तकलीफ और मुश्किल से आंख लड़ाकर जब हम समय से हाथ को मिलायेंगे तो , उजलों के संसार से सभी और किरण किरण हो जायेगा। तभी यह चलता रहे चलन जीवन चलनें का नाम चलतें रहो सुबह

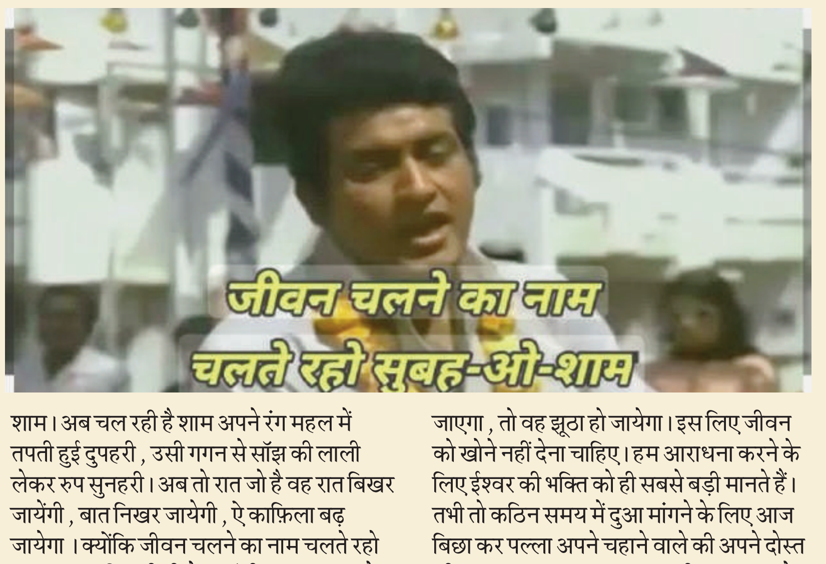

शाम। अब चल रही है शाम अपने रंग महल में तपती हुई दुपहरी , उसी गगन से सॉझ की लाली लेकर रुप सुनहरी। अब तो रात जो है वह रात बिखर जायेंगी , बात निखर जायेगी , ऐ काफ़िला बढ़ जायेगा ।क्योंकि जीवन चलने का नाम चलते रहो सुबह शाम। कितनी भी तेज़ आंधी या तुफ़ान आयें इस जीवन में हिम्मत नहीं खत्म होना चाहिए। तब गीतकार कहता है कि हिम्मत अपना दीन धरम हिम्मत है ईमान हिम्मत अल्लाह हिम्मत वाहेगुरु हिम्मत है भगवान। इसी भरोसे से यह जीवन रुपी गाड़ी चलती रहती है, क्योंकि एक छोटा सा इक दीपक ओर टीम टीम करतीं ज्योति हीरे जैसी आंख से इसके टूट रहें हैं मोती , नन्हे हाथ जब जुड़ते तो इसकी बात बहुत बड़ी होती है। जब कोई खो जाएगा , तो वह झूठा हो जायेगा। इस लिए जीवन को खोने नहीं देना चाहिए। हम आराधना करने के लिए ईश्वर की भक्ति को ही सबसे बड़ी मानते हैं। तभी तो कठिन समय में दुआ मांगने के लिए आज बिछा कर पल्ला अपने चहाने वाले की अपने दोस्त की रक्षा हर समय क़दम क़दम वहीं अल्लाह करेगा ।हमारी जुबान पर यही दुआ है क्योंकि ईश्वर हो या अल्लाह उसके घर देर है अधेर नहीं। तु ही तो बिगड़ीं बात बना, तो तुझे में तब कहूं ख़ुदा, तुझे तब कहूं ईश्वर। क्योंकि जीवन चलने का नाम चलते रहो सुबह ओ शाम। यह फिल्मी गीत हमेशा से ही शानदार व सदाबहार रहा। जीवन की सच्चाई के करीब मानस पटल पर सदा के लिए अमर है और अमर रहेगा यही हिन्दी फिल्मों के गानों का जादू है ।

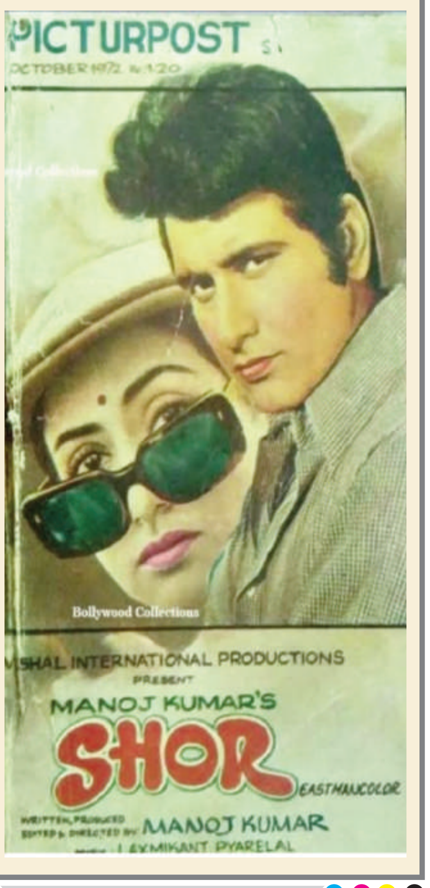

बड़वा गांव की हवेलियों में इतिहास की गूंज: ठाकुरों की गढ़ी से केसर तालाब तक

डॉ. सत्यवान सौरभ

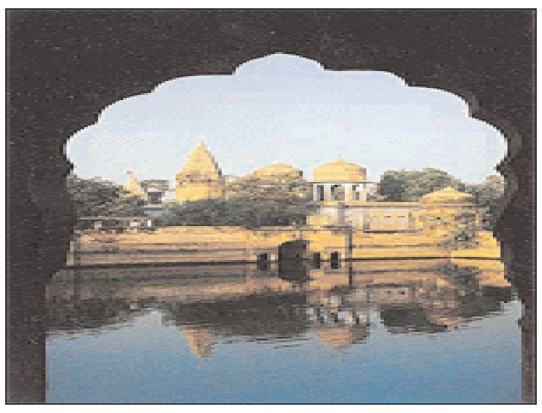

दक्षिण-पश्चिम हरियाणा की रेतीली धरती पर, जहां धूप की तल्खी रेत के कणों को भी तपाने में सक्षम होती है, वहीं बसा है बड़वा — एक गांव जो आज भी अपने अतीत की स्मृतियों को हवेलियों की दीवारों, तालाबों की गहराई, और चित्रों की रंगरेखा में संजोए हुए है।

यह गांव भिवानी जिले में, हिसार से 25 किलोमीटर दक्षिण में, राजगढ़-बीकानेर राजमार्ग पर स्थित है। इसकी पहचान सिर्फ एक सामान्य ग्रामीण बस्ती के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवित संग्रहालय के रूप में है, जिसमें स्थापत्य, कला, संस्कृति और सामाजिक इतिहास के तमाम रंग समाए हैं।

ठाकुरों की गढ़ी: बड़वा की आत्मा

बड़वा का उल्लेख आते ही सबसे पहले जिस ऐतिहासिक संरचना का नाम आता है, वह है ठाकुरों की गढ़ी। यह गढ़ी गांव के उत्तर-पश्चिम में स्थित एक रेतीले टीले पर बनी है, जिसे ब्रांसा भवन भी कहा जाता है। इसका निर्माण 1938 में किया गया था — उस समय जब मानसून ने धोखा दिया और गांव में अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई। तब ठाकुर बाग सिंह तंवर ने इसे रोजगार के अवसर के रूप में देखा और अपने लोगों को निर्माण कार्य में जुटाया।

गढ़ी का विशाल प्रवेशद्वार आज भी लोहे की मोटी प्लेटों और मजबूत लकड़ी से सुसज्जित है। अंदर प्रवेश करते ही लगता है जैसे हम किसी मध्यकालीन कथा में प्रवेश कर रहे हों। भंडारण के लिए बने कमरों की पंक्तियां, रहने योग्य विशाल हॉल, और हाथीखानों की व्यवस्था आज भी इसकी भव्यता की गवाही देती है।

तंवरों की विरासत: राजस्थान से हरियाणा तक

बड़वा गांव की नींव तंवर राजपूतों ने रखी थी, जो कि करीब 600 साल पहले राजस्थान के जीतपुरा से यहां आए थे। ठाकुर बृजभूषण सिंह, जो आज इस गढ़ी के उत्तराधिकारी हैं, के पूर्वजों ने यहां 14,000 बीघा भूमि पर अधिकार किया था और धीरे-धीरे इसे एक समृद्ध जागीर में परिवर्तित किया।

मुगल काल में तंवरों ने संघर्ष के बजाय शांति और व्यापार को अपनाया, और भिवानी क्षेत्र में अपने लिए एक मजबूत सामाजिक और राजनीतिक स्थान निर्मित किया।

गांव की हवेलियां: जहां दीवारें बोलती हैं

बड़वा में लगभग एक दर्जन ऐतिहासिक हवेलियां हैं, जिनमें से सेठ परशुराम, सेठ हुकुमचंद लाला सोहनलाल और सेठ लक्ष्मीचंद की हवेलियां सबसे अधिक उल्लेखनीय हैं। इन हवेलियों की स्थापत्य शैली, चित्रांकन और दीवारों पर बनी धार्मिक व सांस्कृतिक छवियां राजस्थान की कोटा और किशनगढ़ शैलियों की याद दिलाती हैं।

सेठ परशुराम की हवेली: इनकी हवेली को पिलानी से लाए गए कारीगरों ने सजाया। हवेली के हर कोने में बारीकी से उकेरे गए चित्र हैं, जो कृष्ण-राधा की रासलीला, राजा-रानी के प्रेम संवाद और धार्मिक कथाओं को दर्शाते हैं।

सेठ हुकुमचंद की हवेली: मुख्य द्वार पर सजे हाथी की आकृति, जिसके ऊपर राजा-रानी विराजमान हैं, दर्शाता है कि कैसे शाही जीवन को इन चित्रों में जीवंत किया गया। दीवारों पर विष्णु लक्ष्मी, शेरावाली माता के चित्र तथा कोटा शैली में बने राधा-कृष्ण के प्रेम प्रसंग दिखाई देते हैं।

लक्ष्मीचंद का कटहरा: इस स्थान पर छतों पर रथयात्राएं, सेविकाएं, और सुरक्षा में चलते सैनिकों के चित्र मिलते हैं। एक दृश्य में श्रीकृष्ण राधा की चोटी गूंथते हुए नजर आते हैं — यह चित्रण उस काल की पारिवारिक निकटता, सौंदर्यबोध और प्रेमाभिव्यक्ति की गहराई को दर्शाता है।

केसर तालाब और 'मुक्तिधाम'

बड़वा गांव की पहचान केसर तालाब से भी जुड़ी है, जो सेठ परशुराम ने अपनी बहन केसर की स्मृति में बनवाया था। कथा कहती है कि जब गांव की स्त्रियां गोबर चुनती थीं, तो यह कार्य उच्च जातियों और सम्पन्न परिवारों के लिए अपमानजनक माना जाता था। बहन को अपमान से बचाने हेतु सेठ ने वहां एक विशाल पक्का तालाब बनवाया, जिसका नाम केसर तालाब पड़ा।

इस तालाब के पास एक गहरा कुंड है, जिसे मुक्तिधाम कहा जाता है, क्योंकि दुःखी महिलाएं यहां आत्महत्या के लिए कूदी थीं। इसके किनारे बनी छतरियों की दीवारों पर राधा-कृष्ण की रासलीला के चित्र बने हैं, जिनमें ढोलक, नगाड़े, बांसुरी, हारमोनियम जैसे वाद्ययंत्रों के चित्र भी हैं।

इन चित्रों में लाल, पीले और नीले रंगों का प्रयोग हुआ है। श्रीकृष्ण को नीले और राधा को गोरे रंग में चित्रित किया गया है। पशु-पक्षियों की आकृतियां — मोर, तोता, चिड़ियाँ — भी इसमें देखी जा सकती हैं।

फिल्मों का गांव: 'चंद्रावल' और 'बैरी' की धरती

बड़वा की सांस्कृतिक समृद्धि इतनी प्राचीन और प्रभावशाली रही है कि हरियाणवी सिनेमा भी इससे अछूता नहीं रहा। प्रसिद्ध फिल्म चंद्रावल और बैरी के कुछ दृश्य इसी गांव के रूसहड़ा जोहड़ और कुओं के पास फिल्माए गए। आज भी वे पनघट, जिन पर 'चंद्रो' पानी भरने आती थी, गांववालों की स्मृति और गर्व का विषय हैं।

अतीत की गोद में वर्तमान की पहचान

बड़वा सिर्फ एक गांव नहीं, बल्कि हरियाणा के ग्रामीण गौरव की जीवित मिसाल है। इसकी हवेलियां, चित्रकला, तालाब, धार्मिक धरोहरें और सामाजिक कथाएं — सब मिलकर इसे एक विरासत स्थल बनाती हैं।

आज जब विकास की अंधी दौड़ में गांवों का सांस्कृतिक चरित्र खोता जा रहा है, बड़वा जैसे गांव यह सिखाते हैं कि यदि हम अपने अतीत को संजो कर रखें, तो वह न केवल हमारी पहचान को मजबूत करता है बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनता है।

(लेखक डॉ. सत्यवान सौरभ, इतिहास और संस्कृति विषयों पर लिखने वाले स्वतंत्र स्तंभकार हैं। यह लेख उनके बड़वा गांव के दौरे और स्थानीय शोध पर आधारित है।)

साझा पाठशालाएँ — गाँव-शहर के बच्चों को एक मंच पर लाने की ज़रूरत

अक्सर हम सोचते हैं कि शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान तक सीमित है, पर क्या आपने कभी गौर किया है कि शिक्षा की सबसे बड़ी ताकत उसमें छिपी होती है कि वह हमें एक-दूसरे से जोड़ती है, अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को साथ लाती है। पर आज का यथार्थ कुछ और ही कहता है। गाँव के बच्चे और शहर के बच्चे, दोनों की दुनिया अलग हो चुकी है। एक तरफ जहां शहर के बच्चे तकनीकी और आधुनिक सुविधाओं से लैस होते हैं, वहीं गांव के बच्चे अक्सर संसाधनों की कमी और अवसरों की अभाव में घिरे रहते हैं। क्या हम यही चाहते हैं? क्या हम नहीं चाहते कि शिक्षा सिर्फ पढ़ाई की किताबें ही नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों और संस्कृतियों का संगम भी हो? इसीलिए 'साझा पाठशालाएँ' एक अति आवश्यक विचार है, जो इस असमानता की खाई को पाटने का सशक्त माध्यम बन सकती हैं। जब एक गाँव का बच्चा अपनी मिट्टी की सौंधी खुशबू लिए अपनी कहानियाँ सुनाता है और शहर का बच्चा अपनी चकाचौंध भरी दुनिया का अनुभव साझा करता है, तो वह पल सिर्फ दो बच्चों का मिलन नहीं, बल्कि दो अलग-अलग दुनियाओं का संगम होता है। यह संगम केवल शिक्षा को नहीं, बल्कि हमारे समाज को भी समृद्ध करता है।

गांव और शहर के बच्चों के बीच की दीवारें केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक भी हैं। शहर के बच्चे अक्सर निजी स्कूलों, डिजिटल लाइब्रेरी, कोचिंग सेंटर और सांस्कृतिक गतिविधियों से लैस होते हैं। उनके पास इंटरनेट, लैपटॉप और वैश्विक मंचों तक पहुँच होती है। दूसरी ओर, गाँव के बच्चे सरकारी स्कूलों में टूटी बेंचों पर बैठकर, कई बार बिना शिक्षक के, या बिना बिजली के पढ़ाई करते हैं। यह असमानता केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रहती; यह उनके सपनों, आत्मविश्वास और भविष्य को भी प्रभावित करती है। साझा पाठशालाएँ इस खाई को पाटने का एक मौका देती हैं। यदि गाँव और शहर के बच्चे एक ही कक्षा में बैठकर एक-दूसरे से सीखें, तो न केवल उनकी शिक्षा का स्तर सुधरेगा, बल्कि वे एक-दूसरे की जिंदगी, चुनौतियों और सपनों को भी समझेंगे। एक शहर का बच्चा गाँव के बच्चे से खेती, प्रकृति और परंपराओं के बारे में सीख सकता है, जबकि गाँव का बच्चा तकनीक और वैश्विक दृष्टिकोण से परिचित हो सकता है। यह आदान-प्रदान दोनों को समृद्ध करता है और उनके बीच की दूरी को कम करता है।

साझा पाठशालाएँ केवल एक स्कूल भवन में बच्चों को एकत्र करने की बात नहीं हैं; यह एक सामाजिक क्रांति का विचार है। यह वह मंच है जहाँ बच्चे अपनी विभिन्नताओं को सेलिब्रेट करना सीखते हैं। जब एक गाँव का बच्चा अपनी लोककथा सुनाता है और शहर का बच्चा अपनी बनाई डिजिटल कहानी साझा करता है, तो वे एक-दूसरे की दुनिया में झाँकते हैं। यह प्रक्रिया उनके पूर्वाग्रहों को तोड़ती है और उन्हें सहानुभूति, सहयोग और सम्मान की भावना सिखाती है। भारत जैसे देश में, जहाँ हर कुछ किलोमीटर पर भाषा, संस्कृति और परंपराएँ बदल जाती हैं, साझा पाठशालाएँ एकता की मिसाल बन सकती हैं। यहाँ का बच्चा न केवल अपनी किताबों से सीखता है, बल्कि अपने सहपाठी की जिंदगी से भी सीखता है।

भारत की विविधता इसकी ताकत है, लेकिन यह ताकत तभी सार्थक है जब इसे एकजुट करने का प्रयास हो। साझा पाठशालाएँ इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। ये स्कूल न केवल शिक्षा को समावेशी बनाते हैं, बल्कि बच्चों को बचपन से ही सामाजिक समरसता का पाठ पढ़ाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक स्कूल में गाँव और शहर के बच्चों के लिए सांस्कृतिक उत्सव आयोजित किया जाए, जहाँ दोनों अपनी कला, नृत्य, संगीत और कहानियाँ पेश करें, तो यह उनके बीच की दूरी को कम करता है। ऐसी गतिविधियाँ बच्चों में यह भावना पैदा करती हैं कि उनकी विभिन्नताएँ उनकी ताकत हैं, न कि कमजोरी। इसके अलावा, साझा पाठशालाएँ बच्चों को नेतृत्व, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे गुण सिखाती हैं, जो भविष्य में एक मजबूत समाज के निर्माण में मदद करते हैं।

लेकिन साझा पाठशालाओं का विचार लागू करना इतना आसान नहीं है। कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। भाषाई अंतर एक बड़ी बाधा है। गाँव के बच्चे अक्सर अपनी मातृभाषा में पढ़ते हैं, जबकि शहर के स्कूलों में अंग्रेजी या हिंदी का बोलबाला होता है। इसके अलावा, आर्थिक असमानता भी एक चुनौती है। शहर के बच्चे महँगी यूनिफॉर्म और गैजेट्स लाते हैं, जबकि गाँव के बच्चे इनके अभाव में हीन भावना महसूस कर सकते हैं। सांस्कृतिक मतभेद और सामाजिक पूर्वाग्रह भी बच्चों के बीच तनाव पैदा कर सकते हैं। इन समस्याओं का समाधान आसान नहीं, लेकिन असंभव भी नहीं। सरकार और शिक्षण संस्थानों को समावेशी नीतियाँ बनानी होंगी। उदाहरण के लिए, एक समान ड्रेस कोड, डिजिटल संसाधनों का समान वितरण, और शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के लिए प्रशिक्षण देना जरूरी है। इसके अलावा, साझा पाठशालाओं में ऐसे पाठ्यक्रम होने चाहिए जो गाँव और शहर की संस्कृतियों को समान महत्व दें।

साझा पाठशालाओं का एक और बड़ा फायदा यह है कि यह बच्चों को बचपन से ही भेदभाव से दूर रखता है। जब बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, खेलते हैं और एक-दूसरे की मदद करते हैं, तो वे जाति, धर्म, या आर्थिक स्थिति जैसे भेदों को भूल जाते हैं। यह भावना उनके बड़े होने पर भी उनके साथ रहती है, और वे एक ऐसे समाज का निर्माण करते हैं जो सहिष्णु और समावेशी हो। उदाहरण के लिए, यदि एक गाँव का बच्चा और शहर का बच्चा मिलकर एक प्रोजेक्ट पर काम करते हैं, तो वे एक-दूसरे की ताकत और कमजोरियों को समझते हैं। यह अनुभव उन्हें भविष्य में बेहतर सहयोगी बनाता है। आज की वैश्वीकृत दुनिया में, जहाँ सीमाएँ धुंधली पड़ रही हैं, साझा पाठशालाएँ बच्चों को वैश्विक नागरिक बनने के लिए तैयार करती हैं। वे उन्हें न केवल तकनीकी और शैक्षिक कौशल देती हैं, बल्कि सामाजिक संवेदनशीलता और सहानुभूति भी सिखाती हैं। यह एक ऐसा निवेश है जो न केवल बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाता है, बल्कि पूरे समाज को एक नई दिशा देता है।

साझा पाठशालाएँ केवल एक शैक्षिक प्रयोग नहीं, बल्कि एक सामाजिक सपना हैं। यह वह सपना है जहाँ गाँव का बच्चा अपनी मिट्टी की ताकत और शहर का बच्चा अपनी आधुनिकता का गर्व एक साथ लेकर चलता है। यह वह सेतु है जो दो अलग-अलग दुनियाओं को जोड़ता है, और एक ऐसे भारत का निर्माण करता है जो अपनी विविधता में एकता को गले लगाता है। हमें इसे केवल एक विचार नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी मानना होगा। क्योंकि जब हम गाँव और शहर के बच्चों को एक मंच पर लाते हैं, तो हम सिर्फ स्कूल नहीं बनाते, बल्कि एक मजबूत, प्रगतिशील और सहानुभूतिपूर्ण समाज की नींव रखते हैं। यह वह समाज है जो न केवल अपने बच्चों को पढ़ाता है, बल्कि उन्हें एक-दूसरे का सम्मान करना भी सिखाता है। और यही शिक्षा का असली मकसद है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सदाबहार फिल्मी गीतों के बेताज 'बादशाह' - मजरूह सुल्तानपुरी

प्रदीप कुमार वर्मा

महर्षि वाल्मीकि, दुर्वासा और वशिष्ठ आदि ऋषि मुनियों की तपोस्थली, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय चेतना के विकास की धुरी, यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री पंडित श्रीपति मिश्र की जन्मस्थली और अयोध्या तथा प्रयागराज के बीच गोमती नदी के किनारे बसा एक ऐतिहासिक शहर लेकिन उत्तर प्रदेश के एक महत्वपूर्ण जनपद सुल्तानपुर का एक और परिचय है और यह परिचय मशहूर शायर और गीतकार मजरूह सुल्तानपुरी की जन्मभूमि के रूप में है। महान शायर और गीतकार मजरूह सुल्तानपुरी ने शायरी की दुनिया से लेकर मुशायरों के मंच पर कलाम पेश करने के बाद फिल्मी दुनिया की ओर रुख किया। उन्होंने अपने करियर में कई फिल्मों में लोकप्रिय और कालजयी गीत लिखे जो उनके निधन के करीब पच्चीस साल बाद भी लोगों की जुबान पर हैं। इनमें प्रेम, करुणा, विरह, दोस्ती तथा जीवन की कड़वी हकीकत पर आधारित कई गीत आज भी फिजां में गूंज रहे हैं। उनके गीतों का जादू ऐसा था कि उनके लिखे गीतों पर अभिनय एवं गायन करते हुए कई अभिनेताओं एवं पार्श्व गायकों के करियर बने और उन्होंने सफलता के कई मुकाम हासिल किए।

हिंदी फ़िल्मों के मशहूर गीतकार और प्रसिद्ध शायर मजरूह सुल्तानपुरी का जन्म उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर में ही एक राजपूत मुस्लिम परिवार में एक अक्टूबर 1919 को हुआ था। इनका वास्तविक नाम 'असरार उल हसन ख़ान' था। मजरूह ने लखनऊ के ₹तकमील उल तीब कॉलेज' से यूनानी पद्धति की मेडिकल की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। पिता के जोर देने पर वो आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धति के अध्ययन के बाद एक हकीम के रूप में काम करने लगे थे पर उनके मन में तो कुछ और करने का था, इसलिए वो पूरी तरह लेखन में डूब गए। इस दौरान उन्होंने अपने लिए एक नया नाम भी चुन लिया- मजरूह, जिसका अर्थ होता है घायल और इस प्रकार शायरी की दुनिया में आने के बाद असरार उल हसन खान शायरी और अदब की दुनिया में मजरूह सुल्तानपुरी बन गए। बचपन के दिनों से ही मजरूह सुल्तानपुरी को शेरो-शायरी करने का काफ़ी शौक़ था और वे अक्सर सुल्तानपुर में हो रहे मुशायरों में हिस्सा लिया करते थे। इस दौरान उन्हें काफ़ी नाम और शोहरत भी मिली।

इसी दौरान उनकी मुलाकात मशहूर शायर 'जिगर मुरादाबादी' से हुई। इस मुलाकात के बाद वर्ष 1945 में मुम्बई की 'सब्बो सिद्धकी इंस्टीट्यूट' द्वारा संचालित एक मुशायरे में हिस्सा लेने के लिए मजरूह सुल्तानपुरी मुम्बई गए। मुशायरे के कार्यक्रम में उनकी शायरी सुनकर मशहूर निर्माता एआर.कारदार उनसे काफ़ी प्रभावित हुए। संगीतकार नोशाद के कहने पर उन्होंने मजरूह सुल्तानपुरी से अपनी फ़िल्म के लिए गीत लिखने की पेशकश की। मजरूह ने कारदार साहब की इस पेशकश को स्वीकार नहीं किया। क्योंकि उन दिनों में फ़िल्मों के लिए गीत लिखना वे अच्छी बात नहीं समझते थे।जिगर मुरादाबादी' ने मजरूह सुल्तानपुरी को तब सलाह दी कि फ़िल्मों के लिए गीत लिखना कोई बुरी बात नहीं है। फिर क्या जिगर मुरादाबादी की सलाह पर मजरूह सुल्तानपुरी फ़िल्म में गीत लिखने के लिए राजी हो गए। एक साल बाद में वर्ष 1946 में कारदार साहब की फिल्म 'शाहजहां' के लिए मजरूह ने ही गाने लखिे थे। फ़िल्म शाहजहाँ के लिए गीत 'जब दिल ही टूट गया' बेहद लोकप्रिय हुआ।

इसके बाद मजरूह सुल्तानपुरी और संगीतकार नौशाद की सुपरहिट जोड़ी ने 'अंदाज', 'साथी', 'पाकीजा', 'तांगेवाला', 'धरमकांटा' और 'गुड्डू' जैसी फ़िल्मों में एक साथ काम किया। फ़िल्म 'शाहजहाँ' के बाद महबूब ख़ान की 'अंदाज' और एस. फाजिल की 'मेहन्दी' जैसी फ़िल्म दी। अपनी वामपंथी विचारधारा के कारण मजरूह सुल्तानपुरी को कई बार कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा। इसी विचारधारा के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। मजरूह सुल्तानपुरी को सरकार ने सलाह दी कि अगर वे माफ़ी मांग लेते हैं, तो उन्हें जेल से आज़ाद कर दिया जाएगा लेकिन मजरूह सुल्तानपुरी इस बात के लिए राजी नहीं हुए और उन्हें दो वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया। जेल में रहने के कारण मजरूह सुल्तानपुरी के परिवार की माली हालत काफ़ी ख़राब हो गई। जिस समय मजरूह जेल में अपने दिन काट रहे थे, तब राजकपूर ने उनकी सहायता करनी चाही लेकिन मजरूह सुल्तानपुरी ने उनकी सहायता लेने से इंकार कर दिया। इसके बाद राजकपूर ने उनसे एक गीत लिखने की पेशकश की।

मजरूह सुल्तानपुरी ने जेल में ही 'एक दिन बिक जाएगा, माटी के मोल' गीत की रचना की जिसके एवज में राजकपूर ने उन्हें एक हज़ार रुपये दिए। महान निर्माता और निर्देशक राज कपूर ने इस गीत को अपनी फिल्म धर्म-कर्म में शामिल किया।

कांग्रेस ने मुख्यमंत्री आवास के सामने 24 घंटे का धरना दिया है

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति व जनजाति के आरक्षण के मुद्दे पर कांग्रेस ने मुख्यमंत्री आवास के सामने 24 घंटे का धरना दिया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भक्तचरण दास के नेतृत्व में आज सुबह कांग्रेस भवन से एक विशाल जुलूस निकला और कार्यक्रम स्थल की ओर रवाना हुआ।वहां कांग्रेस ने 24 घंटे का कर्फ्यू लगाने का प्रस्ताव रखा। देर रात भारी बारिश के बावजूद पीसीसी अध्यक्ष श्री दास और ओडिशा कांग्रेस प्रभारी अजय कुमार लल्लू सभागार में बैठे रहे। देर रात और भारी बारिश के बावजूद कांग्रेस नेतृत्व ने पार्टी की सुरक्षा के लिए यह तरकीब निकाली है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री दास ने कहा कि आरक्षण की लड़ाई राजधानी से लेकर गांव तक जारी रहेगी।

श्री दास ने कहा कि जल्दबाजी में जनगणना कराने के केंद्र सरकार के फैसले का श्रेय राहुल गांधी को जाता है। राहुल गांधी का कहना है कि किसी व्यक्ति के पास जितना अधिक होगा, उसके अधिकार उतने ही अधिक होंगे। उस नियम के तहत, वह संसद के अंदर और बाहर दोनों जगह जनगणना का मुद्दा उठाते रहे थे। उस समय प्रधानमंत्री मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जैसे नेताओं ने जाति जनगणना का विरोध किया था। भाजपा नेताओं ने आरोप लगाया कि जाति जनगणना देश को बांटने के लिए कराई जा रही है। इसलिए, अगर आज जनगणना संभव हो पाई है, तो यह केवल राहुल गांधी के संघर्ष के कारण ही संभव हो पाया है, श्री दास ने कहा।

आज कांग्रेस ने चार सूत्रीय मांगों को लेकर प्रदर्शन किया। इसमें ओबीसी और एसईबीसी छात्रों के लिए शिक्षा और रोजगार में 27 प्रतिशत आरक्षण की मांग की गई है। इसी प्रकार आरक्षण का अवसर खो चुके ओबीसी व एसईबीसी वर्ग के लिए रोजगार के क्षेत्र में विशेष अभियान चलाकर उनकी क्षति की भरपाई करने, 2015 के सरकारी निर्देशानुसार अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए तकनीकी व व्यावहारिक शिक्षा में 38.75 प्रतिशत आरक्षण देने, संविधान के अनुच्छेद 15(5) के अनुसार निजी शिक्षण संस्थानों में आरक्षण व्यवस्था लागू करने की मांग की गई। इसी प्रकार, एससी-एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक वित्त निगमों को पुनर्जीवित करने, 5,000 करोड़ रुपये की कॉर्पस फंड प्रणाली में इन श्रेणियों के उद्यमियों के लिए रियायतें देने और कम ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराने की मांग की गई है।

ओडिशा प्रभारी अजय कुमार लल्लू ने कहा कि सरकार ने ओबीसी समुदाय को सहज महसूस कराने के लिए व्यावहारिक शिक्षा के क्षेत्र में 11.25 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की है। इसी प्रकार, अनुसूचित जातियों और जनजातियों को तकनीकी,ub चिकित्सा और इंजीनियरिंग शिक्षा में भी केवल 20 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है। इसलिए श्री लल्लू ने आरोप लगाया है कि इस वर्ग की उपेक्षा की गई है।

सरकार बनाएगी मंदिर, पिछली सरकार ने मंदिर की परिक्रमा परियोजना के दौरान तोड़ा था

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मोहन सरकार श्रीमंदिर की परिक्रमा परियोजना के दौरान ध्वस्त किए गए मंदिरों और मठों का पुनर्वास करेगी। कुल 19 मठों के पुनर्वास की प्रक्रिया शुरू हो गई है। एक स्थान पर मठों का केंद्र स्थापित किया जाएगा। इसके लिए पुरी शहर में जगह की पहचान कर ली गई है। एक ही स्थान पर मठों का समूह होने से श्रद्धालुओं को दर्शन और पूजा में सुविधा होगी।कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने कहा कि वह इस संबंध में देबोत्तर आयोग से दो बार मिल चुके हैं।

श्रीमंदिर की परिक्रमा परियोजना का उद्घाटन 2024 में किया गया था। तत्कालीन सरकार ने इस परियोजना के लिए मंदिर के आसपास के कई मठों और मंदिरों को ध्वस्त कर दिया था। यह परियोजना कुल 15.64 एकड़ भूमि पर निर्मित है। इस परियोजना का उद्घाटन 25 लाख रुपये की लागत से किया गया। 800 करोड़ रु. लेकिन इसके लिए कई प्राचीन मठों और मंदिरों को जमींदोज कर दिया गया। अब मोहन सरकार ने उन सभी मठों और मंदिरों के पुनर्वास का निर्णय लिया है। इस प्रयोजन के लिए कानूनी रूप से निर्दिष्ट क्षेत्र की पहचान पहले ही कर ली गई है। मठों और मंदिरों का निर्माण श्रद्धालुओं की पूजा-अर्चना की सुविधा को ध्यान में रखते हुए किया जाएगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023